PERFECT 7

FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

मार्च 2022 / Issue-2

सूचना का अधिकार

कार्यबल में महिलाओं की स्थिति :संभावनाएं तथा चुनौतियाँ

युवा तथा हृदयघात की समस्या

रक्षा आत्मनिर्भरता: राष्ट्रीय सुरक्षा की कुंजी

जेट स्ट्रीम की गति में वृद्धि के भौगोलिक आयाम

युद्ध के समय में अर्थव्यवस्था

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की तरफ बढ़ते कदम

dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

OFFLINE & ONLINE

IAS PRELIMS FINISHER TEST SERIES 2022

(BILINGUAL)

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (6 GS + 4 CSAT + 1 Full Current Affairs)

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students

Rs. 2,400/-
Who took admission on or after 1st April 2019

Rs. 4,200/-
Who took admission before 1st April 2019

For Non Dhyeya Students
Rs. 6,000/-

Online

For Dhyeya Students
Rs. 2,000/-

For Non Dhyeya Students
Rs. 4,200/-

Test	Date	Timing	Content
TEST-1	10 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2021)
TEST-2	10 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-3	17 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to Jun. 2021)
TEST-4	24 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. to Sep. 2021)
TEST-5	24 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-6	1 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Oct. to Dec. 2021)
TEST-7	8 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
TEST-8	8 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-9	15 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to May. 2022)
TEST-10	15 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-11	22 May, 2022	12 NOON -2 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (Jan. 2022- May 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Director's Message

Mr. Vinay Kumar Singh

हम इस मंत्र में विश्वास रखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है; प्रत्येक व्यक्ति निपुण है एवं प्रत्येक व्यक्ति में असीमित क्षमता है। ध्येय IAS हमेशा से आत्मप्रेरणादायक मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करता रहा है जिससे कि छात्रों के भीतर ज्ञान का सृजन हो सके। शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य ज्ञान के सृजन, प्रसार एवं अनुप्रयोग को एकीकृत रूप में पिरोकर एक सह-क्रियाशील प्रभाव उत्पन्न करना है। ध्येय IAS हमेशा से ही छात्रों के भीतर मानवीय मूल्यों एवं सत्यनिष्ठा को विकसित करने का पक्षधर रहा है जिससे कि उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो और वे एक ऐसी परिस्थिति का सृजन करें जो न सिर्फ उनके लिए बल्कि समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी बेहतर हो। ध्येय IAS नये और प्रभावशाली तरीकों से अपने इस मिशन को पूरा करने के लिए प्रत्येक छात्र को हर प्रयास में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसके लिए हम निरंतर और निर्बाध रूप से अपने अध्ययन कार्यक्रम और शिक्षण पद्धति में परिवर्तन एवं परिमार्जन करते रहते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा का पाठ्यक्रम प्रतियोगी छात्रों में केवल ज्ञान के प्रति जुनून ही नहीं उत्पन्न करता है बल्कि यथार्थ जीवन में उसका प्रयोग भी सिखाता है। ध्येय IAS प्रतियोगी छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है। साथ ही उनमें ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का भी सृजन करता है।

Yours very truly,

Vinay Kumar Singh
CEO and Founder

Mr Q H Khan

ध्येय IAS एक ऐसा संस्थान है जिसका लक्ष्य हमेशा से ही छात्रों के समग्र विकास का रहा है। हमारे संस्थान के शिक्षक अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं जिससे कि छात्रों को प्रत्येक विषय में अधिकतम मदद प्राप्त हो सके। यह एक ऐसा बहुमुखी संस्थान है जहां छात्रों को उच्चस्तरीय कक्षाओं और समृद्धशाली अध्ययन सामग्री के साथ-साथ हरसंभव सहायता उपलब्ध करायी जाती है।

आज ध्येय IAS सिविल सेवा परीक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहचान रखता है, क्योंकि हम उच्चस्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शन में विश्वास रखते हैं। हम छात्रों को ज्ञान की परिधि बढ़ाने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते रहते हैं ताकि वे पाठ्यक्रम के दायरे से सदैव दो कदम आगे रहें। हमारा मुख्य उद्देश्य छात्रों को उनकी आन्तरिक क्षमता का बोध कराना होता है जिससे कि वे अपनी एक अलग पहचान बनाकर कल के समाज का कीर्तिमान बन सकें।

Yours very truly,

Q H Khan
Managing Director

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

UP-PCS PRELIMS KNOCK OUT TEST SERIES 2022

(BILINGUAL)

OFFLINE & ONLINE

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (9 GS + 1 CSAT + 1 Full Current Affairs)

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students

Rs. 1,400/-
Who took admission on or after 1st April 2019

Rs. 2,500/-
Who took admission before 1st April 2019

For Non Dhyeya Students
Rs. 3,500/-

Online

For Dhyeya Students
Rs. 1,200/-

For Non Dhyeya Students
Rs. 2,500/-

Test	Date	Timing	Syllabus
TEST-1	10 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Apr. 2021)
TEST-2	17 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (May. to Jul. 2021)
TEST-3	24 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Aug. to Oct. 2021)
TEST-4	01 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Nov. 2021 to Jan. 2022)
TEST-5	08 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Feb. 2022 to Mar. 2022)
TEST-6	15 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
TEST-7	22 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. 2021 to Dec. 2021)
TEST-8 & 9	29 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	CSAT
TEST-10 & 11	05 JUNE, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (July 2021- MAY 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

प्रस्तावना

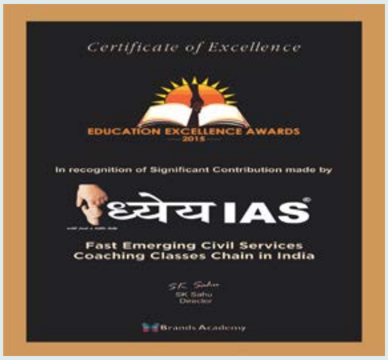

समसामयिक मुद्दे अथवा करेंट अफेयर्स संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर प्रासंगिक सूचनाओं से जुड़ाव होना अभ्यर्थियों के लिए काफी जरूरी समझा गया है और इसी जरूरत को पूरा करने के लिए परफेक्ट 7 मैगजीन को विद्यार्थी जगत के समक्ष माह में दो बार रखा जा रहा है. आईएस और पीसीएस की तैयारी तभी पूर्ण मानी जाती है जब प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू स्तर की गतिशील प्रकृति के तथ्यों और विश्लेषणों को आप सभी तक समावेशी रूप में रखा जाय. परफेक्ट 7 मैगजीन इसी विजन और दृष्टिकोण को ध्यान में रखती है और विद्यार्थियों की कंटेंट के स्तर पर बहुआयामी जरूरतों को समझती है. इसीलिए इस मैगजीन को करेंट अफेयर्स के साथ साथ सामान्य अध्ययन के महत्वपूर्ण खंडों से जुड़े अति प्रासंगिक कंटेंट के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है. एक तरफ जहां करेंट अफेयर्स के स्तर पर सबसे पहले मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए 7 ज्वलंत विषयों पर समसामयिक लेखों को, पेपर 4 के लिए एथिक्स की केस स्टडीज को, स्वतंत्रता आंदोलन और अन्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तित्वों के जीवन और भूमिक. ाओं, सामान्य अध्ययन के विविध खंडों के सर्वाधिक उपयोगी विषयों पर मुख्य परीक्षा के स्तर पर कवरेज दिया जा रहा है, वहीं प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर एक माह के 14 सबसे महत्वपूर्ण करेंट अफेयर्स के मुद्दों को कवर किया जा रहा है जिसमें सर्वाधिक जोर पर्यावरण पारिस्थितिकी, कला और संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी , अर्थव्यवस्था के मुद्दों पर है. शब्दावली और अन्य आयामों एक छोटा खंड भी परफेक्ट 7 मैगजीन का पार्ट होगा.

विद्यार्थियों की संकल्पना के स्तर पर समझ को बढ़ाने के लिए ब्रेन बूस्टर्स को 7 ग्राफिक्स के जरिये विषय को संक्षेप और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. इसके अलावा सिविल सर्विसेज की परीक्षा में प्रमुखता से पूछे जाने वाले ग्लोबल इनिशिएटिव्स, वैश्विक संस्थाओं, संगठनों की संरचना, कार्यप्रणाली, महत्वपूर्ण रिपोर्ट्स, सूचकांकों पर अपडेटेड जानकारी इस पत्रिका में शामिल रहेगी. इस मैगजीन को केवल तथ्यों या केवल एनालिसिस पर जोर देते हुए नही बनाया गया है बल्कि इस मैगजीन का विजन यह है कि सिविल सेवा के प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के उभरते हुए ट्रेंड्स और प्रश्नों की नई प्रकृति को देखते हुए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों को एक ऐसी समावेशी मैगजीन उपलब्ध कराई जाए जिससे वे सिविल सेवा एग्जाम की नई जरूरतों को समझते हुए अपनी तैयारी को एक नई दिशा दे सकें. हमें उम्मीद हैं कि परफेक्ट 7 अपने नए रूप में आप लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा और इसके साथ ही आप सभी के सुझावों का स्वागत रहेगा.

विनय कुमार सिंह
सम्पादक
ध्येय IAS

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

PERFECT 7 TEAM

संपादक	विनय कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक	क्यू. एच. खान
सहसंपादक	गौतम तिवारी
उप–संपादक	आशुतोष मिश्र सौरभ चक्रवर्ती
प्रकाशन प्रबंधक	डॉ.एस.एम.खालिद
संपादकीय सहयोग	प्रिंस कुमार, गौरव चौधरी, देवेंद्र सिंह, लोकेश शुक्ल
मुख्य लेखक	विवेक ओझा
सहायक लेखक	मृत्युंजय त्रिपाठी,
मुख्य समीक्षक	ए.के श्रीवास्तव विनीत अनुराग बाघेन्द्र सिंह
आवरण सज्जा एवं विकास	प्रगति केसरवानी पुनीष जैन
टंकण	सचिन तरून
कार्यालय सहायक	राजू, चन्दन, अरुण

साभार : PIB, द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, जनसत्ता, दैनिक जागरण, डाउन टू अर्थ, इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीक्ली, योजना, कुरुक्षेत्र, द प्रिंट

DHYEYA EDUCATIONAL SERVICES PVT. LTD.
AN ISO 9001:2008 COMPANY

Face to Face Centres

MUKHERJEE NAGAR	: 9205274741, 9205274742
RAJENDRA NAGAR	: 9205274743
LAXMI NAGAR	: 9205212500, 9205962002
ALLAHABAD	: 0532-2260189, 8853467068
LUCKNOW (ALIGANJ)	: 0522-4025825, 9506256789
LUCKNOW (GOMTINAGAR)	: 7234000501, 7234000502
GREATER NOIDA	: 9205336037, 9205336038
KANPUR	: 7887003962, 7897003962
BHUBANESWAR	: 8599071555
SRINAGAR (J&K)	: 9205962002

PERFECT 7
FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

विषय सूची

समसामयिक लेख ———————————— 1-14

- सूचना का अधिकार
- कार्यबल में महिलाओं की स्थिति :संभावनाएं तथा चुनौतियाँ
- युवा तथा हृदयघात की समस्या
- रक्षा आत्मनिर्भरता: राष्ट्रीय सुरक्षा की कुंजी
- जेट स्ट्रीम की गति में वृद्धि के भौगोलिक आयाम
- युद्ध के समय में अर्थव्यवस्था
- जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की तरफ बढ़ते कदम

संक्षिप्त मुद्दे राष्ट्रीय ---------------------------------- 15-16

संक्षिप्त मुद्दे अंतर्राष्ट्रीय ---------------------------------- 17-18

संक्षिप्त मुद्दे पर्यावरण ---------------------------------- 19-20

संक्षिप्त मुद्दे विज्ञान एवं तकनीक -------------------------- 21

संक्षिप्त मुद्दे आर्थिक ---------------------------------- 22-23

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की महत्वपूर्ण खबरें --------- 24-26

समसामयिक घटनाएं एक नजर में ------------------------ 27

ब्रेन बूस्टर -- 28-34

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण तथा समसामयिक

बहुविकल्पीय प्रश्न ---------------------------------- 35-39

GS Paper IV के लिए हल केस स्टडी ---------------------- 40

व्यक्ति विशेष -- 41

राजव्यवस्था शब्दावली ---------------------------------- 42

OUR OTHER INITIATIVES

UDAAN TIMES
Putting You Ahead of Time...
Hindi & English Current Affairs Monthly News Paper

DHYEYA TV
Current affairs Programmes hosted by Mr. Qurban Ali
Ex. Editor RSTV) & by Dhyeya Team
Broadcasted on YouTube & Dhyeya TV

सात महत्वपूर्ण मुद्दे

सूचना का अधिकार

सन्दर्भ

आरटीआई विश्लेषण के अनुसार 2020-21 में सूचना के अधिकार (आरटीआई) के आवेदनों में केंद्र द्वारा "राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार" पर सूचना देने से इंकार करने के मामले में लगभग 83 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के अंतर्गत सभी मंत्रालयों द्वारा अपने विभागों की आरटीआई स्थिति रिपोर्ट केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) को भेजनी होती है। इन मंत्रालयों के 2,182 से अधिक विभागों द्वारा भेजे गए रिपोर्टो का कॉमनवेल्थ ह्यूमन राइट्स इनिशिएटिव (सीएचआरआई) के अधिकारी द्वारा विश्लेषण किया गया। इस समयावधि के दौरान कुल 53,537 आवेदनों को निरस्त किया गया है। निरस्त किये गए आवेदनों में 1,024 सूचनाओं को 'राष्ट्रीय सुरक्षा' के आधार पर निरस्त किया गया। ध्यातव्य हो कि पिछले वर्ष 557 सूचनाओं को राष्ट्रीय सु. रक्षा के आधार पर अस्वीकृत किया गया था।

विश्लेषण के मुख्य विन्दु :-

- केंद्रीय विभागों से प्राप्त आकड़ो के अनुसार यह पता चलता है कि 2019-20 में 1.29 मिलियन आरटीआई अनुरोध प्राप्त हुए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 2.48 प्रतिशत कम है।
- सर्वाधिक आरटीआई आवेदन स्वास्थ्य और इस्पात मंत्रालयों के समक्ष दर्ज किये गए।
- 2020-21 के दौरान "राष्ट्रीय सुरक्षा" के आधार पर केंद्र सरकार के मंत्रालयों द्वारा सूचना के अधिकार (आरटीआई) के आवे. दनों की अस्वीकृति में 83% की वृद्धि हुई है जबकि सभी मामलो की अस्वीकृति दर में 2.95% की कमी आई है ।
- यद्यपि भारत की समग्र अस्वीकृति दर में गिरावट आई है परन्तु सरकार द्वारा आरटीआई अधिनियम (राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों पर जानक. ारी प्रदान करने से छूट) के खंड 8(1) का उपयोग बढ़ गया है।उदाहरणस्वरूप उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय द्वारा "राष्ट्रीय सुरक्षा" के आधार पर 401 आरटीआई आवेदनों को अस्वीकृत किया गया है।
- विगत वर्षो की तरह इस वर्ष भी अधि नियम की धारा 8 (1) जे के तहत निषिद्ध "व्यक्तिगत सूचना " मांगने को निषिद्ध किया गया।

विभिन्न मंत्रालयों की स्थिति के सन्दर्भ में विश्लेषण

- उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय द्वारा "राष्ट्रीय सुरक्षा" के आधार पर 401 आरटीआई आवे. दनों को अस्वीकृत किया गया है ।
- श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा "खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों" के बारे में जानकारी मांगने के आधार पर आरटीआई को अस्वीकृत किया है। ध्यातव्य हो कि आरटीआई की धारा 24 सुरक्षा प्रतिष्ठानों से भ्रष्टाचार के अतिरिक्त अन्य जानकारी पर रोक लगाती है।
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय सूचना द्वारा महामारी वर्ष के दौरान सैकड़ों मामलों में राष्ट्रीय सुरक्षा छूट का प्रयोग करते हुए सूचना देने से इनकार किया गया।
- विश्लेषण के अनुसार वित्त, रक्षा, कार्मिक और शिक्षा जैसे सात मंत्रालयों द्वारा आरटी. आई अस्वीकृति में गिरावट आई थी। जबकि, स्टील, विदेश मामलों, रेलवे और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण जैसे कई अन्य मंत्रालयों के आरटीआई आवेदनों को अस्वीकार करने में पर्याप्त वृद्धि देखी गई है।
- विश्लेषण के अनुसार स्टील और उप. भोक्ता मामलों जैसे कुछ मंत्रालयों के मामले में, उच्च अस्वीकृति दर का मुख्य कारण यह था कि इन मंत्रालयों ने पिछले वर्ष बहुत कम अस्वीकृति की थी। इस वर्ष अस्वीकृत अधिक होने के कारण पिछले वर्ष की तुलना में दर में वृद्धि हो गई।

सूचना के अधिकार के विषय में

आरटीआई का अधिनियमन 2005 में सरक. ारी तंत्र के कामकाज से संबंधित सामान्य सूचनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाकर पारदर्शिता की अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए किया गया था।

आरटीआई अधिनियम के मुख्य प्रावधान

कोई भी नागरिक 'सार्वजनिक प्राधिकरण' से जानकारी का अनुरोध कर सकता है।

नागरिक द्वारा किये गए अनुरोध के सन्दर्भ में 30 दिनों के भीतर जवाब दिया जाना आवश्यक है।

अधिनियम में प्रत्येक सार्वजनिक प्राधिकरण को प्रसार के लिए अपने रिकॉर्ड को कम्प्यूट. रीकृत करने की भी आवश्यकता होती है।

यदि नागरिक प्रदान की गई जानकारी से संतुष्ट नहीं है, तो वह 90 दिनों के भीतर आपत्ति फाइल कर सकता है।

इसका क्रियान्वयन केंद्रीय सूचना आयोग के द्वारा किया जाता है।

प्रत्येक विभाग में एक जन सूचना अधि कारी होता है जो संबंधित विभाग की ओर से सूचना उपलब्ध कराता है।

सूचना की अस्वीकृति के आधार :

कुछ ऐसे उपबंध भी हैं जिनके आधार पर लोक प्राधिकरण नागरिक को सूचना प्रदान करने के प्रति अस्वीकृति दे सकता है। इन आधारों को अधिनियम की धारा 8 में रखा

गया है।

- राष्ट्रीय सुरक्षा हितों, राष्ट्रीय पर्यावरण हितों, राष्ट्रीय वैज्ञानिक हितों, अखंडता, अपराध के लिए उकसाने तथा विदेशी रा. ज्यों के साथ संबंध को प्रभावित कर सकने वाली सूचना
- विदेशी राज्यों से सम्बंधित कांफिडेंशियल सूचना
- कैबिनेट बैठकों से संबंधित सूचना
- न्यायालय द्वारा निषिद्ध सूचना
- संसदीय विशेषाधिकार के उल्लंघन करने वाली सूचना
- पेटेंट और व्यापार रहस्य से संबंधित सूचना
- व्यक्तिगत सूचना , जिसका कोई सार्वज. निक हित नहीं है
- जब तक यह सार्वजनिक रूप से प्रकटी. करण सार्वजनिक हित में नहीं है, तब तक एक व्यक्ति को उसकी विवेचना (संविदात्मक संबंध) में उपलब्ध जानकारी
- सूचना जो किसी भी व्यक्ति के जीवन या शारीरिक सुरक्षा को खतरे में डालती है।
- जानकारी जो जांच की प्रक्रिया को बाधित करने वाली सूचना

"केंद्रीय खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों जैसे आईबी, प्रवर्तन निदेशालय, रिसर्च एंड एना. लिसिस विंग, केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआ. ई), राजस्व खुफिया निदेशालय जैसे संस्थानो को तथा राज्य सरकारों द्वारा निर्दिष्ट एजेंसियों को भी एक अधिसूचना के माध्यम से सूचना अधिकार के दायरे से बाहर रखा जाएगा। हालांकि इन संस्थाओं को प्राप्त छूट आत्यंतिक नहीं है। मानवाधिकार , भ्रष्टाचार से सम्बंधित सूचनाओं में इन संस्थाओं को जानकारी देनी होगी।

धारा 9 के अंतर्गत जन सूचना अधिकारी सूचना पर पहुंच के अभाव में आवेदन निरस्त कर सकता है।

सूचना के अधिकार अधिनियम के लाभ

- द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने इस अधिनियम को शासन की मास्टर कुंजी के रूप में वर्णित किया है।
- इस वर्ष 1.29 मिलियन आरटीआई आवे.

दन पड़े हैं जो इस अधिनियम के प्रति जनता की जागरूकता को दिखाते हैं।
- इस अधिनियम के उपयोग से कॉमनवेल्थ घोटाला, 2जी घोटाले की जानकारी मिली है।
- इस अधिनियम से संस्थाओं की कार्यशैली में सुधार हुआ है। यथा – आईआईटी जेईई तथा सिविल सर्विसेज के अभ्यर्थियों को उत्तर कुंजी मिलने लगी, न्यायालयों में केस नंबर पेंडिंग केसों के बारे में जानकारी उपलब्ध होने लगी।
- ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट में इस अधिनियम को भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक प्रभावी उपकरण के रूप में माना गया।
- इस अधिनियम की सफलता देखते हुए श्रीलंका ने भी इस अधिनियम को लागू किया है।

सूचना अधिकार अधिनियम के समक्ष चुनौतियाँ

- **ऑफिसियल सेक्रेसी एक्ट 1923 :** औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा लागू किया गया था। वर्तमान में यदयपि आरटीआई अधिनियम (धारा 8(2)) कहता है कि आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के साथ टकराव के मामले में "जनहित के आधार पर" सूचना प्रदान करना चाहिए परन्तु ऐसा होता नहीं है। साधारणतया यह देखा गया है कि ऑफि. सियल सेक्रेसी अधिनियम से जुड़े लगभग सभी मामलों में सूचना प्रदान नहीं की जाती। इसलिए, दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग ने ऑफिसियल सेक्रेसी अधिनियम, 1923 को निरस्त करने और राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए एक समर्पित राष्ट्रीय सुरक्षा विधेयक प्रस्तुत करने की अनुशंसा की है।
- **आरटीआई का क्षेत्राधिकार:** यह विदित है कि राजनैतिक दल तथा मीडिया हाउसेस जनता की सूचना का एक बड़ा स्रोत हैं परन्तु राजनैतिक दल, मीडिया हाउसेस तथा न्यायालय आरटीआई के दायरे में नहीं हैं।
- **समयबद्धता का अभाव:** RTI के पर्याप्त संचालन के लिए कर्मचारियों की संख्या अपर्याप्त है एवं जो **RTI** अधि कारी के रूप में नियुक्त है उन्हें अपने विभाग के दैनिक कार्य भी देखने पड़ते हैं। जिसके फलस्वरूप 30 दिन के भीतर सूचना मिलने की सुनिश्चितता नहीं होती । इसके फलस्वरूप आरटीआई मामलो की पेंडेंसी भी बढ़ जाती है।
- **निम्न अर्थदंड:** यदि सूचना अधिकारी सूचना प्रदान करने में अक्षम होता है अथवा आवेदन लेने से इनकार करता है तो उस सूचना अधिकारी के ऊपर 250 प्रतिदिन के की दर से अर्थदंड आरोपित किया जायेगा (कुल जुर्माना 25,000 से अधिक नहीं होगा)और उसको बाद में सूचना भी प्रदान करनी होगी। परन्तु अभी तक मात्र 1 % लोगों पर ही अर्थदंड लगाया जा सका है।

आगे की राह

- इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम द्वितीय प्रशास. निक सुधार आयोग की अनुशंसा को मानकर ऑफिसियल सेक्रेसी एक्ट को निरसित करना होगा।
- मीडिया हाउसेस तथा राजनैतिक दलों को आरटीआई के दायरे में लाना होगा। ध्यातव्य है कि माननीय न्यायालय द्वारा पारदर्शिता तथा स्वायत्तता में संतुलन बनाते हुए इस सन्दर्भ में प्रयास किये जा रहे हैं।
- 30 दिन के भीतर सूचना प्रदान करने के प्रावधान का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

कार्यबल में महिलाओं की स्थिति:संभावनाएं तथा चुनौतियाँ

सन्दर्भ

राज्य द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा संगठन, कर्मचारी भविष्य निधि आकड़ो के अनुसार ,संगठित अर्थव्यवस्था में महिलाओं के रोजगार में पुरुषों की शुद्ध नौकरी की तुलना में दोगुनी गति से वृद्धि होगी।

परिचय

भारत में कोरोना के मामलो में निरंतर गिरावट आ रही है इसके साथ ही महिलाऐं रोजगार के लिए बेहतर प्रयास करती हुई दिख रही हैं। दिसंबर 2021 तक राज्य द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा संगठन, कर्मचारी भविष्य निधि के डेटा से पता चलता है कि औपच. ारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं के रोजगार में पुरुषों की शुद्ध नौकरी की तुलना में दोगुनी गति से वृद्धि होगी। इसके साथ ही यदि वैश्विक स्वास्थ्य क्षेत्रक पर बात करें तो वर्ष 2021 के मेडिकल जर्नल 'लैंसेट' (**Lancet**) में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, महिलाएँ वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कार्यबल के 71% का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसके साथ ही यह अध्ययन बताता है कि पुरुषो की तुलना में महिलाओं द्वारा व्यवध ानों का सामना करने की संभावना पाँच गुना अधिक होती है। भारत में महिलाएँ डॉक्टरों के 30% और नर्सों एवं दाइयों के 80% से अधिक पदों पर नियुक्त हैं अत: इनकी चुनौ. तियाँ भी अधिक हैं।

इन सम्भावनाओ तथा चुनौतियों के मध्य यद्यपि महिलाओं की संगठित क्षेत्र की नौक. रियों में भागीदारी बढ़ रही है परन्तु उनके सम्मुख अभी भी व्यापक चुनौतियाँ हैं।

महिला रोजगार के क्षेत्र में संभावनाएं

- राज्य द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा संगठन, कर्मचारी भविष्य निधि आकड़ो के अनुसार ,"संगठित अर्थव्यवस्था में महिलाओं के रोजगार में पुरुषों की शुद्ध नौकरी की तुलना में दोगुनी गति से वृद्धि होगी। लिंक्ड. इन अपॉर्च्युनिटी इंडेक्स 2021 के सर्वेक्षण में 66% भारतीय महिलाओ के अनुसार एक पीढ़ी पहले की तुलना में लैंगिक विभेदन अब कम हो गया है। यह एक बड़ी सफलता है।
- संगठित क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हो रही है। उदाहरणस्वरूप राज्य द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा संगठन, कर्म. चारी भविष्य निधि के आकड़ो के अनुसार 2021-22 में, प्रत्येक चार कार्यरत पुरुषों के सापेक्ष एक महिला कार्यरत होगी। **2020-21** में यह अनुपात **1%5** था
- युवा पीढ़ी में पुरुषो के सापेक्ष महिलाओं का रोजगार बढ़ रहा है। 2018-19 में, कार्यबल में प्रवेश करने वाली 33.4 प्रतिशत महिलाएं 18-21 आयु वर्ग की थीं तथा 28.4 % महिलाऐं 22-25 आयु वर्ग की थीं। 2021-22 में, 22-25 आयुवर्ग तथा 26-28 आयु वर्ग की महिलाओं के लिए रोजगार की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई तथा अन्य सभी श्रेणियों में गिरावट आई। दूसरी तरफ पुरुषो की बात करें तो रोजगार युवा से अधिक उम्र के पुरुषो की तरफ शिफ्ट हो रहा है। 2018-19 में, अधिकांश नौक. रियां 18-25 वर्ष की आयु के पुरुषों में थीं लेकिन पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि 26 वर्ष और उससे अधिक आयु के पुरुषों के लिए अधिक रही है।
- सरकार ने लैंगिक समानता और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहल की हैं। इनमें बेटी बचाओ, बेटी पढाओ अभियान, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पोषन अभियान और प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना शामिल हैं।
- महिला शक्ति केन्द्र योजना के अंतर्गत सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है।
- केंद्रीय बजट में प्रस्तुत 'नारी शक्ति' पहल महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने तथा महिलाओं के समावेशी विकास के उद्देश्य से निर्मित है।

भारत में महिलाओं के रोजगार के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ:

पितृसत्ता की समस्या

- पितृसत्तामक संस्कृति के फलस्वरूप समाज के ताने बाने में अलग अलग धर्मो तथा घरो में महिलाओं की भूमिका भी अलग अलग है। यह भूमिकाएं कई बार महिलाओं पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। पितृसत्ता का यह पूर्वाग्रह कि "कमाना पुरुषो का काम है। "रोजगार में महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करता है।

कार्य-परिवार संतुलन:

- महिलाओं के रोजगार में सबसे बड़ी बाधा कार्य को पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ संतुलित करने की समस्या है ।
- समग्र रूप से समाज की भलाई के लिए बच्चों की देखभाल, सफाई और खाना पकाने जैसे काम घर के कल्याण के लिए आवश्यक हैं इस अवधारणा के कारण महिलाओं को रोजगार की समस्या उत्पन्न होती है।
- भारत में कोरोना काल के दौरान लग. भग 85% महिलाऐं पदोन्नति प्राप्त करने में असमर्थ रहीं क्योंकि वर्क फ्रॉम होम के दौरान घरेलू तथा ओर्गनइजेशनल कार्य एक साथ आने से उनकी क्षमता प्रभावित हुई।
- लिंक्डइन अपॉर्च्युनिटी इंडेक्स 2021 के सर्वेक्षण में 71% महिलाओं ने माना है कि कार्य तथा घरेलू जिम्मेदारियों के मध्य सामंजस्य बना पाना कठिन होता है।

कार्यस्थल की समस्या

- महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर पहुंचने के लिए परिवहन की असुविधा तथा कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मामले महिलाओं के लिए रोजगार को कठिन बनाते हैं। 22% महिलाएं यह मानती हैं कि कंपनियों का वातावरण पुरुषो के अनुकूल है।

चयनित रोजगार तथा रोजगार अतिक्रमण

- महिलाओं को शिक्षण, स्वास्थ्य जैसी कुछ चुनिंदा सेवाओं के योग्य माना जाता है। उन्हें STEM (साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग , मैनेजमेंट) में अकुशल माना जाता है। इसके साथ ही पुरुषो द्वारा पारम्परिक महिलाओ के रोजगार यथा -शेफ (भोजन निर्माण), टेल. रिंग (कपडा मिर्माण) में अतिक्रमण किया गया है।
- राज्य द्वारा संचालित सामाजिक सुरक्षा संगठन, कर्मचारी भविष्य निधि के आकड़ो से पता चलता है कि महिलाओं का नियोजन उन क्षेत्रो में बढ़ा है जहाँ कम विशेषज्ञता तथा निम्न पारिश्रमिक है। अत: महिलाओं तथा पुरुषों के मध्य आय असमानता अभी भी विद्यमान है।

केयर इकॉनमी

- केयर इकोनॉमी का अर्थ महिलाओं पर बच्चों या परिवार के सदस्यों के देखभाल के उत्तरदायित्व से है। भारत में औसतन 12 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 66 प्रतिशत महिलाओं का काम अवैतनिक है। जो केयर इकॉनमी का भाग है। जो इनके नियोजन में एक चुनौती है।

भारत में कार्यकारी महिला की सशक्तिकरण के लिए किये गए प्रयास

संवैधानिक प्रावधान

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15 तथा 16 में लैंगिक आधार पर विभेदन से सुरक्षा दी गई है। भारतीय संविधान के नीतिनिर्देशक तत्वों में समान कार्य के लिए समान वेतन की व्यवस्था की गई है। भारत का संविधान महिला आरक्षण की भी व्यवस्था करता है।

विधिक प्रावधान

- सरकार ने मातृत्व लाभ (संशोधन) अधि नियम, 2017 के तहत प्रदत्त मातृत्व अवकाश की अवधि 12 सप्ताह के बजाय 26 सप्ताह तक बढ़ा दी है।
- श्रम मंत्रालय द्वारा कारखाना अधिनियम 1948 के तहत विशेषकर यात्रा के लिए महिलाओं की सुरक्षा के संबंध में पहल किय. ा। इस प्रावधान के अनुसार राज्य देर से काम करने वाली महिलाओं के लिए पिक और ड्रॉप सुविधा प्रदान करेगा जिससे कामकाजी महिलाओं के लिए सक्षम वातावरण बनाने के लिए एक मजबूत बुनियादी ढांचा बनाने सहायता प्राप्त हो सकेगी।
- समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1948 भी बिना किसी भेद-भाव के पुरुषों एवं महिलाओं पर समान रूप से लागू होता है।
- कार्य स्थल पर महिला उत्पीडन (रोक. थाम, प्रतिषेध एवं निवारण) अधिनियम द्वारा उत्पीडन शिकायत प्राप्त करने के लिए आंतरिक शिकायत समिति प्रत्येक जिले में स्थानीय शिकायत समिति (**LCC**) की स्थापना की गई है। इस अधिनियम में काय. ंस्थल पर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई प्रावधान हैं।

क्या किया जाना चाहिए

- पुरुषों की तुलना में महिलाओं की सामा. जिक स्थिति भिन्न है। कार्यस्थल पर महिलाऐं भिन्न -भिन्न चरणों (यथा एकल महिलाएं, विवाहित महिलाएं, युवा माताएं और वैधब्य महिलाएं) एक ब्रेक के बाद कार्यबल में फिर से प्रवेश करती हैं। जहाँ कार्य की क्षमता के साथ भावनात्मक अंतर भी होता है। इस स्थिति में लैंगिक रूप से संवेदनशील सोच को स्वीकारने की आवश्यकता है।
- कानून के साथ साथ समाज को भी लोकतान्त्रिक होना अनिवार्य है। समाज तथा कानून के सिद्धांतो का विपथगमन एक बड़ी समस्या लेकर आता है। इस समयस से निजात के लिए महिला सशक्तिकरण को जनांदोलन के रूप में विकसित करना आवश्यक है।
- कुछ आधारो पर विधिक समस्या को भी सुधारने की आवश्यकता है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं के लिए निर्मित विधान लैंगिक-संवेदनशील प्रावधानों जैसे कि गोपनीयता, न्यूनतम मजदूरी, मातृत्व लाभ, अवकाश और शिकायत निवारण तक एक विधिक ढांचे को सुनिश्चित करने से महिला सशक्तिकरण की दिशा में लाभ मिल सकता है।
- केयर इकोनॉमी में निवेश करना होगा। केयर इकोनॉमी में निवेश से महिलाओं को देखभाल कार्यों से अवकाश प्रदान करेगा जि. ससे जिससे स्वास्थ्य, सामाजिक कार्य और शिक्षा के क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ेगी।
- समान कार्य के लिए समान वेतन को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- कार्य स्थल पर हिंसा और उत्पीड़न को समाप्त करना आवश्यक है। घरेलू हिंसा और कार्यस्थल पर लिंग आधारित हिंसा और उत्पीड़न में महामारी के दौरान वृद्धि देखी गई है। जिसके फलस्वरूप महिलाओं की रोजगार में संलग्न होने की क्षमता और कम हो गई है।

निष्कर्ष

एनएचएफएस के आकड़ो के अनुसार ऐसा पहली बार हुआ है कि भारत में प्रति 1000 पुरुषो पर महिलाओं की संख्या 1020 रही है। 50 % से अधिक आबादी को अधिक सशक्तिकरण की भी आवश्यकता है। यदयपि भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न प्रयास किये गए हैं इन प्रयासों के कारण ही 66% महिलाऐं यह मान रहीं हैं हैं कि एक पीढ़ी पूर्व की तुलना में लैंगिक विभेद कम हुआ है। इसके साथ ही साथ संगठित क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ रही है परन्तु यह भी कटु सत्य है कि भारत को इस दिशा में बहुत अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

युवा तथा हृदयघात की समस्या

सन्दर्भ

हाल ही में औस्ट्रेलिया के दिग्गज स्पिनर शेनवार्न की हृदयघात के कारण मृत्यु हो गई है। यद्यपि सामान्य रूप से यह वृद्धावस्था(60 वर्ष के उपरान्त) में आता है परन्तु पिछले कुछ समय से यह 40 से 60 आयुवर्ग के लोगों में भी इसकी शिकायत देखी गई है।

परिचय

ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज लेग स्पिनर शेन वॉर्न का 52 वर्ष की आयु में हार्ट अटैक के कारण निधन हो गया है । ध्यातव्य हो कि शेन वॉर्न टेस्ट क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की ओर से सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज तथा भारत में आयोजित होने वाले इंडियन प्रेमियर लीग के प्रथम विजेता टीम के कप्तान भी थे । युवावस्था में स्वस्थ शरीर ,आलिशान जीवनशैली के उपरान्त भी उन्हें हृदयघात की समस्या का सामना करना पड़ा। हाल ही में पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान तथा वर्तमान में बीसीसीसाई अध्यक्ष सौरव गांगुली और कॉमेडियन सुनील ग्रोवर को हार्ट अटैक हुआ था। कुछ समय पूर्व सिद्धार्थ शुक्ला (40 वर्ष), इंदर कुमार (43 वर्ष)- पुनीत राज. कुमार (46 वर्ष) की हृदयघात से मृत्यु हुई है।

क्या है हृदयघात की समस्या

हृदयघात को मायोकार्डियल इंफार्क्शन भी कहा जाता है। इसके साथ ही इसे कार्डियक इंफार्क्शन, कार्डियोपल्मोनरी अरेस्ट, कंजेस्टिव हार्ट फेल्योर और कोरोनरी इंफार्क्शन के रूप में भी जाना जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमे रक्त का प्रवाह कम होता है तथा रक्त हृदय के एक भाग में रुक जाता है। इसके उपरान्त हृदय की मांसपेशियां टूटती हैं तथा शरीर के बाए भाग (सीने से लेकर कंधो तथा बांह) में दर्द की अनुभूति होती है। इसके साथ ही इस बीमारी में सांस लेने में भी तकलीफ आती है। इसके अन्य लक्षण ों में अन्य लक्षणों में क्षिप्रहृदयता, पसीना, चिंता, मिचली, उल्टी, खांसी और चक्कर आना सम्मिलित हैं।

हृदयघात के मुख्य कारण

हृदयघात की स्थिति के कई कारण उत्तरदायी हैं -

- मधुमेह (इंसुलिन प्रतिरोध के साथ या बिना)
- तम्बाकू धूम्रपान
- हाइपरकोलेस्टेरोलेमिया
- न्यून एचडीएल
- उच्च ट्राइग्लिसराइड्स
- उच्च रक्त-चाप
- मोटापा
- अनियमित नीद पैटर्न
- अनियमित जीवन शैली
- प्रदूषण

भारत में हृदयघात की स्थिति

- कार्डियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीएसआई) के अनुसार भारत में लगभग 6 मिलियन से अधिक लोग हार्ट फेल्योर से पीड़ित हैं।
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान (आईसीएमआर) की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार :-

o 30 वर्ष से कम आयुवर्ग के लगभग करीब 20 करोड़ युवा उच्च रक्तचाप की समस्या से ग्रस्त हैं तथा प्रतिवर्ष होने वाली कुल मौतों में 19 फीसदी हृदयरोग से संबंधित होती हैं।

o आईसीएमआर ने यह भी बताया कि देश का हर चौथा युवा हृदयाघात की दहलीज पर है। प्रतिदिन 800 से ज्यादा युवाओं की मृत्यु हृदय सम्बन्धी रोगो के कारण हो रही है।

- तंबाकू का उपयोग हार्ट की बीमारी के होने के सबसे बड़े खतरे वाले फैक्टर्स में से एक है। 30 से 44 आयु वर्ग के लोगों में 26 % हार्ट की बीमारी तंबाकू के उपयोग के कारण होती हैं। इसके उपरांत अनियमित नींद पैटर्न और तनाव की स्थिति हृदयाघात के लिए उत्तरदायी है। भारत में 70 मिलियन से ज्यादा लोगों को डायबिटीज है। इसमें बहुत सारे युवा लोग भी शामिल है।

o हृदय विषेशज्ञों के अनुसार, जो युवक दिन भर में 10 सिगरेट पीते हैं उनके हृदय. रोग से ग्रस्त होने की सम्भावना 50 % बढ़ जाती है। ध्यातव्य है कि धूम्रपान एवं गलत खानपान से कॉलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ जाता है जिससे हृदयगति 50 प्रतिशत बढ़ जाती है और रक्त चाप 30 प्रतिशत बढ़ जाता है।

- देश में कुल हृदयघात के मामलो में 50 % मामले 50 साल से कम आयुवर्ग के लोग हैं तथा 25 % लोग 40 साल से कम उम्र के हैं। 2000 से 2016 के बीच इस आयुवर्ग (40 से 60 में) में प्रतिवर्ष हृदयघात की दर में 2 % की वृद्धि हुई है ।
- वायु प्रदूषण के कारण होने वाली लगभग 80% असामयिक मृत्यु के पीछे हृदयवाहिकीय रोगों का हाथ होता है। सूक्ष्म पार्टिकुलेट मैटर टॉक्सिक के साथ रक्त प्रवाह में पहुंच जाते हैं जो गंभीर हृदयघात का कारण बनते हैं।

हृदयघात से निदान के उपाय

मायोकार्डिय इंफार्क्शन का उपचार जीवनशैली में बदलाव और कार्डियक रिहैबिलिटेशन से लेकर दवा, स्टेंट और बाईपास सर्जरी तक हो सकता है।

रोकथाम

- ध्यातव्य है कि इन कारकों में से कई कारक परिवर्तनीय है, अतः एक स्वस्थ जीवन शैली बनाकर हृदयघात की समस्या

को टाला जा सकता है। इसके लिए नियमित व्यायाम, योग, शुद्ध खानपान, जैविक घडी (बायोलॉजिकल क्लाक) के अनुसार जीवन शैली इत्यादि का प्रयोग कर हृदयघात की समस्या को रोका जा सकता है।

हृदयघात के दौरान निदान

- डिफिब्रिलेशन विधि में विद्युत् के झटको का उपयोग किया जाता है। इन विद्युत् झटको अनियमित हृदयगति को ठीक करने में सहायता मिलती है। यह न सिर्फ सामान्य हृदयगति को बहाल करने में भी सहायक होता है बल्कि इस प्रक्रिया में रोगी को अतिरिक्त आक्सीजन प्रदान कर रक्त संचार तथा सांस की समस्या को भी दूर करने का प्रयास किया जाता है।
- यदि मायोकार्डियल इंफार्क्शन का कारण वसा का जमाव है, तो उस स्थिति में स्टैटिन का उपयोग किया जा सकता है। यह लीवर के हानिकारक कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन को कम करने में मदद करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा अवरोधक रक्त वाहिकाओं का दबाव कम होता है तथा वाहिकाओं को आराम मिलता है।
- कोरोनरी आर्टरी बाइपास ग्राफ्ट (सीएबीजी) सर्जरी या हार्ट बाइपास सर्जरी हृदयघात से बचाव का महत्वपूर्ण उपाय है। यह एक एक ओपन हार्ट प्रक्रिया होती है। सामान्य रूप से इस प्रक्रिया में रोगी के शरीर के अन्यत्र स्थान (सामान्यत: पैर) की नसों के एक खण्ड हटाकर, उसे धमनी के ब्लॉक हुए स्थान को छोड़ते हुए (बाइपास करते हुए), ग्राफ्ट कर दिया जाता है जिससे ब्लॉक हो चुकी धमनी को छोड़ते हुए (बाइपास करते हुए) रक्त प्रवाह का एक नया मार्ग बन जाता है।
- बैलून एंजियोप्लास्टी हार्ट की प्रक्रियों के एक समूह, जिसे परक्यूटेनियस कोरोनरी इंटरवेन्शन (पीसीआई) कहा जाता है। ब्लून एंजियोप्लास्टी के लिए ओपन सर्जरी की आवश्यकता नहीं होती। इसमें डॉक्टर एक नियत स्थान का निर्धारण कर वहां छिद्र करेगा , इसमें छिद्र के स्थान को सुन्न करने के लिए लोकल एनेस्थेटिक प्रयोग किया जाता है। इसके उपरान्त धमनी में छिद्र करने के बाद एक छोटी ट्यूब जिसे शीथ कहा जाता है, को धमनी में रखा जाएगा जिससे हृदय तक मेडिकल डिवाइस पहुंचाने के लिए अस्थायी मार्ग प्रदान किया जा सके।
- कोरोनरी एंजियोग्राम के दौरान डॉक्टर एक कैथेटर के माध्यम से एक कंट्रास्ट डाई को रक्त के प्रवाह में डालेगा, जिससे डॉक्टर एक्स-रे मॉनिटर पर रोगी की धमनियों को देख सकता है। मेडिकल डिवाइस के सिरे पर एक छोटे बलून लगे कैथेटर के अंदर डाला जाता है और रोगी के धमनियों के अंदर से ब्लॉक हुई कोरोनरी धमनी तक पंहुंचाया जाता है। इसके बाद बलून को फुलाया जाता है। जब बलूने को फुलाया जाता है तो थोड़ा बहुत दर्द होना सामान्य बात है। इसके बाद बलून को खाली कर दिया जाता है और कैथेटर को आपकी ध मनी से निकाल लिया जाता है। इस प्रक्रिया से आपकी कोरोनरी धमनी का संकुचन दूर हो जाता है, और आपकी धमनी से रक्त का प्रवाह बढ जाता है।
- स्टेंट थेरेपी : स्टेंट एक छोटी, धातु की, विस्तार करने योग्य छलनी जैसी ट्यूब होती है जो धमनी को सहारा देती है और इसे खुला रखने में सहायता करती है। बहुत से मामलों में हो सकता है कि केवल बलून एंजियोप्लास्टी आपकी बंद धमनी को खोलने में सफल न हो। इसलिए, आपका डॉक्टर ध मनी के ब्लॉक होने के स्थान पर एक को. रोनरी स्टेंट लगाने की सलाह दे सकता है। हृदय की एक धमनी में स्टेंट का लगाना एक अन्य प्रकार की पीसीआई प्रक्रिया है। एक स्टेंट को लगाने के लिए ओपन सर्जरी की आवश्यकता नहीं होती।

हृदयघात के उपरान्त बचाव के उपाय

- मायोकार्डियल इंफार्क्शन के उपचार में उपयोग की जाने वाली दवाओं के कुछ दुष्प्रभाव भी हैं। मरीजों को दी जाने वाली दवाओं में नाइट्रेट की मात्रा अधिक होती है। इसका सबसे अधिक देखा जाने वाला दुष्प्रभाव सिरदर्द है।

इसके उपरान्त स्वस्थ जीवन शैली, तम्बाकू तथा मदिरा सेवन के मनाही इत्यादि के द्वारा हृदयघात को रोका जा सकता है।

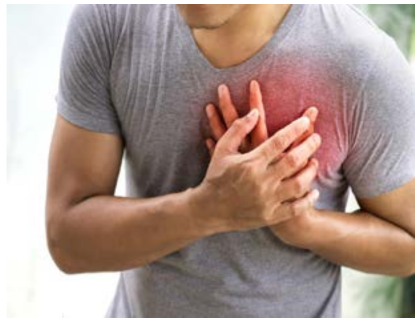

निष्कर्ष

भारत एक युवा देश है। भारत की अर्थव्यवस्था जनसांख्यिकीय लाभांश के पथ पर है। हृदयघात जैसे रोग भारत के मानव संसाधन को कमजोर कर जनसांख्यिकीय लाभांश को प्रभावित कर देते हैं। सरकार हृदयघात की समस्या की दिशा में निरंतर प्रयास कर रही है। सरकार बाईपास सर्जरी पर सब्सिडी प्रदन करती है इसके साथ ही साथ लोगों को जागरूक करने का कार्य भी किया जा रहा है। देश में योग के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। यद्यपि इन प्रयासों के उपरान्त भी हम यह कह सकते हैं कि हृदयघात की समस्या भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के लिए एक बड़ा खतरा बन रही है।

NOTES

रक्षा आत्मनिर्भरता: राष्ट्रीय सुरक्षा की कुंजी

चर्चा में क्यों?

रक्षा क्षेत्र से संबंधित बजट प्रस्तावों पर एक वेबिनार को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता के बाद रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी डिजाइन और विकास की उपेक्षा का उल्लेख किया, जिसके कारण देश हाल के वर्षों में दुनिया के सबसे बड़े हथियार आयातकों में से एक बन गया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि स्थानीय रक्षा उद्योग का विकास राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रक्षा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए ब्लूप्रिंट को समझाते हुए कहा कि अद्वितीय रक्षा क्षमताओं का डिजाइन और विकास जो भारतीय सेना की आवश्यकता को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है, यह देश के राष्ट्रीय सुरक्षा की कुंजी है क्योंकि इसे आयात के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा रहा है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने की चुनौतियां :-

- **रक्षा आधुनिकीकरण और रक्षा क्षमताओं में वृद्धि की कमी :-** पिछले कुछ वर्षों में, भारत में रक्षा आधुनिकीकरण की गति धीमी रही है और उच्च तकनीक वाले हथियारों का स्वदेशी उत्पादन एक चुनौती बना हुआ है। इसके मुख्य कारण है :-
- अनुसंधान और विकास की दिशा में लंबी अवधि के निवेश और रक्षा बजट में गिरावट
- सरकार के नेतृत्व वाले संगठनों द्वारा घरेलू उत्पादन में अक्षमता और देरी की प्रक्रिया में सुधार का न होना
- भारत के निजी क्षेत्र को रक्षा अनुबंध प्रदान करने के लिए सरकार की अनिच्छा
- भारत उच्च तकनीक वाले हथियारों के लिए विदेशी आयात पर भरोसा करना जारी रखता है, जिससे स्वदेशी उद्योग के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।
- **बजटीय मुद्दे:-** जबकि भारत के रक्षा बजट में पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है फिर भी इसका एक बड़ा हिस्सा कर्मियों के वेतन और पेंशन जैसे लागत पर खर्च किया जाता है, जिससे रक्षा उत्पादन के लिए उपलब्ध धन कम हो जाता है।
- इसके अलावा, अनुसंधान और विकास के लिए भारत का बजट आवंटन लगभग 4% है (यह 2020-2021 के लिए कुल रक्षा बजट का 4% था)। यह संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे तकनीकी रूप से उन्नत देशों द्वारा पूंजीगत व्यय की तुलना में बहुत कम है, जो अनुसंधान और विकास पर अपने रक्षा बजट का क्रमशः 12% और 20% खर्च करते हैं।
- **सशस्त्र बलों की भविष्य की जरूरतों के लिए रणनीतिक योजना की कमी :-** उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य में, भारतीय सशस्त्र बलों को सीमा खतरों का जवाब देने के लिए तैयार रहना होगा। नतीजतन, सशस्त्र बलों की युद्ध-लड़ने की क्षमताओं को लगातार बढ़ाया जाना चाहिए और हथियारों और उपकरणों में प्रौद्योगिकी को अपडेट किया जाना चाहिए।
- स्वदेशी रूप से इन जरूरतों को पूरा करने के लिए और सशस्त्र बलों की जरूरतों के लिए रणनीतिक और व्यावहारिक रूप से योजना बनाने और उच्च तकनीक वाले हथियारों के दीर्घकालिक विकास में निवेश करने की आवश्यकता है। टिप्पणीकारों ने तर्क दिया है कि वर्तमान में भारत की रक्षा नीति में इसकी कमी है।
- **उत्पादन और समय में देरी:-** स्वदेशी रक्षा उत्पादन में उपकरणों का उत्पादन देरी से किया जाता है। उदाहरण के लिए, भारत के पहले स्वदेशी रूप से उत्पादित हल्के लड़ाकू विमान, एचएएल तेजस को उत्पादन के लिए लंबे समय तक देरी का सामना करना पड़ा, जिसमें एचएएल को चार साल की अनुमानित समय सीमा के बावजूद 16 विमानों का उत्पादन करने के लिए कुल सात साल का समय लगा है।
- **पदानुक्रम में और विषम निर्णय लेना:-** रक्षा मंत्रालय की एक 2018 की आंतरिक रिपोर्ट ने विषम निर्णय लेने की प्रक्रिया, लालफीताशाही और कई प्रमुखों द्वारा निर्णय लेना आदि को को रक्षा खरीद में अत्यधिक देरी के कारण के रूप में पहचाना है। राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा खरीद के मुद्दों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया पदानुक्रमित जटिलताओं के कारण धीमी और अक्षम रही है, जिसके परिणामस्वरूप रक्षा आधुनिकीकरण की वृद्धि भी धीमी रही है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए सरकार की पहल:-

- रक्षा मंत्रालय ने 21 अगस्त, 2020 को 101 वस्तुओं की 'पहली सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची' और 31 मई, 2021 को 108 वस्तुओं की 'दूसरी सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची' अधिसूचित की है, जिसके लिए इंगित की गई समयसीमा से परे उनके आयात पर प्रतिबंध होगा। रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए यह एक बड़ा कदम है।
- स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए श्रीजन पोर्टल 14 अगस्त, 2020 को लॉन्च किया गया था। आज की तारीख तक, 10,929 आइटम, जो पहले आयात किए गए थे, को स्वदेशीकरण के लिए पोर्टल पर प्रदर्शित किया गया है।
- डीपीपी-2016 को रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (डीएपी)-2020 के रूप में संशोधित किया गया है, जो 'आत्म निर्भर भारत अभियान' के

हिस्से के रूप में घोषित रक्षा सुधारों के सिद्धांतों से प्रेरित है।

- रक्षा उपकरणों के स्वदेशी डिजाइन और विकास को बढ़ावा देने के लिए पूंजीगत उपकरणों की खरीद के लिए **'BUY** [इंडियन-आईडीडीएम (स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित)]' श्रेणी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।
- पूंजीगत खरीद की 'मेक' प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। मेक-**I** श्रेणी के अंतर्गत भारतीय उद्योग को सरकार द्वारा विकास लागत **(development cost)** के 70% तक वित्तपोषण का प्रावधान है। इसके अलावा, 'मेक' प्रक्रिया के तहत एमएसएमई के लिए विशिष्ट आरक्षण हैं।
- भारत सरकार ने नए रक्षा औद्योगिक ला. इसेंस की मांग करने वाली कंपनियों के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से रक्षा क्षेत्र में एफडीआई को 74% तक और सरकारी मार्ग से 100% तक बढ़ा दिया है।
- अप्रैल, 2018 में 'इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (आईडीईएक्स)' नामक रक्षा के लिए एक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को शुरू किया गया है। आईडीईएक्स का उद्देश्य एमएसएमई, स्टार्टअप, व्यक्तिगत नवोन्मेष. कों, अनुसंधान एवं विकास संस्थानों और शिक्षाविदों सहित उद्योगों को शामिल करके रक्षा और एयरोस्पेस में नवाचार और प्रौद्यो. गिकी विकास को बढ़ावा देने के लिए एक वातावरण का निर्माण करना है और उन्हें अनु. संधान और विकास करने के लिए अनुदान/ वित्तपोषण और अन्य सहायता प्रदान करना है जिसमें भारतीय रक्षा और एयरोस्पेस जरूरतों के लिए भविष्य में अपनाने की क्षमता है।
- सरकार ने उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों में एक-एक रक्षा औद्योगिक गलियारों की स्थापना की है। वर्ष 2024 तक उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु के रक्षा गलियारों में 20,000 करोड़ रुपये के निवेश की योजना है।
- रक्षा निवेशक प्रकोष्ठ (डीआईसी) फरवरी-2018 में बनाया गया है ताकि मंत्रालय इस क्षेत्र में निवेश के लिए- निवेश के अवसरों,

प्रक्रियाओं और नियामक आवश्यकताओं से संबंधित प्रश्नों को हल करने सहित सभी आवश्यक जानकारी प्रदान कर सके। आज की तारीख तक, रक्षा निवेशक प्रकोष्ठ द्वारा 1,176 प्रश्न प्राप्त किए गए थे और उनका समाधान कर दिया गया है।

- सार्वजनिक/निजी उद्योगों, विशेषरूप से एमएसएमई और स्टार्टअप की भागीदारी के माध्यम से रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए डीआरडीओ के तहत प्रौद्योगिकी विकास कोष (टीडीएफ) का सृजन किया गया है।

आगे की राह :-

ऊपर बताई गई चुनौतियों को दूर करने और रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता का समर्थन करने के लिए, सरकार को सुधार के लिए निम्नलिखित सुझावों पर विचार करना चाहिए:

- **निजी क्षेत्र का समर्थन:-** एक रक्षा औद्योगिक आधार बनाने के लिए, सरकार को भारत में निजी क्षेत्र का समर्थन करने और बड़े तथा स्थिर रक्षा अनुबंधों के साथ निजी क्षेत्र पर भरोसा करने पर विचार करना चाहिए। अनुसंधान और विकास का समर्थन और निजी क्षेत्र की डिजाइन और विनिर्माण क्षमताएं भारत में रक्षा उत्पादन बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- **सशस्त्र बलों के लिए धन :-** धन की कमी के कारण कई रक्षा परियोजनाएं लंबित हैं। भारत सरकार को रक्षा के लिए बजट आवंटन की समीक्षा करने पर विचार करना चाहिए ताकि कर्मियों की लागत के सापेक्ष तीनों बलों के लिए पर्याप्त धन सुनिश्चित किया जा सके। इसके अलावा, रक्षा उत्पादन में दीर्घकालिक और बड़े पूंजी निवेश, और अनुसंधान और विकास भी वर्तमान समय की आवश्यकता है।

- **निर्णय लेने और समय में देरी में सुधार :-** रक्षा खरीद के सम्बन्ध में निर्णय लेने की चुनौतियों को दूर करने के लिए, रक्षा मंत्रालय को निर्णय लेने की प्रक्रिया के पुनर्गठन पर विचार करना चाहिए। तीनों सेनाओं के प्रतिनिधियों को अधिक समावेशी और कुशल निर्णय लेने के लिए रक्षा खरीद और राष्ट्रीय सुरक्षा निर्णय लेने में शामिल किया जाना चाहिए। रक्षा खरीद में समय की देरी में सुधार, निर्णय लेने की प्रक्रिया में संरचनात्मक बदलाव करके भी कम किया जा सकता है।

- रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता प्रभावी रक्षा क्षमता और राष्ट्रीय संप्रभुता को बनाए रखने और सैन्य श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण घटक है। एक मजबूत घरेलू रक्षा विनिर्माण क्षेत्र भारत की सैन्य क्षमताओं को बदल सकता है और अपनी रक्षा आवश्यकताओं में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

NOTES

जेट स्ट्रीम की गति में वृद्धि के भौगोलिक आयाम

सन्दर्भ

हाल ही में किये गए एक नए शोध से यह पता चलता है कि 1871-2011 के दौरान उत्तरी अटलांटिक और यूरेशिया के ऊपर औसत शीतकालीन उत्तरी गोलार्ध जेट स्ट्रीम की स्थिति 330 किलोमीटर तक उत्तर की ओर बढ़ गई है तथा 141 साल की अवधि के दौरान औसत शीतकालीन जेट गति बढ़कर 132 मील प्रति घंटे हो गई है।

अनुसन्धान के विषय में

यह अनुसन्धान जेपीआई क्लीमेंट तथा जेपीआई ओसियन जॉइंट काल के तत्वाधान में नेचुरल एनवायर्नमेंटल रिसर्च काउंसिल के द्वारा किया गया था।

यह अनुसन्धान आयरलैंड की सरकार वित्तपो. षित है तथा इसमें मरीन इंस्टिट्यूट द्वारा सहयोग प्रदान किया गया है।

अनुसन्धान के मुख्य निष्कर्ष

- क्लाइमेट डायनेमिक्स में प्रकाशित यह अध्ययन, महासागरों तथा महाद्वीपों में "उत्तरी गोलार्ध जेट स्ट्रीम" के तुलनात्मक अध्ययन को प्रदर्शित करता है।
- इस अध्ययन ने यह बताया कि जेट स्ट्रीम के रुझान क्षेत्रीय और मौसमी आधार पर भिन्न होते हैं।
- अध्ययन के अनुसार 1871 और 2011 के मध्य उत्तरी अटलांटिक पर 44°**N** से 47°**N** में जेट स्ट्रीम अक्षांश में सर्दियों में औसत गति 10 मील प्रति घंटे की गति से 132 मील प्रति घंटे के रेंज में वृद्धि हुई है परन्तु उत्तरी प्रशांत क्षेत्र में कोई वृद्धि नहीं देखी गई।
- उत्तरी अटलांटिक और यूरेशिया में शीतक. ालीन जेट अक्षांश और गति में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। ये परिवर्तन अवधि के दौरान भूमध्य रेखा और आर्कटिक के बीच घटते तापान्तर और बढ़ते दबाव ढाल के अनुक्रमानुपाती है। यह संभावित रूप से आ. र्कटिक की बर्फ को गर्म कर रहा है।
- उत्तरी प्रशांत क्षेत्र में, जेट अक्षांश या गति में कोई वृद्धि नहीं देखी गई है। हालांकि इस दौरान उत्तरी प्रशांत समुद्री सतह के तापमान में परिवर्तन लगभग 50% जेट अक्षांश में परिवर्तनशीलता को प्रदर्शित करता है।"
- उत्तरी गोलार्ध जेट स्ट्रीम में परिव. र्तनशीलता तथा रुझान उत्तरी अटलांटिक, उत्तरी प्रशांत, यूरेशिया और उत्तरी अमेरिका में क्षेत्रीय आधार पर भिन्न हैं। यह जलवायु की भविष्यवाणी करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए योजनाएं विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

क्या है जेट प्रवाह

जेट प्रवाह से तात्पर्य क्षोभ मण्डल में चलने वाली अत्यधिक तीव्र गति के पवन प्रवाह से है ।सामान्य रूप से ये उत्तरी गोलार्ध में ही पायी जाती हैं। ये वायु धाराएँ लगभग 150 किमी चौड़ी तथा 2 से 3 किमी मोटी संक्रमण पेटी में प्रवाहित होती हैं। जेट प्रवाह की सामान्य गति 150 से 200 किमी प्रति घण्टा होती है किन्तु कोर (**Core**) में इनकी गति 320 किलोमीटर से 480 किमी प्रति घण्टे तक हो जाती है। यह पवन दक्षिणी गोलार्द्ध में यह मुख्यत: 60° दक्षिणी अक्षांश से ध्रुव की ओर प्रवाहित होती है। जेट पवन की गतिज ऊर्जा प्रचण्ड वायु वेग की संकरी पट्टी में केन्द्रित होती है।

जेट प्रवाह की उत्पत्ति :-

जेट धाराओं की उत्पत्ति मुख्य रूप से

- भूमध्य रेखा से पोल की ओर तापमान प्रवणता तथा
- ध्रुवों के धरातलीय भाग पर उच्च दाब (भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर दाब प्रवणता)
- धरातल के ऊपर क्षोभमण्डल (**tro-posphere**) में निम्न दाब के कारण जनित परिध्रुवीय भंवर के कारण होती है ।

जेट प्रवाह के प्रकार

इनके मुख्यतः 4 प्रकार हैं

o ध्रुवीय जेट वायु धाराएँ
o ध्रुवीय वाताग्री जेट स्ट्रीम
o उपोष्ण कटिबंधीय पछुवा जेट
o उष्ण कटिबंधीय पूर्वी जेट

- **ध्रुवीय जेट वायु धाराएँ :-** ये धाराएं मुख्य रूप से 60° उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश से पोल की ओर क्षोभमण्डल में प्रवाहित होती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में इनकी दिशा दक्षिण - पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर तथा दक्षिण ी गोलार्द्ध में उत्तर - पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर होती है।
- **ध्रुवीय वाताग्री जेट स्ट्रीम:-** इस जेट स्ट्रीम की खोज स्वीडिश वैज्ञानिक रॉस्बी ने किया था अत: इसे' रास्बी वेब' के नाम से भी जाना जाता है। इनका निर्माण घरातलीय पोलर शीत वायुराशियों एवं उष्ण कटिबंधी गर्म वायुराशियों के सम्मिलन क्षेत्र (30° - 60° अक्षांश) के ऊपर (लगभग 8 से 12 किमी ०) होता है। दो विपरीत वायु राशियों के सम्मिलन क्षेत्र में होने के कारण इनकी ताप प्रवणता अधिक होती है। इन पवनों की दिशा दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व दिशा की तरफ होती है। ये पवन अनियमित होती हैं।
- उपोष्ण कटिबंधीय पछुवा जेट- यह वायु प्रवाह 20 डिग्री से 35 डिग्री अक्षांशों के ऊपर घरातलीय उपोष्ण कटिबंधी उच्च वायु दाब की पेटी के उत्तर में ऊपरी क्षोभमण्डल में (10-14 किमी०) में होती है। इसकी गति 340-385 किमी / घंटा होता है। इनकी

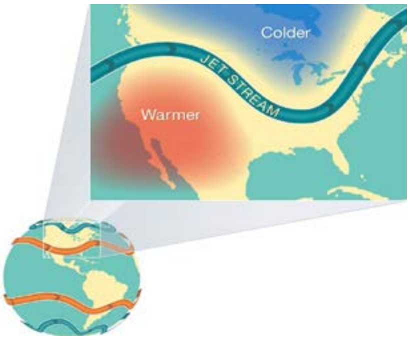

उत्पत्ति का मुख्य कारण विषुवत् रेखीय क्षेत्र में संवहन क्रिया के कारण उठी हुई हवाओं का क्षोभ सीमा की पेटी में उत्तर-पूर्वी प्रवाह है।

- उष्ण कटिबंधीय पूर्वा जेट- यह प्रवाह केवल उत्तरी गोलार्द्ध में ग्रीष्म काल में भारत तथा अफ्रीका के ऊपर (14 से 16 किमी०) होता है। इसके प्रवाह की दिशा उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम होती है।

जेट स्ट्रीम की स्थिति तथा विस्तार में परिवर्तन : जेट प्रवाह का सूचकांक-चक्र

जेट स्ट्रीम की स्थिति तथा विस्तार में प्रायः (ध्रुवों से भूमध्य रेखा ओर) परिवर्तन होता रहता है। जिसके अन्तर्गत जेट स्ट्रीम प्रारूप लगभग सीधे पश्चिम - पूर्व दिशा में प्रवाह से लेकर विसर्पित पथ तक पहुंच जाता है। पश्चिम-पूर्व दिशा से लहरनुमा प्रवाह मार्ग के बनने की अवधि को सूचकांक-चक्र कहते हैं। यह सूचकांक चक्र 4 चरणों में पूर्व होता है। इन चक्रो को इसे जेट विकास-चक्र संज्ञा भी कहा जाता है।

चारो अवस्थाओं का वर्णन निम्नवत है -

- **प्रथम अवस्थाः-** जेट स्ट्रीम की यह स्थिति ध्रुवों के पास होने के कारण इसे उच्च कटिबंधीय सूचकांक के रूप में जानी जाती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में इस धारा के उत्तर में ध्रुवीय तथा दक्षिण में गर्म पछुवा पवने होती है ।इस अवस्था में जेट स्ट्रीम का संचार पश्चिम से पूर्व की तरफ लगभग सीधे मार्ग में होता है। इस अवस्था में धरातल पर ठंडी ध्रुवीय वायुराशि पछुवा वायु राशि के अभि‌सरण के कारण दशा का आविर्भाव होता है।
- **द्वितीय अवस्थाः-** धीरे -धीरे जेट स्ट्रीम में लहर का निर्माण होने लगता है। इस लहर को रासबी लहर के नाम से भी जाना जाता है । जब इन रासबी लहरों के आयाम में वृद्धि होती है तब जेट स्ट्रीम का विस्तार भूमध्य रेखा की होने लगता है । इसके फलस्वरूप शीतल ध्रुवीय वायु भूमध्य रेखा के अधिक निकट, तथा उष्ण कटिबन्धीय वायु ध्रुवों पास पहुंच जाती है।
- **तृतीय अवस्था :-** इस अवस्था में जेट स्ट्रीम का प्रवाह पूर्णतया मियाण्डरिंग या लहरनुमा हो जाता है। इस समय प्रवाह भूमध्य रेखा के काफी पास होता है। ध्यातव्य है कि प्रथम दो अवस्थाओं में दाव प्रवणता उत्तर - दक्षिण होती है जब कि इस अवस्था में पूर्व - पश्चिम दिशा में हो जाती है। ध्रुवीय शीत वायु राशियों का भूमध्य रेखा की तरफ परवाह होता है। इसके साथ ही भारी मात्रा में उष्ण कटिबंधी गर्म वायु राशियों का ध्रुवों की ओर प्रवाह होता है।
- **चतुर्थ अवस्थाः-** इस दौरान जेट स्ट्रीम के अत्यधिक देशान्तरीय प्रवाह (उत्तर-दक्षिण की तरफ) के कारण तरंगों का वि‌च्छेद हो जाता है। विच्छेद के फलस्वरूप कुछ स्ट्रीम मूलधारा से अलग होकर चक्रा‌कार मार्ग से प्रवाहित होती है। इसके कारण चक्राकार वायु प्रणाली की कई कोशिकायें (चक्रवातीय कोशिका तथा वाताग्र) विकसित हो जाती हैं।

जेट स्ट्रीम का महत्व -

जेट स्ट्रीम व्यापक रूप से मौसम को प्रभावित करता है। इसके निम्नलिखित महत्व हैं -

- जेट स्ट्रीम के कारण क्षोभ मण्डल के ऊपरी भाग में क्षैतिज अभिसरण तथा अपसरण होने लगता है। ऊपरी वायुमण्डल में अभिसरण एवं अपसरण होने से उच्च तलीय चक्रवातों एवं प्रतिचक्रवातों का निर्माण होता है। चक्रवातों में हवा ऊपर उठती है तथा प्रतिचक्रवातीय वायु प्रणाली में हवा नीचे बैठती है। इस तरह उच्चतलीय हवा में उपरिमुखी एवं अधोमुखी संचार होने से क्षोभमण्डल एवं समताप मण्डल के हवाओं में तेजी से मिश्रण होता है। वायु का यह मिश्रण मानव जनित प्रदूषकों का क्षोभ मण्डल से समताप मण्डल में भेज देता है।
- जेट स्ट्रीम के कारण धरातलीय (निम्न तलीय) चक्रवातों एवं प्रति चक्रवातों के स्वरूप में परिवर्तन होने से स्थानीय मौसम में उतार चढ़ाव (बाढ़ - सूखा) होता रहता है।
- यह कुछ ओजोन क्षयकारी पदार्थों को समताप मंडल में ले जाता है जिसके परिणामस्वरूप ओजोन परत का ह्रास होता है।
- दक्षिणी एशिया के मानसून पर जेट स्ट्रीम का महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है । वास्तव में उष्ण कटिबंधी मानसूनी वर्षा जेट स्ट्रीम से प्रभावित होती।
- जेट स्ट्रीम भारत के जलवायु को प्रभावी करती है।उष्ण कटिबंधीय पूर्वा जेट भारत को प्रभावित करती है। यह प्रवाह भारतीय मानसून की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी है। गर्म होने के कारण यह जेट स्ट्रीम सतही गर्म व आर्द्र हवाओं को ऊपर उठाकर भारत में संवहनीय वर्षा करता है। इस प्रकार भारत में मानसून का प्रस्फोट हो जाता है।
- उपोष्ण कटिबंधीय पछुवा जेट भारत में पश्चिमी विक्षोभ के लिए उत्तरदायी है जो उत्तरी भारत में शीतकालीन वर्षा करता है। यह गेहूं के फसल के लिए अच्छी होती है।

NOTES

युद्ध के समय में अर्थव्यवस्था

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में, रूस के यूक्रेन पर आक्रमण की खबर से हर जगह निवेशक हतोत्साहित हुए हैं।

मुख्य विचार :-

- बीएसई का सेंसेक्स 2,702 अंक या 4.7% गिरकर छह महीने के निचले स्तर 54,529 पर बंद हुआ।
- भू-राजनीतिक घटनाक्रमों के अनुरूप निकट भविष्य में बाजार में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी।
- विशेषज्ञों का मानना है कि चूंकि भारत इस घटना का पक्ष नहीं है और प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित नहीं है, इसलिए इसकी मध्यम से लंबी अवधि की आर्थिक संभावनाओं पर इस युद्ध का प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए निवेशकों को घबराहट में शेयर बेचने से बचना चाहिए।

चिन्ताएं :-

मुद्रास्फीति जोखिम :-

ईंधन की कीमतें :-

- रूस दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है।
- आपूर्ति को लेकर चिंता के कारण आठ साल में पहली बार क्रूड ऑइल ने 100 डॉलर प्रति बैरल के निशान को पार किया है।
- क्रूड ऑइल की बढ़ी हुई कीमतें मुद्रास्फीति में वृद्धि कर सकती हैं।
- भारत अपनी तेल आवश्यकता का 80% से अधिक आयात करता है, लेकिन इसके कुल आयात में तेल आयात का हिस्सा लगभग 25% है।
- जबकि पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों के चलते घरेलू ईंधन की कीमतों में वृद्धि को रोक दिया गया है। ऐसे में, वैश्विक कच्चे तेल में हालिया उछाल राज्य के स्वामित्व वाले तेल खुदरा विक्रेताओं पर आर्थिक बोझ डाल सकता है।
- कीमतों में बढ़ोतरी को कैलिब्रेट करना अब और अधिक जटिल है, जो कि व्यापक मुद्रास्फीति प्रभाव को देखते हुए वृद्धि का अनुसरण कर सकता है।

चालू खाता घाटा :-

- तेल की बढ़ती कीमतें चालू खाते के घाटे को भी प्रभावित करेंगी। चालू खाता घाटा आयातित और निर्यात की गई वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों के बीच के अंतर को दर्शाता है।

अन्य वस्तुओं की कीमतें :-

- पश्चिम द्वारा रूस पर प्रतिबंध दुनिया के साथ उसके व्यापार को प्रभावित कर सकता है। इसके परिणामस्वरूप गेहूं, खाद्य तेल और धातुओं सहित अन्य वस्तुओं और उत्पादों की कीमतों में वृद्धि हो सकती है।
- सूरजमुखी के तेल की अपनी अधिकांश आवश्यकता भारत यूक्रेन से आयात करता है। साथ ही दोनो युद्धरत देश (रूस और यूक्रेन) दुनिया के दो सबसे बड़े गेहूं उत्पादक हैं।

मुद्रास्फीति :-

- मुद्रास्फीति का तात्पर्य दैनिक या सामान्य उपयोग की अधिकांश वस्तुओं और सेवाओं, जैसे भोजन, कपड़े, आवास आदि की कीमतों में वृद्धि से है।
- मुद्रास्फीति समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं की एक टोकरी में औसत मूल्य परिवर्तन को मापती है।
- मुद्रास्फीति किसी देश की मुद्रा की एक इकाई की क्रय शक्ति में कमी को सूचित करती है।
- इसे प्रतिशत में मापा जाता है और भारत में, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय मुद्रास्फीति को मापता है।

अपस्फीति :-

- वस्तुओं की इस टोकरी के मूल्य सूचकांक में विपरीत और दुर्लभ गिरावट को 'अपस्फीति' कहा जाता है।
- भारत में, मुद्रास्फीति को मुख्य रूप से दो मुख्य सूचकांकों पहला डब्लूपीआई (थोक मूल्य सूचकांक) और दूसरा सीपीआई (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) द्वारा मापा जाता है।
- डब्लूपीआई थोक को मापता है और सीपीआई खुदरा-स्तर के मूल्य परिवर्तनों को मापता है।

आर्थिक पुनः प्राप्ति :-

- कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि से मुद्रास्फीति, राजकोषीय और बाहरी क्षेत्र के जोखिम पैदा होते हैं।
- डब्लूपीआई बास्केट में तेल से संबंधित उत्पादों की हिस्सेदारी 9% से अधिक है।
- मदन सबनवीस के अनुसार, कच्चे तेल में 10% की वृद्धि से डब्लूपीआई मुद्रास्फीति में लगभग 0.9% की वृद्धि होगी।
- बढ़ा हुआ तेल आयात बिल भारत की बाहरी स्थिति को प्रभावित करेगा।
- एलपीजी और केरोसिन पर सब्सिडी बढ़ने की भी संभावना है, जिससे कुल सब्सिडी बिल में बढ़ोतरी होगी।
- हालांकि, कुछ विशेषज्ञों का तर्क है कि भारत की आर्थिक बुनियाद मजबूत बनी हुई है, और युद्ध का अर्थव्यवस्था पर खास प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- ऐसा माना जाता है कि जब कोविड की तीसरी लहर समाप्त होने के करीब है और अधिकांश प्रतिबंध वापस ले लिए गए हैं, तो खपत और घरेलू विकास में तेजी आएगी, जिससे अर्थव्यवस्था में रिकवरी की गति तेज होगी।

एफपीआई भावना :-

- अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा मार्च 2022 से ब्याज दरों में बढ़ोतरी के बाद प्रोत्साहन की वापसी की गति में वृद्धि की घोषणा की गयी है। जिसके बाद से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक पिछले चार महीनों से भारतीय इक्विटी में अपनी हिस्सेदारी बेच रहे हैं।
- निवेशकों ने उभरती अर्थव्यवस्थाओं से धन निकालना शुरू कर दिया है ताकि उन्हें अमेरिकी खजाने में रखा जा सके और बांड प्रतिफल (बांड ईल्ड) के रूप में उच्च वृद्धि का लाभ उठाया जा सके।
- पिछले दो महीनों में धन के बहिर्वाह का प्रवाह तेज हो गया है।
- नवंबर 2021 से 82,745 करोड़ रुपये के कुल एफपीआई से निकासी प्रक्रिया शुरू हुई, जनवरी और फरवरी 2022 के बीच लगभग 57,774 करोड़ रुपये निकाले गए। यह निकासी आने वाले दिनों में भी जारी रहने की संभावना है। 24 फरवरी को, एफपीआई ने भारतीय इक्विटी से नेट 6,448 करोड़ रुपये निकाले हैं, जिससे बाजारों में गिरावट आई।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) :-

- विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) में दूसरे देश में निवेशकों द्वारा रखी गई प्रतिभूतियां और अन्य वित्तीय परिसंपत्तियां शामिल हैं।
- यह निवेशक को कंपनी की संपत्ति का प्रत्यक्ष स्वामित्व प्रदान नहीं करता है और बाजार की अस्थिरता के आधार पर अपेक्षाकृत तरल है।
- विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (**FDI**) के साथ, थ्व्प् विदेशी अर्थव्यवस्था में निवेश करने के सामान्य तरीकों में से एक है।
- अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं के लिए एफडीआई और एफपीआई दोनों ही वित्त पोषण के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

डीआईआई व्यवहार :-

- पिछले दो महीनों में डीआईआई ने इक्विटी में 55,551 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया है।
- विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक चिंताएं दीर्घकालिक बुनियादी बातों और व्यवसायों की संभावनाओं को प्रभावित नहीं करेंगी। निवेशकों को बाजार में गिरावट को, म्यूचुअल फंड और उच्च गुणवत्ता वाली ब्लू चिप कंपनियों में निवेश करने के अवसर के रूप में लेना चाहिए।

घरेलू संस्थागत निवेशक (डीआईआई) :-

- घरेलू संस्थागत निवेशक बीमा कंपनियां, म्यूचुअल फंड हाउस, पेंशन फंड या भविष्य निधि जैसी संस्थाएं हैं।
- डीआईआई आमतौर पर देश के छोटे निवेशकों से पैसा जमा करते हैं और फिर देश की विभिन्न प्रतिभूतियों और परिसंपत्तियों में व्यापार करते हैं।
- एफआईआई की तरह, पिछले कुछ वर्षों में, डीआईआई भी कंपनियों के लिए घरेलू फंड का एक अनिवार्य स्रोत बन गए हैं और अर्थव्यवस्था के शुद्ध निवेश प्रवाह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इक्विटी निवेशक :-

- निवेश सलाहकारों का कहना है कि हालांकि बाजार में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है, खुदरा निवेशकों को डीआईआई निवेश पैटर्न पर ध्यान देना चाहिए।
- यदि डीआईआई बाजार में तेज गिरावट के बीच निवेश कर रहे हैं, तो खुदरा निवेशकों को भी घबराना नहीं चाहिए और यदि यह इक्विटी में कम वजन के हैं तो अपने निवेश को बढ़ाना चाहिए।
- फंडामेंटल मजबूत होने और चिंता वाले कारकों के बाहर तक सीमित रहने के कारण, विशेषज्ञों का कहना है कि स्थिति सामान्य होने के बाद बाजार में उछाल आने की संभावना है। हालांकि, निवेशकों को अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए।

गोल्ड आउटलुक :-

- अनिश्चितता और मुद्रास्फीति के समय में, सोना निवेशकों के लिए आकर्षक परिसंपत्ति के रूप में उभरता है।
- गौरतलब है कि ऐसे समय में जब शेयर गिर रहे हैं, सोना तेजी से चढ़ा है।
- सोने की कीमतें मौजूदा स्तरों से और बढ़ने की संभावना है, क्योंकि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और भू-राजनीतिक तनावों पर मुद्रास्फीति संबंधी चिंताओं के बाद निवेशक सुरक्षित निवेश की ओर बढ़ेंगे।
- अगर मौजूदा स्थिति और आगे बढ़ती है तो निवेशक सेफ हेवन एसेट (स्वर्ण या अन्य महंगी धातुएं) के नजदीक रहेंगे या कैश (डॉलर) पर टिके रहेंगे।
- भू-राजनीतिक तनावों के साथ, बढ़ती मुद्रास्फीति संबंधी चिंताएं भी निचले स्तरों पर कीमती धातु की कीमतों का समर्थन कर रही हैं।

निष्कर्ष :-

- महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को सुभेद्यता के दो प्रमुख बिंदुओं उच्च मुद्रास्फीति और अस्थिर वित्तीय बाजार के साथ छोड़ दिया है।
- युद्ध के बाद के झटके उच्च मुद्रास्फीति और अस्थिर वित्तीय बाजार के जोखिम में वृद्धि कर सकते हैं।
- ईंधन और हीटिंग पर अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा खर्च करने वाले परिवारों के पास अन्य वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए नकदी की कमी हो जाएगी।
- गिरते बाजार एक और आर्थिक संकट उत्पन्न कर देंगे, जिससे धन और आत्मविश्वास को झटका लगेगा और फर्मों में निवेश के लिए धन का दोहन करना कठिन हो जाएगा।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की तरफ बढ़ते कदम

सन्दर्भ

भारत सरकार निरंतर जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की तरफ बढ़ रही है। पिछले तीन केंद्रीय बजट से निरंतर जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के सम्बन्ध में प्रावधान किये जा रहे हैं।

परिचय

भारत की वित्त मंत्री ने अपने बजट संभाषण में प्राकृतिक, रसायन-मुक्त, जैविक एवं शून्य-बजट प्राकृतिक कृषि के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को इस बार पुन: दोहराया है। पिछले बजट संभाषणों में ऐसा तीसरी बार हुआ है जब वित्त मंत्री द्वारा (शून्य बजट) प्राकृतिक कृषि का उल्लेख किया है। इस कृषि पद्धति में प्रयुक्त बजट शब्द का तात्पर्य कृषि में लगने वाले व्यय से है। अर्थात् शून्य बजट कृषि का अर्थ बाजार में उपलब्ध कृषि आगतों यथा रासायनिक उर्वरक और खाद, को प्रयोग किये बिना प्राकृतिक आगतों द्वारा कृषि कार्य को सम्पादित करने से है। इससे इस कृषि पद्धति में खर्च शून्य हो जाता है। सम्मिलित रूप से इस प्रक्रिया को जीरो बजट प्राकृतिक कृषि कहा जाता है।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के स्तम्भ

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के लिए निम्नांकित चार तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

जीवामृत/ जीवनमूर्ति– जिवामिता या जीवनमूर्ति की सहायता से जमीन को पोषक तत्व प्रदान किये जाते हैं। जीवनमूर्ति के कारण मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की गतिविधि बढ़ जाती है जिससे फसलों की अच्छी पैदावार होती है। इसके साथ ही साथ जीवामृत की सहायता से पेड़ों और पौधों को कवक और जीवाणु संयंत्र रोग होने से भी बचाया जा सकता है। अत: यह प्राकृतिक कृषि में एक उत्प्रेरक एजेंट के रूप में कार्य करता है।

- इसे बनाने के लिए 200 लीटर पानी, 10 किलो ताजा गाय का गोबर, 5 से 10 लीटर वृद्ध गाय का मूत्र, 2 किलो पल्स का आटा, 2 किलो ब्राउन शुगर और मट्टी का प्रयोग किया जाता है।

बीजामृत/ बीजामूर्ति :- यह बीजरोपण के दौरान प्रयुक्त होता है। इसकी सहायता से नए पौधों की जड़ों को कवक, मृदाजन्य बीमारी तथा अन्य बीमारियों से बचाया जाता है। इसके निर्माण में गाय का गोबर, गाय मूत्र, एंटी-बैक्टीरिया तरल, नींबू और मिट्टी का प्रयोग किया जाता है।

आच्छादन(मल्चिंग): इस विधि का प्रयोग मृदा की नमी संरक्षण तथा मृदा की उर्वरता बनाये रखने के लिए किया जाता है।इस प्रक्रिया के अंतर्गत मृदा की सतह कई तरह के मटेरियल लगाए जाते हैं। यह कृषि के दौरान मृदा की गुणवत्ता का प्रबंधन करता है।

व्हापासा (वाष्प, **moisture**):- इस कृषि की विधि में पौधों को बढ़ने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है (सुभाष पालेकर की पुस्तक के अनुसार) अत: इस विधि में पौधे को वृद्धि के लिए व्हापासा यानी भाप दिया जाता है। व्हापासा का अर्थ उस स्थिति से है जिसमें वायु तथा जल के तत्व मृदा में मौजूद रहकर पौधे की वृद्धि में सहायक होते हैं।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की आवश्यकता

- पिछले कई वर्षो से रासायनिक कृषि के फलस्वरूप मृदा की उर्वरता में व्यापक कमी आई है। मरूस्थलीकरण की दर बढ़ गई है। इसे रोकने के लिए जीरो बजट प्राकृतिक कृषि आवश्यक है।
- वर्तमान में कृषि "निरंतर घटते हुए लाभ "की समस्या से ग्रस्त है। रासायनिक कृषि में कीटनाशक, उर्वरको के प्रयोग , सिंचाई सहित कई कार्यों में धन लगता है जो कृषि के लागत को बढ़ावा देता है तथा लाभ में कमी आ जाती है। जीरो बजट प्राकृतिक कृषि इस समस्या को हल कर सकती है।
- सिचाई के कारण भूमिगत जल के दोहन के फलस्वरूप जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। जीरो बजट प्राकृतिक कृषि भूमिगत जल के दोहन को कम करेगी।
- रासायनिक खेती से प्रकृति में और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है। इस समस्या को प्राकृतिक कृषि के द्वारा रोका जा सकता है।
- रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते है। जो मानव के भोजन के साथ -साथ चारा खाने वाले पशुओ को भी प्रभावित कर रहा है।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के लाभ

- जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में रासायनिक कीटनाशकों तथा रासायनिक उर्वरको की आवश्यकता नहीं होती। जो कृषि के लागत को कम करती है। वर्तमान में जैविक खाद्य पदार्थो की मांग बढ़ रही है जो प्राकृतिक कृषि करने वाले किसानो को लाभ प्रदान करेगी।
- यह पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करता है। भूमि के जलस्तर में वृद्धि मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- यह विधि मृदा संरक्षण के लिए भी उपयुक्त है। जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।इसके साथ ही इस विधि के प्रयोग से भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- वर्तमान में वैश्विक स्तर पर आर्थिक वृद्धि

तथा पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन बनाने पर चर्चा हो रही है। जीरो बजट प्राकृतिक कृषि इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

- भारत सरकार रासायनिक उर्वरकों पर बड़ी मात्रा में सब्सिडी देता है। केंद्र सरकार ने बजट 2022-23 में यूरिया की सब्सिडी के लिए 63,222.32 करोड़ रुपए और पोषक तत्व आधारित सब्सिडी के लिए 42,000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। शून्य बजट प्राकृतिक कृषि से इस सब्सिडी में भारी गिरावट आ सकती है जो राजकोषीय सुदृढ़ीकरण को मजबूत कर सकती है।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि से सम्बद्ध मुद्दे

- सिक्किम में जैविक कृषि के आरम्भ के कुछ समय के उपरान्त जैविक कृषि के उत्प. ाद में गिरावट आई है। इसके साथ ही साथ जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में उपज लाभ की गिरावट को देखते हुए कुछ वर्षों बाद कई किसान पारंपरिक खेती की ओर लौट गए हैं।
- यह पूर्ण रूप से पूरी तरह से शून्य लागत कृषि नहीं है। इसमें कई तरह की लागतें शामिल होती हैं, जैसे- गायों के रखरखाव, सिंचाई हेतु बिजली और पम्पों की लागत, श्रम आदि।
- प्राकृतिक खेती के अंतर्गत मात्र 23.02 मिलियन हेक्टेयर भूमि है जो भारत में कुल कृषि योग्य भूमि (181.95 मिलियन हेक. टेयर) की मात्र 1.27 प्रतिशत है।
- रासायनिक उर्वरकों के लिये प्रदत्त केंद्रीय सब्सिडी भारत के बड़े आर्थिक बोझो में से एक रही है परन्तु जैविक क्षेत्र को मात्र 500 करोड़ रुपए की सब्सिडी प्राप्त होती है।
- कृषि की उत्पादकता तथा कृषक आय में वृद्धि के सन्दर्भ में जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की भूमिका अभी भी अस्पष्ट है।
- 'नेचर सस्टेनेबिलिटी' जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि जबकि प्राकृतिक आदानों का पोषक मूल्य लो-इनपुट वाले खेतों (कम मात्रा में उर्वरकों और की. टनाशकों का उपयोग करने वाले खेतों) में प्रभावी है परन्तु हाई-इनपुट वाले खेतों में इसकी प्रभावशीलता कम है।
- किसानो में जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में प्रयुक्त होने वाले पदार्थो का निर्माण करने की विशेषग्यता तथा धैर्य की कमी होती है।
- प्राकृतिक कृषि में उत्पादकता कम होगी। यह देश की बढ़ती जनसंख्या के खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है।
- इसके साथ ही साथ ग्राउंड लेवल पर सरकार की निष्क्रियता ने भी प्राकृतिक कृषि को प्रभावित किया है।

भारत में प्राकृतिक कृषि की स्थिति

- सिक्किम भारत का प्रथम जैविक कृषि वाला राज्य है।
- आंध्र प्रदेश सरकार ने वर्ष 2024 तक जीरो बजट प्राकृतिक खेती को हर गांवों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है।
- हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी जीरो बजट प्राकृतिक खेती को अपने राज्य में बढ़ावा देने के एक परियोजना शुरू कर दी।
- 2015 में शुरू की गई परम्परागत कृषि विकास योजना ने पिछले चार वर्षों में 7 लाख हेक्टेयर भूमि और 8 लाख किसानों को कवर किया है। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और केरल ने बड़े पैमाने पर प्राकृतिक खेती को अपनाया है।
- अगले पांच वर्षो में भारत सरक. ार का लक्ष्य प्राकृतिक खेती सहित जै. विक खेती के किसी भी रूप में 20 लाख हेक्टेयर भूमि तक पहुंच स्थापित करना है.

निष्कर्ष

भोजन के अधिकार पर आधारित संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट, 2017 में कहा गया था कि कृषि-पारिस्थितिकी विश्व की संपूर्ण आबादी को भोजन उपलब्ध कराने और उसका उपयुक्त पोषण सुनिश्चित करने के लिये पर्याप्त उपज देने में सक्षम है। न सिर्फ भारत के स्तर पर बल्कि वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा व्याप्त है। इसके साथ ही ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ गांव प्राकृतिक खेती की ओर आगे बढ़ते हुए ग्रामीण जीवन में रूपांतरण ला रहे हैं तथा शहरों में भी प्राकृतिक खेती के सफल प्रयोग हो रहे हैं। यह सत्य है कि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये लोगों को प्रोत्सा. हित कर रही है किंतु यह प्रोत्साहन प्रचार और जागरूकता के साथ-साथ सब्सिडी और आर्थिक स्तर पर भी होना चाहिये। सर. कारी सहायता की पर्याप्तता के उपरान्त भी प्राकृतिक कृषि की इन उपलब्धियों को देखते हुए कल्पना की जा सकती है कि यदि इसमें राज्य का सहयोग प्राप्त हो तो यह आर्थिक विकास तथा पर्यावरणीय संतुलन स्थापित करने में महत्पूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संक्षिप्त मुद्दे

राष्ट्रीय

1 'सागर परिक्रमा' कार्यक्रम

महासागर दुनिया के सबसे बड़े ऐसे इको. सिस्टम हैं, जो पृथ्वी के लगभग तीन-चौथाई हिस्से को कवर करते हैं। इतना ही नहीं ये आजीविका, जलवायु परिवर्तन, वाणिज्य एवं सुरक्षा जैसे उभरते हुए जटिल एवं परस्पर जुड़े विकास के मुद्दों के नजरिए से भी काफी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे में इनकी उपेक्षा करना किसी भी अर्थव्यवस्था के लिहाज से अच्छा नहीं कहा जा सकता। इसीलिए हाल ही में भारत सरकार ने एक 'सागर परिक्रमा' नामक कार्यक्रम की शुरुआत की।

भारत के तटीय राज्यों की अर्थव्यवस्था, सु. रक्षा और आजीविका के लिए महासागर बेहद ही महत्वपूर्ण हैं। देश में 8118 किलोमीटर लंबी तटीयरेखा है, जोकि तटवर्ती 9 राज्यों और 4 केंद्र-शासित प्रदेशों से होकर गुजरती है। साथ ही, ये लाखों तटीय मछुआरों को आजीविका प्रदान करती है। इसी महत्व को देखते हुए बीते 5 मार्च को केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री पुरुषोत्तम रूपाला ने एक 'सागर परिक्रमा' कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन मत्स्य पालन विभाग, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, भारतीय तटरक्षक बल, भारतीय मत्स्य सर्वेक्षण, गुजरात समुद्री बोर्ड और मछुआरों के प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

ये कार्यक्रम 'आजादी का अमृत महोत्सव' के एक भाग के रूप में शुरू किया गया है। इसके तहत एक पूर्व-निर्धारित समुद्री मार्ग की नेविगेशनल यात्रा की जाएगी जो सभी तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से होकर गुजरेगी। इसका उद्देश्य सभी मछुआरों, मछली किसानों और अन्य हितधारकों के साथ एकता का भाव दर्शाना है। साथ ही, तटीय मछुआरों की समस्याओं को जानने के लिए मछुआरों एवं मात्स्यिकी से जुड़े समुदायों और हितधारकों के साथ संवाद करने के उद्देश्य से इस यात्रा को आयोजित किया जा रहा है। 'सागर परिक्रमा' की यह यात्रा देश की खाद्य सुरक्षा, तटीय मछुआरा समुदायों की आजीविका और समुद्री इको. सिस्टम की सुरक्षा के लिए समुद्री मत्स्य संसाधनों के उपयोग में स्थायी संतुलन पर केंद्रित होगी। बता दें कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' भारत सरकार की आजादी के 75वें साल और अपने लोगों, संस्कृति एवं उपल. ब्धियों के गौरवशाली इतिहास को रेखांकित करने और उसका उत्सव मनाने से जुड़ी एक महत्वपूर्ण पहल है।

'सागर परिक्रमा' यात्रा की शुरुआत गुजरात के मांडवी स्थित श्यामजी कृष्ण वर्मा स्मारक से की गई। इस परिक्रमा को चरणबद्ध रूप से गुजरात के अन्य जिलों और देश के अन्य राज्यों/केन्द्र-शासित प्रदेशों में आयोजित किया जाएगा। परिक्रमा में राज्य के मत्स्य अधि कारी, मछुआरों के विभिन्न प्रतिनिधि, मत्. स्यपालन से जुड़े किसान, उद्यमी, हितधारक, पेशेवर, अधिकारी और देश भर के वैज्ञानिक शामिल होंगे। कार्यक्रम के तहत समुद्री पा. रिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के लिए तमाम उपायों को अपनाने के लिए प्रयास किया जाएगा। इसमें मछली किसानों, प्रगतिशील मछुआरों और युवा मत्स्य उद्यमियों को पीएम मत्स्य संपदा योजना से संबंधित प्रमाण पत्र भी प्रदान किए जाएंगे।

2 जीएनसीटीडी संशोधन

चर्चा में क्यों?

- सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (संशोधन) अधिनियम, 2021, (जीएनसीटीडी) की संवैधानिक वैध ता को चुनौती देते हुए एक नोटिस जारी किया, जिसने निर्वाचित सरकार पर दिल्ली के उपराज्यपाल की शक्तियों में वृद्धि की है।
- फरवरी 2019 में, सुप्रीम कोर्ट की दो न्यायाधीशों की पीठ ने सेवाओं पर जीएनस. ीटीडी और केंद्र सरकार की शक्तियों के सवाल पर एक विभाजित फैसला सुनाया था और मामले को 3 न्यायाधीशों की पीठ को भेज दिया था।
- यह अधिनियम दिल्ली के उपराज्यपाल को षदिल्ली सरकारष घोषित करके व्यापक शक्तियां प्रदान करता है।
- इस अधिनियम पर इसलिए भी सवाल उठाया गया क्योंकि इसमें प्रावधान है कि दिल्ली सरकार की मंत्रिपरिषद के निर्णयों पर कोई कार्यकारी कार्रवाई करने से पहले एलजी द्वारा विनिर्दिष्ट ऐसे सभी मामलों पर एलजी की राय "प्राप्त" की जाएगी, जो एलजी द्वारा निर्दिष्ट किए जा सकते हैं।

जीएनसीटीडी अधिनियम का इतिहास :-

- राष्ट्रीय राजधानी में विधानसभा और मंत्रिपरिषद से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के पूरक के लिए 1992 में जीएनसीटीडी अधिनियम अधिनियमित किया गया था। अधि नियम कुछ महत्वपूर्ण प्रावधानों को रेखांकित करता है जैसे :-
- विधानसभा की शक्तियां।
- एल-जी द्वारा प्राप्त विवेकाधीन शक्तियां।

• एल-जी को सूचना देने की आवश्यकता के संबंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य।

जीएनसीटीडी संशोधन अधिनियम 2021 के प्रमुख प्रावधान:-

ख उपराज्यपाल के पक्ष में अधिक:- यह अधिनियम दिल्ली सरकार के लिए कोई भी कार्यकारी कार्रवाई करने से पहले उप. राज्यपाल की राय प्राप्त करना आवश्यक बनाता है और यह निर्वाचित सरकार को किसी भी कैबिनेट निर्णय पर कोई भी का. र्रवाई करने से पहले एल-जी की सलाह लेने के लिए मजबूर करता है।

ख अधिनियम के उद्देश्य और कारण:- केंद्र सरकार का दावा है कि संशोधन अधिनियम सुप्रीम कोर्ट की व्याख्या को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है और यह संवैधानिक योजना के अनुरूप निर्वाचित सरकार और उपराज्यपाल की जिम्मेदारियों को परिभाषित करता है।

ख सरकार का अर्थ:- अपने प्रस्तावित संशोधनों में अधिनियम में उल्लेख किया गया है कि विधानसभा द्वारा बनाए गए किसी भी कानून में ष्सरकारष शब्द का अर्थ "एल-जी" होगा। यह ष्सरकार का अर्थ है राष्ट्रीय राजध ानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल को अनुच्छेद 239 के तहत राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया गया है और संविधान के अनुच्छेद 239 एए के तहत इस तरह के रूप में नामित किया गया हैष को प्रभावी बनाता है।

ख नियम बनाना:- यह मूल जीएनसीटीडी अधिनियम, 1991 में एक प्रावधान जोड़ना चाहता है, जो विधानसभा या इसकी समि. तियों को दिन-प्रतिदिन के प्रशासन से सं. बंधित मामलों के विषय में नियम बनाने या प्रशासनिक निर्णयों के संबंध में पूछताछ करने के लिए नियम बनाने से रोकता है।

3 भारत की डेटा एक्सेसिबिलिटी तथा उपयोग नीति

हाल ही में केंद्र सरकार ने मसौदा डेटा नीति, 'इंडिया डेटा एक्सेसिबिलिटी एंड यूज पॉलिसी' पर जनता की राय जानने के लिए पब्लिक फोरम पर प्रस्तुत किया है।

मुख्य विन्दु :-

• हाल ही में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) द्वारा एक मसौदा नीति लाया गया है जो सरकार से सरकार (G2G) डाटा साझाकरण के सन्दर्भ में रूपरेखा निर्धारित करता है। इस मसौदे में सरकारी विभागों तथा संगठनों द्वारा आपस में डाटा साझा करने से सम्बंधित प्रावधान हैं। इसमें सरकारी विभागों के डाटा को "ओपन एंड शेयरबल बाई डिफॉल्ट" किया जाएगा।

• स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह मसौदा ट्रैफिक डेटा जैसे गैर-व्यक्तिगत डेटा को जेनरेट करने के सन्दर्भ में है जिसे एआई एल्गोरिदम बनाने के लिए छिपाया (गुमनाम किया) जा सकता है। इस ट्रैफिक डाटा के एआई एल्गोरिदम का प्रयोग गूगल या उबर जैसी कम्पनियाँ ग्राहकों की स्थिति को जानने के लिए करती हैं।

• यह मसौदा सरकार द्वारा सीधे या मंत्र. ालयों, विभागों और अधिकृत एजेंसियों के माध्यम से सृजित तथा एकत्रित किए गए सभी डेटा और सूचनाओं पर लागू होगा।

• मसौदा नीति की 'प्रस्तावना' में कहा गया है कि भारत की 5 ट्रिलियन डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था बनने की महत्वाकांक्षा का लक्ष्य डेटा के मूल्य का दोहन करने की उसकी क्षमता पर निर्भर करती है।

• इस लक्ष्य को 2018-19 के आर्थिक सर्वेक्षण से समझा जा सकता है। जिसमें राजस्व सृजन के लिए नागरिक डेटा को सार्वजनिक वस्तु में बदलने के लिए एक संपूर्ण अध्याय सम्मिलित था।

• सर्वेक्षण में कहा गया था कि चूंकि इस तरह का जो भी डेटा जनरेट होता है वह लोगों से सम्बंधित होता है अतः इसका प्रयोग भी लोगों के लिए किया जाना चाहिए।

• सर्वेक्षण में यह भी कहा गया था कि निजी क्षेत्र को व्यावसायिक उपयोग के लिए "चुनिंदा डेटाबेस" तक पहुंच प्रदान की जा सकती है।

• मसौदा नीति में अनुसंधान एवं विकास और नवाचार के उद्देश्य के लिए कुछ डेटा उपलब्ध कराने का भी प्रस्ताव है।

• इस मसौदे में प्रयुक्त लाइसेंसिंग मॉडल के अनुसार प्रतिबंधित एक्सेस डेटा शेयरिंग के लिए नवाचार और अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए न्यूनतम संसाधित डेटा निःशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।

• डेटा सेट का मूल्य निर्धारण मालिक/ सरकारी विभाग या एजेंसी द्वारा तय किया जाएगा तथा इसके अधिसूचना में पारदर्शिता प्रक्रिया का पालन होना चाहिए।

महत्व :-

• 'इंडिया डेटा एक्सेसिबिलिटी एंड यूज पॉलिसी' पर सरकार का मसौदा एक बेहतर और अधिक व्यापक शासन के लिए अधिक प्रभावी डेटा-आधारित शासन प्रतिमानों को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लिया गया एक कदम है।

• एमईआईटीवाई के अनुसार, नीति का उद्देश्य बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के डेटा का उपयोग करने की भारत की क्षमता को "मौलिक रूप से बदलना" है।

• देश के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एल्गोरिदम बनाने के लिए, सरकारी डेटा तक पहुंच अत्यंत आवश्यक है। भारत डेटा के बिना एआई हब नहीं बन सकता।

• इसके साथ ही गोपनीयता पर भी ध्यान रखना होगा, किसी भी व्यक्ति की निजता से समझौता नहीं किया जा सकता है।

• मसौदा शिक्षा, उद्योग और सरकार सहित विभिन्न हितधारकों के परामर्श से विकसित किया गया है तथा वर्तमान में इसे सार्वजनिक परामर्श के लिए रखा गया है।

1 वैश्विक प्रतिबंधों के जाल से बचना

चर्चा में क्यों:

वर्तमान में, वैश्विक प्रभुत्व और आधिपत्य में परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन सैन्य उपस्थिति से बल प्रदर्शन से लेकर वित्तीय प्रतिबंधों तक जारी है। हाल ही में युक्रेन में रूस की सैन्य उपस्थिति और रूस पर अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिबंधों के रूप में दिखाई दे रहा है।

अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ ने यूक्रेन में युद्ध के जवाब में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उनके विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव की संपत्ति को फ्रीज करने के लिए प्रतिबंधों को अपनाया है। वे रूसी केंद्रीय बैंक पर प्रतिबंध लगाने और अन्य आर्थिक प्रतिबंधों के अलावा स्विफ्ट वैश्विक भुगतान प्रणाली से देश के कुछ उधारदाताओं को हटाने की भी योजना बना रहे हैं। जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण कोरिया सहित अन्य सहयोगियों ने भी प्रतिबंधों को समर्थन दिया है।

सैन्य टकराव की ओर ले जाने वाली आर्थिक प्रतिद्वंद्विता:

- नियमबद्ध वैश्वीकरण के माध्यम से सभी देश, निवेश और व्यापार के कई नेटवर्कों द्वारा एक साथ बंधे हुए है। यह व्यक्तिगत अर्थव्यवस्थाओं के प्रबंधन को समझने के प्रति एक कदम है।
- यह देशों और निगमों के बीच व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता वाली वैश्विक अर्थव्यवस्था है, जो लगातार गठबंधनों को स्थानांतरित कर रही है और आकस्मिक घटनाओं ने इसके संरचनात्मक निश्चितताओं को पीछे छोड़ दिया है।
- यह अलग-अलग देशों के बीच गहरी प्रतिद्वंद्विता को दर्शाता है, जो सैन्य टकराव में बदलने के साथ साथ उनके विवाद के विषयों (चीन के लिए उइगर और ताइवान; प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की उपस्थिति; रूस के लिए यूक्रेन, उत्तरार्द्ध पहले से ही सैन्यीकृत) को और अधिक बढ़ा देता है।

प्रतिबंध कैसे काम करते हैं:

- ये प्रतिबंध सरकार द्वारा डिजाइन किए जाते हैं और लाभ और गैर-लाभकारी निजी उद्यमों, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों (संयुक्त राष्ट्र सहित) दोनों द्वारा लागू किए जाते हैं।
- वैश्वीकरण के कारण, हर देश और निगम, निवेश और व्यापार के कई नेटवर्कों द्वारा एक साथ बंधे हुए हैं।
- लाभार्थी कौन हैं? विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्यों को साकार करने के लिए आर्थिक उपकरणों का उपयोग करने की अमेरिकी नीति निजी क्षेत्र को प्राथमिकता देती है।

अफगानिस्तान पर अमेरिका के प्रतिबंधों की केस स्टडी:

- अफगानिस्तान में, वित्तीय जोड़तोड़ के परिणामस्वरूप प्रतिबंधों के रूप में व्यापारिक गतिविधियों और निवेश उद्यमों को व्यापारिक गतिविधियों और निवेश उपक्रमों को लाइसेंसिंग की एक प्रणाली के माध्यम से यूएस ट्रेजरी की मंजूरी के अधीन किया जा सकता है।
- यह अमेरिका को यह बता सकता है कि कौन किसके साथ व्यापार करता है और क्या व्यापार करना है आदि।
- विदेशी मुद्रा भंडार की जब्ती: यह भी दूर से नियंत्रण लागू करने के एक तरीके के रूप में है। 15 अगस्त को अमेरिकी सैनिकों की वापसी के बाद, अमेरिका ने न्यूयॉर्क फेडरल बैंक में जमा 7 बिलियन डॉलर के अफगानिस्तानी विदेशी मुद्रा भंडार को फ्रीज कर दिया गया है।

प्रतिबंधों और उसके निहितार्थ:

- चीन के लिए अवसर: आर्थिक प्रतिबंध, चीन को तालिबान के साथ अपने नये संबंधों में आर्थिक अवसर प्रदान करता है। चीनी राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों और निजी निगमों को अफगानिस्तान के बुनियादी ढांचे में निवेश करने का अवसर देता है, इसे बेल्ट एंड रोड परियोजना से, और तांबे, कोबाल्ट, और लिथियम के अपने समृद्ध खनिज संसाधनों में जोड़ता है।
- भारत के लिए चिंताएं: चीन इसे अफगानिस्तान और पाकिस्तान में निवेश को एकजुट करने, भारत को अलग-थलग करने के अवसर के रूप में भी उपयोग कर सकता है।
- शक्ति विन्यास का पुनर्निर्माण: रूसी सैन्य द्वारा यूक्रेन, बेलारूस और कजाकिस्तान सहित पूर्व सोवियत क्षेत्रों पर नियंत्रण को फिर से स्थापित करने के लिए राजनीतिक वृद्धि, और पश्चिम के खिलाफ चीन और रूस के बीच सामंजस्य, मध्य यूरेशिया में चीन के लिए नई संभावनाए खोल सकता है।
- व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रतिबंधों का दुरुपयोग: तालिबान ने अमेरिका से अपने विदेशी मुद्रा भण्डार की डीफ्रीजिंग की मांग की है। यह अफगानिस्तान के लिए बहुत आवश्यक है क्योकि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, तालिबान की आधी से अधिक आबादी भुखमरी के खतरे में है। 11 फरवरी को चौंकाने वाली खबर आई कि बिडेन प्रशासन इस रोके गये धन को 9/11 पीड़ितों के लिए मुआवजे और अफगानों के लिए मानवीय सहायता के बीच विभाजित करेगा।
- लाभ की तुलना में अधिक नुकसान: तेल, गैस, पैलेडियम, गेहूं और उर्वरक के रूसी निर्यात में किसी भी व्यवधान का प्रभाव, (एक ऐसे समय में जब वे कीमतें कोविड -19 व्यवधानों के कारण मुद्रास्फीति

के दबाव से मुश्किल से उबर रही हैं) वैश्विक मुद्रास्फीति को भयंकर रूप से प्रभावित करेंगी।

- भविष्य में शांति की अनिश्चितता: रूस का समर्थन करके, बीजिंग व्यक्तिगत देशों के आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करने की अपनी स्थाई नीति को बदल रहा है, इस बारे में बहुत सारी अटकलें भी लगे जा रही है कि विभिन्न यूरेशियन क्षेत्रों में पुतिन का यह कदम चीन को ताइवान में एक मिसाल प्रदान कर सकता है।

2 फ्रीडम ऑफ द वर्ल्ड रिपोर्ट, 2022

चर्चा में क्यों?

फ्रीडम ऑफ द वर्ल्ड रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार, भारत, लगातार दूसरे वर्ष भी पूरी तरह से स्वतंत्र देशों की सूची में नही आ पाया है।

संदर्भ :-

- फ्रीडम हाउस की फ्रीडम इन द वर्ल्ड रिपोर्ट के अनुसार, भारत की स्थिति, लगातार दूसरे वर्ष भी पूरी तरह से स्वतंत्र देशों की सूची में सम्मिलित नही हो पाया है। इसे विभिन्न राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रताओं पर न्याय करने के बाद 66/100 का वैश्विक स्वतंत्रता स्कोर दिया गया है।
- इस साल, भारत को 100 में 66 अंक प्राप्त हुए हैं जोकि 2021 की तुलना में एक अंक कम ही है। जबकि 2020 तक की रिपोर्टों ने भारत को स्वतंत्र देशों की सूची में रखा था। 2017 के बाद से इसके स्कोर लगातार गिर रहे हैं।
- भारत का स्वतंत्रता स्कोर बोलीविया, हंगरी और अल्बानिया के समान है। जिन देशों ने सबसे खराब स्कोर किया है, उनमें दक्षिण सूडान, सीरिया, तिब्बत, तुर्कमेनिस्तान, इरिट्रिया और उत्तर कोरिया शामिल हैं। वर्तमान में 69 देशों को इस रिपोर्ट के अनुसार स्वतंत्र नहीं माना गया हैं।
- यह स्थिति को 1973 की तुलना में बदतर बनाता है जब केवल 63 देशों को स्वतंत्र नहीं माना गया था। सबसे खराब स्कोर करने वालों के अलावा, सूची में सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, तुर्की, थाईलैंड और कतर भी शामिल हैं। यह पिछले साल की तुलना में एक वृद्धि है, जहां केवल 54 देशों को स्वतंत्र नहीं माना गया था।

विश्व में स्वतंत्रता, २०२२ रिपोर्ट :-

- विश्व में स्वतंत्रता रिपोर्ट, राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रताओं पर आधारित एक वार्षिक वैश्विक रिपोर्ट है, जो प्रत्येक देश और क्षेत्रों के एक चुनिंदा समूह के लिए संख्यात्मक रेटिंग और वर्णनात्मक विवरणों द्वारा बनाया जाता है। 2022 के संस्करण में 1 जनवरी, 2021 से 31 दिसंबर, 2021 तक 195 देशों और 15 क्षेत्रों में होने वाले घटनाक्रमों को शामिल किया गया है।
- रिपोर्ट को अमेरिका स्थित गैर-लाभकारी संगठन फ्रीडम हाउस द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसे अमेरिकी सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है।
- इसमें चुनावी प्रक्रिया, राजनीतिक बहुलवाद, भागीदारी और सरकारी कामकाज जैसे राजनीतिक अधिकारों को संकेतक के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- अभिव्यक्ति और विश्वास की स्वतंत्रता, संघीय और संगठनात्मक अधिकारों, कानून के शासन और व्यक्तिगत स्वायत्तता और व्यक्तिगत अधिकारों से संबंधित नागरिक स्वतंत्रता संकेतको को भी इसमें शामिल किया जाता है।
- देशों को "स्वतन्त्र", "आंशिक रूप से स्वतन्त्र" या "स्वतन्त्र नहीं" के रूप में घोषित किया जाता है।

भारत के बारे में मुख्य बिंदु :-

भारत ने 2019 के बाद से राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता के सन्दर्भ में असफलता का सामना किया है फिर भी इसने विपक्षी लोगों की गिरफ्तारी और उनपर निगरानी रखने का मामला आदि के द्वारा कार्यप्रणाली को बदलने का कोई संकेत प्रदर्शित नहीं किया है।

लोगों और विपक्षी दलों पर निगरानी :-

- रिपोर्ट के अनुसार, भारत के कम स्कोर में योगदान देने वाले कुछ पॉइंटर्स में कुछ राजनेताओं और पत्रकारों के फोन में पेगासस से निगरानी करना, कार्यकर्ता स्टेन स्वामी की मौत, जिन्हें गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (UAPA) के तहत कैद किया गया था और लखीमपुर खीरी की घटनाएं हैं।

मीडिया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता :-

- इंटरनेट की स्वतंत्रता के बारे में, रिपोर्ट के अनुसार भारत ने केवल 49 अंक प्राप्त किये हैं जो युगांडा जैसे देश के समान स्कोर है। यहां भी स्कोर कम हुआ है। इसके कुछ कारण सरकारों द्वारा बढ़ते इंटरनेट शटडाउन, कम इंटरनेट यूजर्स और खराब बुनियादी ढांचा आदि हैं। रिपोर्ट के अनुसार स्थानीय अधिकारियों द्वारा आदेशित नेटवर्क शटडाउन की संख्या नाटकीय रूप से बढ़ी है।

संस्थानों में स्वतंत्रता की कमी :-

- रिपोर्ट में भारत के चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट जैसे विभिन्न संस्थानों की स्वतंत्रता पर सवाल उठाया गया है। राष्ट्रीय चुनावों के समय और चरणबद्ध होने के बारे में चुनाव आयोग के फैसले, और आदर्श आचार संहिता के चयनात्मक प्रवर्तन के आरोप, जो राजनेताओं के अभियान व्यवहार और तकनीकों को नियंत्रित करता है, ने सत्तारूढ़ भाजपा के प्रति पूर्वाग्रह को प्रदर्शित किया है।

पर्यावरण

1 वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2021

स्थायी, नम्य तथा समावेशी शहरो के विकास के लिए हरित आवरण तथा प्रकृति आधारित समाधान अत्यंत आवश्यक है। हाल ही में जारी एफएसआई रिपोर्ट 2021 में यह बताया गया है कि पिछले दशक की तुलना में देश के मेगासिटीज के वन आवरण में मामूली वृद्धि देखी गई है।

मुख्य विन्दु :-

- शहरीकरण विकास की एक अपरिहार्य प्रक्रिया है। इसमें बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास तथा रोजगार के अवसरों के साथ सामाजिक व आर्थिक लाभ उत्पन्न करने की क्षमता है।
- शहरो में विश्व की लगभग 50% जन. संख्या निवास करती है तथा शहर 80% जीडीपी का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ ही शहरीकरण में समाज सुधार की बेहतर क्षमता है।
- संयुक्त राष्ट्र विश्व शहरों की रिपोर्ट के अनुसार, शहरी क्षेत्रों की वर्तमान जनसंख्या 2050 तक 55% से बढ़कर 68% हो जाएगी।
- 2050 तक भारतीय शहरों में शहरी आबादी 31% (2011) से 60% के करीब पहुंचने का अनुमान है।
- 2030 तक, भारत में सात मेगासिटी होंगे जिनमें नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलुरु के अतिरिक्त अहमदाबाद तथा हैदराबाद सम्मिलित होंगे।

हरित स्थानों की आवश्यकता :-

- शहरों और कस्बों में हरित स्थान वि. भिन्न पारिस्थितिक तंत्र सेवाएं तथा सार्वज. निक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने के साथ साथ मनोवैज्ञानिक विश्राम, तनाव में कमी, शारी. रिक गतिविधियों और प्रदूषण, गर्मी की लहरों आदि जैसी जलवायु संबंधी अनिश्चितताओं को कम करने में भी उपयोगी होते हैं।
- शहरो के विकास में न सिर्फ व्यापक रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बनाता है बल्कि शहर ग्रीनहाउस गैस के लगभग 70% उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी हैं।
- शहरीकरण की लगातार बढ़ती गति आने वाले वर्षों में इस स्थिति को और खराब करने वाली है।
- टी. एंड्रेनी एटअल द्वारा 2017 में किये गए अध्ययन में यह कहा गया कि मेगा. सिटीज में वृक्षारोपण से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ लगभग 500 मिलियन डालर की बचत हो सकती है। इस राशि से शहरी वातावरण को स्वच्छ, किफायती तथा निव. ासयोग्य बनाया जा सकता है।
- स्थायी शहरी नीतियों के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उचित हरित आवरण के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय बैठकें, सम्मेलन और समझौते हुए हैं।
- 2016 में आवास और सतत शहरी विक. ास (आवास **III**) पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में अपनाए गए नए शहरी एजेंडा के तीन परस्पर जुड़े सिद्धांतों में से एक सिद्धांत पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने से है।
- शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ बनाने के लिए सतत विकास लक्ष्य 11 में हरित स्थान के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।
- स्थायी, लचीला और समावेशी शहरों के विकास के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हरित स्थान तथा अन्य प्रकृति-आधारित समाधान एक अनिवार्य घटक हैं।
- **WHO** ने शहरी निवासियों के घरों से 300 मीटर रैखिक दूरी या पांच मिनट की पैदल दूरी के भीतर सार्वजनिक हरे स्थानों तक पहुंच के अलावा प्रति व्यक्ति 9 वर्ग मीटर के हरित स्थान की अनुशंसा की है।
- इन दोनों मानदंडों के आधार पर पश्चिमी देशो के शहर सटीक हैं परन्तु भारतीय शहरों की स्थिति काफी अपर्याप्त है।
- एफएसआई रिपोर्ट 2021 के अनुसार सात मेगा शहरों में वन आवरण के दशकीय परिवर्तन के संदर्भ में पिछले 10 वर्षों में 68 वर्ग किलोमीटर की कुल वृद्धि देखी गई।
- हैदराबाद के अतिरिक्त सभी मेगा शहरों के हरित स्थानों में गिरावट हुई है। हैदराबाद एकमात्र ऐसा शहर है जिसमें प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र में 4.3 से 8.2 वर्ग मीटर की दशकीय वृद्धि देखी है। यह आंकड़ा 9 वर्ग मीटर के अनुशंसित हरित आवरण के साथ सामीप्य स्थापित करता है। कुछ अन्य शहरों में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र में सुधार के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

NOTES

2 दुनिया का सबसे बड़ा क्रेटर चीन में खोजा गया

हाल ही में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के वैज्ञानिकों ने उत्तर-पूर्व चीन में एक लाख साल के अंदर का दुनिया का सबसे बड़ा क्रेटर खोजा है। चीन में खोजा गया यह दूसरा इम्पैक्ट क्रेटर है।

क्रेटर किसी खगोलीय वस्तु पर एक गोल या लगभग गोल आकार के गड्ढे को कहते हैं जो किसी विस्फोटक ढंग से बना हो। यह ज्वालामुखी के फटने से बन सकता है; अंतरिक्ष से गिरे उल्कापिंड के प्रहार से बन सकता है; या फिर जमीन के अंदर किसी अन्य विस्फोट के जरिए भी इसका निर्माण हो सकता है। क्रेटर कई प्रकार के होते हैं जैसे

1. प्रहार क्रेटर, जो एक छोटी वस्तु का किसी बड़ी वस्तु से बहुत ऊंची रफ्तार से टकराने पर बन जाता है। उदाहरण के तौर पर एस्टेरॉयड या उल्कापिंड के टकराने से प्रहार क्रेटर का निर्माण होता है।
2. ज्वालामुखीय क्रेटर, जो ज्वालामुखीय वि. स्फोटों से बन जाता है।
3. धंसाव क्रेटर, जो जमीन के नीचे किसी विस्फोट जैसे कि परमाणु परीक्षण आदि से बनता है। इसमें जमीन नीचे की ओर धंस जाती है।
4. मार क्रेटर जो खौलते हुए लावा में पानी मिल जाने पर हुए विस्फोट से बन जाता है।
5. बिल क्रेटर, जो जमीन के नीचे खाली स्थान या गुफा के ऊपर की छत गिर जाने से बन जाता है।
6. विस्फोट क्रेटर, जो जमीन के नीचे हुए विस्फोट से मलबा बाहर की ओर फेंके जाने पर बन जाता है यानी इसमें जमीन नीचे की ओर नहीं धंसती।

चीन में जिस नए क्रेटर का पता चला है उसका नाम है यिलान क्रेटर। यह क्रेटर करीब 1 लाख साल के अंदर बना था। यह चीन के तटीय प्रांत लियाओनिंग के शिउयान काउंटी में है। करीब 1.85 किलोमीटर व्यास वाला यह क्रेटर जिंगआन पहाड़ के निचले हिस्से में बना है। रेडियोकार्बन डेटिंग से पता चला है कि इसका निर्माण करीब 46 हजार से 53 हजार साल के बीच हुआ है। यहां मौजूद चारकोल और अन्य जैविक पदार्थों की जांच से यह पता चला है। इस क्रेटर को लेकर जो भी अध्ययन किया गया है उसे 'मेटियोरिटिक्स एंड प्लेनेटरी' नाम के साइंस जर्नल में प्रकाशित किया गया है।

यिलान क्रेटर का दक्षिणी हिस्सा गायब है, जिसकी वजह से यह चांद के आकार का दिखता है। ऐसा लगता है कि यहां पर कुछ ऐसा हुआ होगा जिसने गड्ढे की दीवार को तोड़ दिया। विशेषज्ञों का मानना है कि चांद की तरह दिखने वाले इस क्रेटर का निर्माण किसी एस्टेरॉयड या उल्कापिंड के टकराने से बना है। अभी तक एक लाख साल के अंदर बने सबसे बड़े क्रेटर का रिकॉर्ड अमेरिका के एरिजोना स्थित मिटियोर क्रेटर के नाम था। यह 49 से 50 हजार साल के बीच बना था। इसका व्यास 1.2 किलोमीटर था। इसके अलावा चीन में जियुयान नाम का एक और क्रेटर है जो 1.8 किलोमीटर व्यास का है, लेकिन अभी इसकी उम्र का पता नहीं लगाया जा सका है।

पृथ्वी पर मौजूद अब तक लगभग 190 क्रेटर्स के बारे में पता लगाया जा चुका है, जिन्हें वैज्ञानिकों ने उम्र के आधार पर बांट रखा है।

दक्षिण अफ्रीका के फ्री स्टेट में मौजूद करीब 200 करोड़ साल पुराना 'व्रेडेफोर्ट क्रेटर' दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे पुराना क्रेटर है। इसका व्यास करीब 380 किलोमीटर का है। यूनेस्को ने इसे 2005 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया था।

NOTES

विज्ञान एवं तकनीक

1 वैक्यूम बम

रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है। दुनिया भर के तमाम देश रूसी राष्ट्रपति पुतिन से इस युद्ध को रोकने का आग्रह कर रहे हैं, लेकिन पुतिन पीछे हटने को तैयार नहीं है। बदले में यूक्रेन भी मोर्चे पर डटा हुआ है। इसी बीच यूक्रेन ने रूस पर प्रतिबं. धित क्लस्टर और वैक्यूम बम इस्तेमाल करने का आरोप लगाया है। यूक्रेनियन राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने दावा किया है कि व्लादिमीर पुतिन इन हथियारों का प्रयोग कर युद्ध अपराध कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि इन हमलों में कई आम नागरिकों की मौत हुई है।

वैक्यूम बम उच्च शक्ति वाला एक बेहद ही विस्फोटक हथियार है, जो वातावरण का इस्तेमाल कर अपनी मारक क्षमता को कई गुना बढ़ा लेने में सक्षम होता है। वैक्यूम बम को थर्मोबैरिक हथियार भी कहा जाता है। यह अब तक विकसित सबसे शक्तिशाली गैर-परमाणु हथियारों में से एक है। इसी कारण इस हथियार को जिनेवा सम्मेलन के तहत प्रतिबंधित कर दिया गया है। इस बम को फादर ऑफ ऑल बम भी कहा जाता है। इससे परमाणु बम की तरह गर्मी पैदा होती है और यह धमाके के साथ अल्टासोनिक शॉकवेब निकालता है जो और अधिक तबाही लाता है।

वैक्यूम बम तापमान को काफी ज्यादा मात्रा में बढ़ाने के लिए अपने आसपास के ऑक्स. ीजन को सोख लेता है। इस तरह ऑक्सीजन सोख लेने के कारण ये बम पारंपरिक हथिया. रों के मुकाबले ज्यादा तबाही मचाता है। ये हथियार पहले तो हवा में एक खास किस्म का स्प्रे छोड़ता हैं, जिनमें धातु, ज्वलनशील धूल या केमिकल ड्रॉप के बहुत बारीक कण होते हैं। ये स्प्रे वातावरण में चारों ओर फैल जाते है। खासकर शहरी इलाकों और दुश्मनों के बंकर के अंदर तक आसानी से घुस जाते हैं। उसके बाद बम में लगा इग्निशन सोर्स आग को पैदा करता है, जो बहुत तेजी से पूरे इलाके में फैलकर एक जबरदस्त और खतरनाक वैक्यूम बनाता है। इस तरह हुए विस्फोट की ताकत इतनी ज्यादा होती है कि घरों की छतें तक उड़ जाती हैं। बंकर बर्बाद हो जाते हैं और उसमें मौजूद लोगों के शरीर के परखच्चे उड़ जाते हैं। जो इंसान बम के नजदीक मौजूद होता है वह तो तुरंत भाप में बदल जाता है। दूर के लोगों पर भी इसका इतना प्रभाव पड़ता है कि उनके शरीर के आंतरिक अंगों से खून बहने लगता है।

थर्मोबैरिक हथियारों को 1960 के दशक में अमेरिका और सोवियत संघ दोनों ने विकसित किया था। अमेरिका और रूस दोनों ही देशों ने इस तरह के बमों के कई वर्जन बनाए हैं, लेकिन अंतराष्ट्रीय प्रतिबंधों के कारण उन्होंने इसे न तो किसी दूसरे देश को बेचा है और न ही सार्वजनिक तौर पर कहीं इस्तेमाल किया है। सितंबर 2007 में रूस ने अब तक के सबसे बड़े थर्मोबैरिक हथियार में विस्फोट किया, जिससे 39.9 टन के बराबर ऊर्जा निकली थी। वहीँ अमेरिका के थर्मोबैरिक हथियारों के प्रत्येक यूनिट की कीमत तक. रीबन 16 मिलियन डॉलर से भी ज्यादा है।

आर्थिक

1 माइक्रोफाइनेंस तथा गरीबी उन्मूलन

चर्चा में क्यों?

माइक्रोफाइनेंस कम्पनियों के आलोचकों ने कहा है कि माइक्रो लोन (लघु ऋण) के बारे में यह भ्रम है कि यह लोगों के जीवन को परिवर्तित करने में सहायक हैं, परन्तु जमीनी स्तर पर यह यथार्थ से परे है।

प्रमुख बिंदु :-

- विभिन्न अध्ययनों ने यह निष्कर्ष दिया है कि यद्यपि सूक्ष्म ऋण के बढ़ने से लोगों कि असंगठित वित्तपोषण पर निर्भरता कम हुई है परन्तु यह निर्भरता पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो पाई है क्योंकि सूक्ष्म ऋण मांग के आंशिक भाग को ही पूर्ण करने में सक्षम हैं।

– लोगों को अभी भी स्वास्थ्य समस्याओं और अन्य आपातकालीन जरूरतों के सा. थ-साथ बच्चों की शिक्षा के लिए असंगठित ऋण की तरफ जाना होता है।

– माइक्रोफाइनेंस संस्थान (एमएफआई), विशेष रूप से एनबीएफसी-एमएफआई और बैंक, उन्हें केवल उत्पादक उद्देश्यों के लिए ऋण दे सकते हैं।

- इसके अतिरिक्त, एक बड़ा एमएफआई (सूक्ष्म वित्त संसथान) पिछले दो वर्षों से निवेशकों से धन प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। यह उद्योग के प्रति उनके दृष्टिकोण में बदलाव का प्रमाण है।
- ध्यातव्य है कि बांग्लादेश में एमएफआई लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में बेहतर काम कर रहे हैं और इंडोनेशिया में इनमें किये गए निवेश पर उच्च रिटर्न प्राप्त हो रहा है।

सूक्ष्म वित्त संस्थानों की भूमिका :-

माइक्रोफाइनेंस उद्योग का एक स्व-नियामक संगठन (एसआरओ) माइक्रोफाइनेंस इंस्टी. ट्यूशंस नेटवर्क (एमएफआईएन), ने दावा किया है कि माइक्रोफाइनेंस ने पिछले एक दशक में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए ऋण और बीमा सेवाओं और सूक्ष्म उद्यम के माध्यम से रोजगार तक पहुंच प्रदान करके बहुत बड़ा योगदान दिया है।

- मार्च 2012 और दिसंबर 2021 के बीच, उद्योग का सकल ऋण पोर्टफोलियो 17,264 करोड़ रुपए से बढ़कर 2.51 ट्रिलियन रुपए हो गया, जबकि ऋण प्राप्त करने वालो की संख्या 200 मिलियन से बढ़कर 570 मि. लियन हो गई।
- इस संस्था ने यह दावा किया है कि पि. छले 1 दशक में उद्योग द्वारा नियोजित लोगों की संख्या 69,000 से बढ़कर कम से कम 400,000 हो गई है।
- नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इको. नॉमिक रिसर्च की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए, एमएफआईएन ने कहा कि 2018-19 के दौरान, माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 12.8 मिलियन रोजगार को जन्म देने में सफल हुआ है।
- इसके अतिरिक्त लगभग 120 मिलियन लोगों को ऋण के साथ साथ जीवन बीमा भी प्राप्त हुआ है। साथ ही लगभग 98% माइक्रोफाइनेंस ग्राहक महिलाएं हैं।
- 90% ऋण सीधे बैंक खातों के माध्यम से वितरित किए जा रहे हैं तथा ऋण का संग्रह भी डिजिटल माध्यम से किया जा रहा है।
- कैशलेस ऋण संवितरण उधारकर्ताओं के मध्य बचत की प्रवृत्ति को जन्म दे रहा है।
- उद्योग के एक अन्य एसआरओ "सा-धन" के अनुसार मार्च 2010 से एमएफआ. ई शाखाओं की संख्या लगभग 11,459 से बढ़कर 20,065 हो गई है जबकि एमएफआई की संख्या 264 से गिरकर 208 हो गई है। हालांकि इस बीच औसत ऋण आकार 9,766 रुपए से बढ़कर 35,106 रुपए हो गया है।

उठाए गए कदम :-

- जून 2021 में, केंद्रीय बैंक ने सूक्ष्म वित्त विनियमों पर एक परामर्शी दस्तावेज जारी किया, जिसमें आमूल-चूल परिवर्तन का प्रस्ताव किया गया था।
- यह योजना एक उधारकर्ता को के ऋण-आय अनुपात की एक निश्चित सीमा के ऊपर ऋण देने से प्रतिबंधित करती है।
- यह घरेलू आय के 50% पर एक उधार. कर्ता द्वारा सभी बकाया ऋणों के लिए ब्याज और मूलधन के भुगतान को सीमित करती है।
- हालांकि आरबीआई ने यह नहीं बताया है कि माइक्रो बॉरोअर टैग पाने के लिए अधि कतम घरेलू आय क्या होगी।
- वर्तमान में, ऋण की अधिकतम सीमा 1.25 लाख रुपए है (यह पहले चक्र में 75,000 रुपए से अधिक नहीं हो सकती)। विषेशज्ञों के अनुसार इस धन को बढ़ाने की आवश्यकता है। क्योंकि साहूकारों से बचाने के लिए इन ऋण प्राप्तकर्ताओं को अधिक धन उपलब्ध कराना होगा।
- आरबीआई प्रचलित मानदंड (कि 50% ऋण आय सृजन के लिए होना चाहिए) को खत्म करने के पक्ष में है। आय-सृजन और उपभोग ऋण के अंतर को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। ऋणदाता शिक्षा, चिकित्सा व्यय, घरेलू संपत्ति, खपत और यहां तक कि साहूकारों से लिए गए उच्च लागत वाले ऋणों के पुनर्भुगतान के लिए ऋण दे सकते हैं।
- आरबीआई ऋण दरों की सीमा को समाप्त करना चाहता है तथा इसे बाजार नियंत्रित करने का विचार कर रहा है।

ये सभी स्वागत योग्य कदम हैं क्योंकि ये उद्योग में प्रतिस्पर्धा को तेज करेंगे तथा एमएफआई के विस्तार में सहायक होंगे।

2 व्यापार घाटे के साथ भारत का निर्यात बढ़ा

हाल ही में सरकार द्वारा जारी प्रारंभिक आंकड़ों के अनुसार इंजीनियरिंग वस्तुओं, पेट्रोलियम उत्पादों, रत्नों और आभूषणों और रसायनों के निर्यात में तेज वृद्धि ने फरवरी में भारत के कुल माल निर्यात को 21.88 प्रतिशत (ल-व-ल) बढ़ाकर $33.81 बिलियन कर दिया है।

भारत का निर्यात :-

- अप्रैल-फरवरी 2021-22 की अवधि में कुल माल निर्यात 374.05 अरब डॉलर रहा, पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 45.8 प्रतिशत की वृद्धि के साथ, निर्यातक वित्त वर्ष 22 के लिए वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा निर्धारित + 400 बिलियन के लक्ष्य को पूरा करने के करीब हैं।
- हालांकि, रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा संघर्ष, इंजीनियरिंग सामान जैसे क्षेत्रों के लिए एक बढ़ती चिंता का विषय है, जिसका रूस में बाजार है, जिसके कारण भुगतान पर अनिश्चितता के साथ-साथ माल की ढुलाई में भी वृद्धि हो जाएगी।
- फरवरी में गैर-पेट्रोलियम निर्यात का मूल्य $29.70 बिलियन था, जो एक साल पहले की अवधि की तुलना में 18.04 प्रतिशत की वृद्धि को दिखता है।

व्यापार घाटा बढ़ा :-

- वस्तुओं का आयात 34.99 प्रतिशत बढ़कर 55.01 अरब डॉलर हो गया है, जिससे व्यापार घाटा फरवरी 2021 में 13.12 अरब डॉलर से बढ़कर 21.19 अरब डॉलर हो गया है। आयात में वृद्धि का कारण पेट्रोलियम, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना, कोयला और रसायन जैसे क्षेत्रों को बताया गया है।
- अप्रैल 2021-फरवरी 2022 में आयात, 550.12 बिलियन डॉलर पर रहा, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में आयात की तुलना में 59.21 प्रतिशत अधिक है।
- 2020-21 की तुलनात्मक अवधि में 88.99 अरब डॉलर की तुलना में व्यापार घाटा लगभग दोगुना होकर 176.07 अरब डॉलर हो गया है।
- फरवरी 2021 में गैर-पेट्रोलियम आयात की तुलना में 26 प्रतिशत की वृद्धि के साथ गैर-पेट्रोलियम आयात का मूल्य $39.96 बिलियन पर आ गया।
- 2020-21 में निर्यात में गिरावट आई, जो 7 प्रतिशत घटकर 292 अरब डॉलर हो गया, जिसमें कोविड-19 व्यवधानों ने वैश्विक स्तर पर और देश के भीतर विनिर्माण को प्रभावित किया। हालांकि, वैश्विक मांग में सुधार के साथ, चालू वित्त वर्ष में निर्यात वृद्धि के ट्रैक पर रहा है।
- ए सकथिवेल, अध्यक्ष, एफआईईओ ने कहा कि वित्तीय वर्ष के दौरान, लगातार 11वीं बार मासिक निर्यात के 30 अरब डॉलर के निशान को पार करने के साथ, हम वित्तीय वर्ष के लिए + 400 बिलियन निर्यात लक्ष्य को पार करने के लिए तैयार हैं यह पिछले वर्ष के निर्यात की तुलना में 40 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि में तब्दील होगा।

वैश्विक स्थिति, एक चुनौती :-

- जबकि इंजीनियरिंग सामान क्षेत्र 2021-22 में $107 बिलियन के अपने निर्यात विक. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ट्रैक पर है, इसमें यूक्रेन पर रूसी आक्रमण एक चुनौती साबित हो रहा है। सीआईएस देशों में, रूस भारतीय इंजीनियरिंग सामानों के लिए सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। स्विफ्ट भुगतान प्रणाली से रूस के बहिष्करण, का मतलब निर्यातकों के लिए देरी से भुगतान वसूली की प्राप्ति होगी।
- चल रहे भू-राजनीतिक संकट ने पहले से ही प्रमुख वस्तुओं, विशेष रूप से कच्चे तेल और धातुओं की कीमतों को बढ़ा दिया है। षशिपिंग लागत, जो पहले से ही ऊचाई पर रही है, निर्यातकों को और अधिक नुकसान पहुंचाएगी। यदि संकट जारी रहता है, तो कहीं और भी स्पिलओवर प्रभाव हो सकता है, और इसका मतलब है कि व्यापार गहरे संकट में पड़ सकता है।

NOTES

1. भारत का यूपीआई प्लेटफॉर्म अपनाने वाला नेपाल पहला देश

भारत के एकीकृत भुगतान इंटरफेस को भुगतान प्लेटफॉर्म के रूप में अपनाने वाला नेपाल पहला देश बन गया है। इस उद्देश्य के लिए एनआईपीएल ने नेपाल में यूपीआई को फैलाने के लिए गेटवे पेमेंट्स सर्विस प्राइवेट लिमिटेड और मनम इंफोटेक प्राइवेट लिमिटेड के साथ एक समझौता किया है। गेटवे पेमेंट्स सर्विस प्राइवेट लिमिटेड नेपाल में अधिकृत पेमेंट सिस्टम ऑपरेटर है। गेटवे पेमेंट्स सर्विस प्राइवेट लिमिटेड नेपाल में यूपीआई को नेपाल राष्ट्र बैंक अधिकृत भुगतान प्रणाली ऑपरेटर के रूप में चलाएगा और प्रबंधित करेगा। इससे पहले एक आंकड़े के अनुसार 2021 में, यूपीआई ने 39 बिलियन वित्तीय लेनदेन को संभव बनाया था। यह राशि भारत के सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 31% के बराबर है। बता दें कि एनआईपीएल भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम की अंतर्राष्ट्रीय शाखा और पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है।

2. भारतीय शोधकर्ताओं द्वारा ग्रेटर मालदीव रिज के टेक्टोनिक विकास का पता लगाया गया

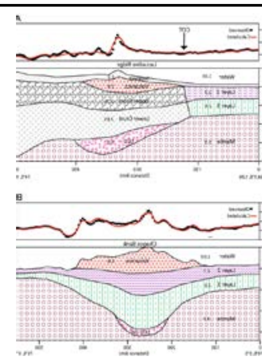

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जियोमैग्नेटिज्म के शोधकर्ताओं ने टेक्टोनिक और ग्रेटर मालदीव रिज (जीएमआर) की प्रकृति का पता लगाया है। बता दें कि पश्चिमी हिंद महासागर में स्थित ग्रेटर मालदीव रिज की उत्पत्ति विवाद का केंद्र रहा है। भारतीय शोधकर्ताओं का यह अध्ययन एक तरफ गोंडवानालैंड के टूटने को समझने में मदद कर सकता है। वहीं दूसरी तरफ इस अध्ययन से महासागरीय घाटियों के विकास को समझने में मदद मिलेगी। साथ ही अध्ययन के नतीजे हिंद महासागर के प्लेट-टेक्टोनिक के क्रमिक विकास को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेंगे। इस शोध में बताया गया है कि मोहो मालदीव रिज खंड के ऊपर गहरा है और डीप सी चौनल क्षेत्र में दक्षिण की ओर उथला है। शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि मालदीव रिज मध्य-सामुद्रिक रिज के आसपास बना होगा।

3. मिजोरम में पूर्वोत्तर भारत का पहला मोटरस्पोर्ट रेसिंग ट्रैक बनेगा

पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत का पहला मोटरस्पोर्ट्स रेसिंग ट्रैक मिजोरम में बनेगा। इस ट्रैक के निर्माण के उद्देश्य से ग्रामीण विद्युतीकरण निगम (आरईसी) और मिजोरम राज्य खेल परिषद के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। मिजोरम के लेंगपुई में विकसित किये जाने वाला यह रेसिंग ट्रैक 2 किमी लंबा और 6 मीटर चौड़ा होगा। केंद्र सरकार की स्वामित्व वाली ग्रामीण विद्युतीकरण निगम अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत मोटरस्पोर्ट्स रेसिंग ट्रैक का निर्माण करेगा। 1980 के दशक में बनाया गया मद्रास मोटर रेस ट्रैक भारत का पहला स्थायी रेसिंग सर्किट है। वहीं बौद्ध अंतर्राष्ट्रीय सर्किट उत्तर प्रदेश में स्थित एकमात्र रेसिंग सर्किट है जिसने पहले भारतीय ग्रांप्री की मेजबानी की थी।

4. 'समर्थ' अभियान

हाल ही में सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम मंत्रालय ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक श्समर्थश अभियान शुरू किया है। यह अभियान महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनाने में मदद करेगा। डैडम्‍ मंत्रालय के अनुसार, समर्थ अभियान के तहत मुफ्त कौशल विकास कार्यक्रमों में 20 प्रतिशत सीटें इच्छुक और मौजूदा महिला उद्यमियों के लिए आवंटित की जाएंगी। इससे सात हजार पांच सौ से अधिक महिलाएं लाभान्वित होंगी।

5. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की वार्षिक फ्रंटियर्स रिपोर्ट जारी

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ने अपनी वार्षिक फ्रंटियर्स रिपोर्ट में दावा किया है कि आने वाले वर्षों में जंगल की आग की घटनाओं में वृद्धि होगी। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि, हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन और मानवीय गतिविधियों के कारण जंगल की आग की घटनाओं में वृद्धि हुई है। वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता ने जंगल की आग के जोखिम कारक को बढ़ा दिया है। अपनी रिपोर्ट में यूएनईपी ने यह स्पष्ट रूप से कहा है कि वन क्षेत्रों की ओर शहरों के तेजी से विस्तार ने जंगल की आग की घटनाओं में वृद्धि की है। रिपोर्ट के अनुसार सवाना पारिस्थितिकी तंत्र में अब जंगल की आग आम बात हो गई है। जिसने सवाना पारिस्थितिकी तंत्र में एक चौथाई प्रजातियों को प्रभावित किया है। रिपोर्ट में इस आंकड़े पर पर्यावरणविदों का विशेष ध्यान गया है जिसमें बताया गया है कि 2002 से 2016 के बीच हर साल औसतन लगभग 423 मिलियन हेक्टेयर भूमि जली है। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में जंगल की आग से अफ्रीका सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र था।

6. दादासाहेब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल अवाड्र्स २०२२ प्रदान किये गए

मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में फिल्म पुष्पा: द राइज को दादासाहेब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल अवाड्र्स 2022 में फिल्म ऑफ द ईयर घोषित किया गया है। वहीं सर्व. श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार फिल्म 83 के लिए रणवीर सिंह को और सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार कृति सेनन को फिल्म मिमी के लिए दिया गया। सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार केन घोष को स्टेट ऑफ सीज: टेंपल अटैक के लिए दिया गया। शेरशाह को सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया है। मनोज बाजपेयी को वेब सीरीज फैमिली मैन 2 के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता वेब सीरीज का पुरस्कार प्रदान किया गया है। वहीं आरण्यक वेब सीरीज के लिए रवीना टंडन को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। **अन्य विजेताओं को निम्नलिखित सूची में दिया गया है :-**

श्रेणी	विजेता
सहायक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	कागज के लिए सतीश कौशिक
नकारात्मक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	अंतिम: द फाइनल ट्रुथ के लिए आयुष शर्मा
क्रिटिक्स सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	शेरशाह के लिए सिद्धार्थ मल्होत्रा
पीपुल्स च्वाइस सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	अभिमन्यु दसानी
बेस्ट डेब्यू तड़प के लिए	अहान शेट्टी
बेस्ट वेब सीरीज	कैंडी
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक पुरुष	विशाल मिश्रा
फिल्म उद्योग में उत्कृष्ट योगदान	आशा पारेख
सहायक भूमिका में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	बेल बॉटम के लिए लारा दत्ता
क्रिटिक्स सर्वश्रेष्ठ फिल्म	सरदार उधम
क्रिटिक्स सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	शेरशाह के लिए कियारा आडवाणी
पीपुल्स च्वाइस सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	राधिका मदन
बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म	अनदर राउंड
बेस्ट शॉर्ट फिल्म	पाउली
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका महिला	कनिका कपूर

7. भारत सरकार और विश्व बैंक ने रिवार्ड परियोजना के लिए समझौता किया

भारत सरकार (कर्नाटक और ओडिशा की राज्य सरकार सहित) और विश्व बैंक ने नवोन्मेषी विकास के माध्यम से कृषि को सहनीय बनाने के लिए जल-विभाजक क्षेत्र का कायाकल्प (रिवार्ड) परियोजना के कार्यान्वयन के लिए 115 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इस ऋण में कर्नाटक को 60 मिलियन डॉलर ओड़िसा को 49 मिलियन डॉलर और केंद्र को 6 मिलियन डॉलर मिलेंगे। यह ऋण विश्व बैंक के पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक **(IBRD)** द्वारा प्रदान किया जायेगा। यह समझौता किसानों को जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरुक बनने, उत्पादन बढ़ाने और अधिक धन कमाने में सक्षम बनाने के लिए बेहतर जल-विभाजक क्षेत्र प्रबंधन के तौर-तरीकों को अपनाने में सहायता करेगा।

8. अल्सियोनियस अब तक खोजी गई की सबसे बड़ी आकाशगंगा

नीदरलैंड के लीडेन यूनिवर्सिटी में स्थित लीडेन ऑब्जर्वेटरी के शोधकर्ताओं ने एक नई आकाशगंगा की खोज की है। यह अब तक खोजी गयी सभी आकाशगंगाओं में सबसे बड़ी है। इसका नाम अल्सियोनियस रखा गया है। अल्सियोनियस सूरज के आकार से 240 अरब गुना बड़ी है। अल्सियोनियस मिल्की वे आकाशगंगा से 160 गुना बड़ी है। यह 16.3 मिलियन प्रकाश-वर्ष में फैली हुई है। अल्सियोनियस की खोज से पहले, आईसी 1101 सबसे बड़ी आकाशगंगा थी। अल्सियोनियस के केंद्र में एक सुपरमैसिव ब्लैक होल भी है। अल्सियोनियस को यूरोप स्थित लो फ्रीक्वेंसी अरे (एलओएफएआर) और नासा के वाइड-फील्ड इन्फ्रारेड सर्वे एक्सप्लोरर उपग्रह ऑब्जर्वेटरी के डेटा के माध्यम से खोजा गया है।

9. बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक 2022 का समापन

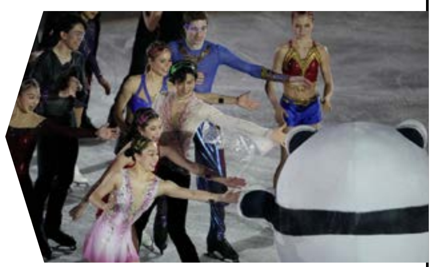

2022 के शीतकालीन ओलंपिक खेलों का समापन 20 फरवरी को बीजिंग के नेशनल स्टे. डियम में एक समारोह के साथ हुआ। इस बार के शीतकालीन ओलंपिक के पदक तालिका में 16 स्वर्ण, 8 रजत और 13 कांस्य के साथ नॉर्वे शीर्ष पर है। वहीं जर्मनी ने 9 स्वर्ण, 10 रजत और 5 कांस्य के साथ दूसरे स्थान पर और चीन 9 स्वर्ण, 4 रजत और 2 कांस्य के साथ तीसरा स्थान पर रहा। इस वर्ष भारत ने बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक 2022 में कोई पदक नहीं जीता है। बीजिंग 2022 शीतकालीन ओलंपिक के उद्घाटन समारोह में अल्पाइन स्कीयर आरिफ खान भारत के ध्वजवाहक थे। उन्होंने शीतकालीन खेलों में भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दर्ज किया।

10. 2021 में भारत के करोड़पति परिवारों में 11% की वृद्धि हुई है

हुरुन इंडिया वेल्थ रिपोर्ट 2021 में दावा किया गया है कि भारत के करोड़पति (यूएसडी) परिवारों में 11% की वृद्धि हुई है। वर्तमान में, भारत में 4.58 लाख परिवार करोड़पति हैं। इन परिवारों की कुल संपत्ति कम से कम 7 करोड़ रुपए है। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि अगले 5 वर्षों में करोड़पति परिवारों की संख्या में 30% की वृद्धि होगी और यह 2026 तक 6 लाख घरों तक पहुंच जाएगी। इन आंकड़ों से जुड़ा एक तथ्य यह भी है कि भारत कि रैंक हैप्पीनेस इंडेक्स में पिछले वर्ष की तुलना में गिरी है। देश में सबसे अधिक करोड़पति मुंबई में और इसके बाद दिल्ली और कोलकाता का स्थान है। यह रिपोर्ट भारतीय करोड़पति की ब्रांड वरीयताओं, उपभोग की आदतों और जीवन शैली के रुझानों पर भी प्रकाश डालती है।

समसामयिकी घटनाएं एक नजर में

- कन्नड़ साहित्यकार साहित्यकार डॉ चेन्नवीरा कानवी का निधन। उन्हें ष्समनवाद कविष् और ष्सौजन्यदा कविष् के नाम से जाना जाता था।
- पूर्व नौसेना उप प्रमुख जी अशोक कुमार को भारत का पहला राष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा समन्वयक नियुक्त किया गया।
- लद्दाख विंटर स्पोर्ट्स क्लब लेह में खारू टीम ने 15वीं सीईसी कप महिला आइस हॉकी चौंपियनशिप 2022 जीती।
- असम सरकार छात्रों के कौशल को सुधारने के लिए चार साल के मेंटरशिप कार्यक्रम श्प्रोजेक्ट आरोहणश शुरू करेगी।
- बिल गेट्स को पाकिस्तान द्वारा "हिलाल-ए-पाकिस्तान" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- चेतन घाटे आर्थिक विकास संस्थान (आईईजी) के नए निदेशक नियुक्त।
- नदियों में नाइट नेविगेशन मोबाइल ऐप लॉन्च करने वाला असम देश का पहला राज्य बना।
- गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी "शकुंतला चौधरी" (जिन्हें शकुंतला बाइदेव के नाम से भी जाना जाता था) का निधन हो गया।
- भारत, ओमान का जोधपुर में द्विपक्षीय वायु सेना अभ्यास श्ईस्टर्न ब्रिज-टप्श समाप्त।
- एसोसिएटेड चौंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, कोलकाता ने एक आयोजन में कोल इंडिया लिमिटेड को भारत की सबसे भरोसेमंद सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी का पुरस्कार प्रदान किया।
- केरल का पहला कारवां पार्क इडुक्की जिले के वागामोन में स्थापित किया जाएगा।
- योहन पूनावाला को ऊर्जा अवार्ड 2022 में ष्बिजनेस लीडर ऑफ द ईयर अवार्डष् से सम्मानित किया गया।
- 'हील इन इंडिया' पहल शुरूवात चिकित्सा सुविधाओं और बुनियादी ढांचा को बढ़ावा देने के लिए की गई।
- देश में पहली बार दो शहरों के बीच (100 किलोमीटर दूर) क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन लिंक का प्रदर्शन किया। यह प्रयोग डीआरडीओ और आईआईटी दिल्ली के वैज्ञानिकों ने मिलकर किया। क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन एक सुरक्षित संचार पद्धति है जो दो पक्षों को केवल उनके लिए ज्ञात एक साझा रैंडम सीक्रेट कुंजी का उत्पादन करने में सक्षम बनाती है।
- मूडीज के आंकलन में वित्त वर्ष 2023 में भारत की विकास दर 8.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है।
- के.एन. राघवन को इंटरनेशनल रबर स्टडी ग्रुप का नया अध्यक्ष चुना गया है।
- दिल्ली में भारत का पहला ई-वेस्ट इको-पार्क बनेगा। पार्क को 20 एकड़ जमीन पर विकसित किया जाएगा। बता दें कि दिल्ली में हर साल 2 लाख टन ई-कचरा पैदा होता है।

ब्रेन बूस्टर

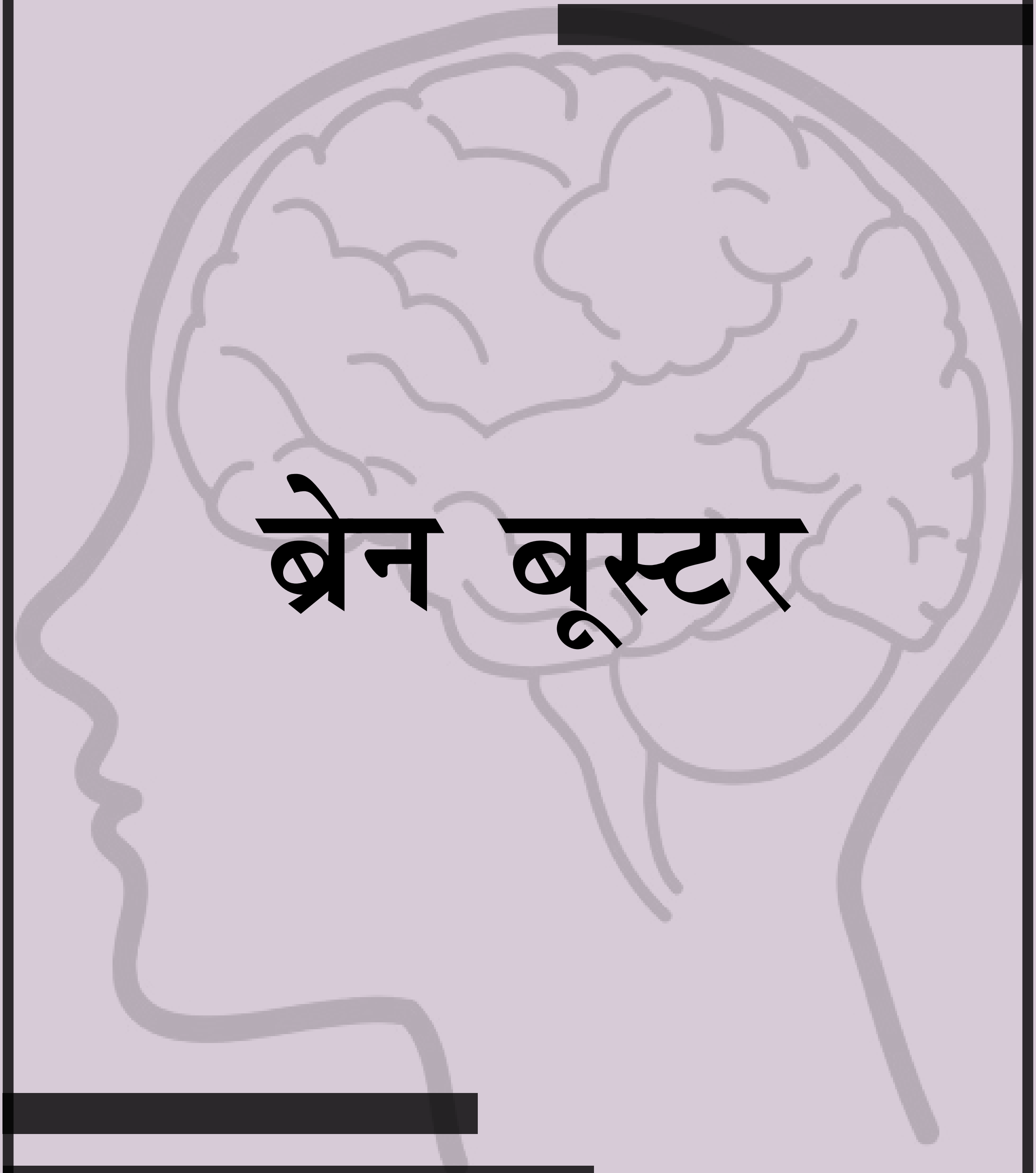

साइबर हमले

1. खबरों में क्यों:

23 फरवरी 2022 को, कई यूक्रेनी बैंकों और सरकारी विभागों की वेबसाइटें पहुंच से बाहर हो गई थीं। यह इस साल यूक्रेन के खिलाफ तीसरे तथा सबसे परिष्कृत साइबर हमले थे।

2. साइबर हमलों के बारे में

- साइबर हमला नुकसान पहुंचाने के इरादे से कंप्यूटर, कंप्यूटिंग सिस्टम या कंप्यूटर नेटवर्क तक अनधिकृत पहुंच हासिल करने का कोई भी प्रयास है।
- साइबर हमलों का उद्देश्य कंप्यूटर सिस्टम को निष्क्रिय करना, बाधित करना, नष्ट करना या नियंत्रित करना या इन सिस्टम के भीतर रखे डेटा को बदलना, ब्लॉक करना, हटाना, हेरफेर करना या चोरी करना होता है।
- साइबर हमले करने वाले लोगों को आमतौर पर साइबर अपराधी माना जाता है।
- कंप्यूटर विशेषज्ञों के सरकार प्रायोजित समूह भी साइबर हमले करते हैं। उन्हें रा. ज्य-प्रायोजित हमलावरों के रूप में पहचाना जाता है।

3. साइबर हमलों के कारण

- **आर्थिक लाभ**
  - अधिकांश साइबर हमले, विशेष रूप से वाणिज्यिक संस्थाओं के खिलाफ, वित्तीय लाभ के लिए शुरू किए जाते हैं।
  - इन हमलों का उद्देश्य अक्सर संवेदनशील डेटा, जैसे ग्राहक क्रेडिट कार्ड नंबर या कर्म. चारी की व्यक्तिगत जानकारी की चोरी करना होता है, जिसका उपयोग करके साइबर अप. राधी धन या सामान चोरी करते हैं।
- **व्यवधान और बदला**
  - साइबर अपराधी भी विशेष रूप से अरा. जकता, भ्रम, असंतोष, हताशा या अविश्वास फैलाने के लिए हमले शुरू करते हैं।
  - वे अपने खिलाफ किए गए कृत्यों का बदला लेने के लिए इस तरह की कार्रवाई कर सकते हैं।
  - उनका लक्ष्य संस्थाओं को सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा करना या संगठनों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाना हो सकता है।
- **साइबर युद्ध**
  - दुनिया भर की सरकारें भी साइबर हमलों में शामिल हैं, कई राष्ट्रीय सरकारें चल रहे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विवादों के हिस्से के रूप में अन्य देशों के खिल. ाफ हमलों को डिजाइन करने और निष्पादित करने को स्वीकार या संदेह के घेरे में रहती हैं।
  - इस प्रकार के हमलों को साइबर युद्ध के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

4. साइबर हमलों का कार्यप्रणाली

- साइबर अपराधी हमले शुरू करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं, जो इस बात पर निर्भर करता है कि वे किसी लक्षित या गैर-लक्षित इकाई पर हमला कर रहे हैं।
- एक लक्षित हमले में, वे आम तौर पर उन कमजोरियों की तलाश करते हैं जो उन्हें पता लगाए या अवरुद्ध किए बिना पहुंच प्राप्त करने में सक्षम बनाती हैं।
- एक लक्षित हमले में, साइबर अपराधी एक विशिष्ट संगठन को निशाना बनाते हैं, और इस्तेमाल की जाने वाली विधियां हमले के उद्देश्यों के आधार पर भिन्न होती हैं।
- साइबर अपराधी अक्सर अपने हमलों में उपयोग करने के लिए सॉफ्टवेयर टूल बनाते हैं, और वे तथाकथित डार्क वेब पर अक्सर उन्हें साझा करते हैं।

5. साइबर हमलों के प्रकार

- मेलवेयर, जिसमें सूचना प्रणाली पर हमला करने के लिए दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। रैंसमवेयर, स्पाइ. वेयर और ट्रोजन मेलवेयर के उदाहरण हैं।
- फिशिंग, जिसमें हैकर ईमेल प्राप्तकर्ताओं को, ईमेल संदेशों को खोलने के लिए लुभाने के लिए, इंजीनियर करते हैं। प्राप्तकर्ताओं को या तो संलग्न फाइल या एम्बेडेड लिंक खोलकर ईमेल के भीतर निहित मेलवेयर को डाउनलोड करने के लिए धोखा दिया जाता है।
- मैन-इन-द-मिडिल, या डपजड, जहां हमलावर गुप्त रूप से दो पक्षों, जैसे व्यक्तिगत कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं और उनके वित्तीय संस्थान के बीच खुद को सम्मिलित करते हैं।
- **DDoS,** जिसमें हैकर्स एक संगठन के सर्वर पर एक साथ बड़ी मात्रा में डेटा अनुरोधों को करते हैं, जिससे सर्वर किसी भी वैध अनुरोध को संभालने में असमर्थ हो जाते हैं।
- **SQL** इंजेक्शन, जहां हैकर्स संवेदनशील डेटा प्राप्त करने के लिए सर्वर के स्ट्रक्चर्ड क्वेरी लैंग्वेज प्रोग्रामिंग भाषा का उपयोग करके सर्वर में दुर्भावनापूर्ण कोड डालते हैं ।
- जीरो-डे एक्सप्लॉइट, जो तब होता है जब आईटी अवसंरचना में एक नई पहचानी गई भेद्यता का पहली बार हैकर्स द्वारा शोषण किया जाता है।

6. साइबर हमले की रोकथाम

सर्वोत्तम प्रथाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- हमले के प्रयासों को रोकने और ज्ञात दुर्भ. ाविनापूर्ण डोमेन तक पहुंच को अवरुद्ध करने में मदद करने के लिए फायरवॉल जैसे परिधि सुरक्षा को लागू करना।
- मैलवेयर से बचाव के लिए सॉफ्टवेयर का उपयोग करना, अर्थात् एंटीवायरस सॉफ्टवेयर, जिससे साइबर हमलों से सुरक्षा की एक और परत जुड़ती है।
- ज्ञात सॉफ्टवेयर कमजोरियों, जिनका है. कर्स द्वारा शोषण किया जा सकता है, को दूर करने के लिए पैच प्रबंधन कार्यक्रम का होना।
- उपयुक्त सुरक्षा कॉन्फिगरेशन, पासवर्ड नी. तियां और उपयोगकर्ता पहुंच नियंत्रण सेट करना।

ग्लोबल गेटवे

1. ग्लोबल गेटवे के बारे में

1 दिसंबर 2021 को, यूरोपीय संघ ने दुनिया भर में बुनियादी ढांचे के विकास का समर्थन करने की योजना, ग्लोबल गेटवे का अनावरण किया। यह जलवायु परिवर्तन से लड़ने से लेकर स्वास्थ्य प्रणालियों में सुधार करने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता और सुरक्षा को बढ़ावा देने तक सबसे अधिक दबाव वाली वैश्विक चुनौतियों से निपटने में मदद करेगा।

2. ग्लोबल गेटवे के सिद्धांत

साझेदार देशों में विश्वसनीय कनेक्टिविटी का यूरोपीय मॉडल दीर्घकालिक है और यूरोपीय संघ के हितों और मूल्यों के अनुरूप है: कानून का शासन, मानवाधिकार और अंतर्राष्ट्रीय मानदंड और मानक। इसके बारे में है

- गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढांचे में स्मार्ट, स्वच्छ और सुरक्षित निवेश
- दुनिया भर में वस्तुओं, लोगों और सेवाओं को स्थायी तरीके से जोड़ना

ग्लोबल गेटवे पार्टनरशिप 6 सिद्धांतों पर आधारित होगी:

I. लोकतांत्रिक मूल्य और उच्च मानक
II. सुशासन और पारदर्शिता
III. समान भागीदारी
IV. हरित और साफ
V. सुरक्षा केंद्रित
VI. निजी क्षेत्र के निवेश को उत्प्रेरित करना

3. साझेदारी के प्रमुख क्षेत्र

- **डिजिटल क्षेत्र**

ग्लोबल गेटवे के माध्यम से, यूरोपीय संघ यूरोप और दुनिया के बीच संबंधों को मजबूत करेगा और भागीदार देशों को डिजिटल डिवाइड को संबोधित करने और वैश्विक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत करने में मदद करेगा।

- **जलवायु और ऊर्जा**
  - सतत विकास लक्ष्यों और पेरिस समझौते की प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने के रास्ते में ग्लोबल गेटवे इस हरित परिवर्तन का समर्थन करेगा।
  - यह हरित प्रौद्योगिकी आदान-प्रदान को बढ़ावा देगा और ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करेगा।
- **परिवहन**
  - ग्लोबल गेटवे दुनिया भर में बुनियादी ढांचे के निवेश को बढ़ावा देगा जो परिवहन के सभी साधनों में टिकाऊ, स्मार्ट, लचीला, समावेशी और सुरक्षित नेटवर्क बनाता है।
  - यह ट्रांस यूरोपियन ट्रांसपोर्ट नेटवर्क के विस्तार जैसे नेटवर्क का समर्थन करेगा।
- **स्वास्थ्य**
  - ग्लोबल गेटवे आपूर्ति श्रृंखलाओं की सुरक्षा और स्थानीय विनिर्माण क्षमताओं के विकास को प्राथमिकता देगा।
  - यूरोपीय संघ अपनी दवा आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के लिए भागीदार देशों के साथ काम करेगा।
- **शिक्षा और अनुसंधान**
  - यूरोपीय संघ डिजिटल शिक्षा सहित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में निवेश करेगा, जिसमें लड़कियों और महिलाओं और अन्य कमजोर समूहों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

4. वित्तपोषण के स्रोत

- ग्लोबल गेटवे यूरोपीय संघ और यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के माध्यम से उनके वित्तीय और विकास संस्थानों के साथ वितरित किया जाएगा, जिसमें यूरोपीयन इन्वेस्टमेंट बैंक (ईआईबी) और यूरोपीयन बैंक फॉर रिकंस्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट (ईबीआरडी) शामिल हैं।
- ग्लोबल गेटवे यूरोपीय संघ के बहु-वार्षिक वित्तीय ढांचे 2021-2027 में नए वित्तीय साधनों पर आधारित है। ये हैं
  - **Neighbourhood Development and International Cooperation Instrument** (NDICI)-वैश्विक यूरोप
  - **Instrument for Pre-Accession Assistance** (आईपीए) III
  - कनेक्टिंग यूरोप सुविधा का डिजिटल और अंतर्राष्ट्रीय हिस्सा
  - **Interreg**
  - **InvestEU**
  - **Horizon** यूरोप
  - यूरोपीय संघ के अनुसंधान और नवाचार कार्यक्रम
- यह कनेक्टिविटी परियोजनाओं के लिए 2021-2027 के बीच €300 बिलियन जुटाएगा।

5. ग्लोबल गेटवे का दृष्टिकोण और मानवाधिकारों का समर्थन

ग्लोबल गेटवे के प्रमुख सिद्धांत:

- **लोकतांत्रिक मूल्य और उच्च मानक**
  - ग्लोबल गेटवे कानून के शासन का पालन करेगा, मानव, सामाजिक और श्रमिकों के अधिकारों के उच्च मानकों को बनाए रखेगा और अंतरराष्ट्रीय नियमों से लेकर बौद्धिक संपदा और खुली सार्वजनिक खरीद तक के मानदंडों का सम्मान करेगा।
- **सुशासन और पारदर्शिता**
  - लोगों के लिए काम करने वाली परियोजनाओं के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही और वित्तीय स्थिरता की आवश्यकता होती है।
- **समान भागीदारी**
  - बुनियादी ढांचा परियोजनाएं उन जरूरतों और अवसरों पर आधारित होंगी जिन्हें वे अपनी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और स्थानीय समुदायों के साथ-साथ यूरोपीय संघ के अपने रणनीतिक हितों के लिए उचित समझते हैं।
- **हरित और साफ**
  - ग्लोबल गेटवे एक जलवायु-तटस्थ रणनीति है जो सतत विकास और विकास में तेजी लाने, समावेशी विकास और रोजगार पैदा करने और एक स्वच्छ और अधिक परिपत्र वैश्विक अर्थव्यवस्था में संक्रमण के लिए है।
- **सुरक्षा-केंद्रित**
  - सुरक्षित बुनियादी ढांचा वैश्विक अर्थव्यवस्था और आपूर्ति श्रृंखलाओं के लचीलेपन को कम करता है, चाहे वह डिजिटल, स्वास्थ्य, परिवहन या ऊर्जा पर हो।

सिंधु जल संधि

1. खबरों में क्यों

भारत और पाकिस्तान के सिंधु आयुक्तों से युक्त स्थायी सिंधु आयोग (PIC) की 117 वीं बैठक 1-3 मार्च, 2022 तक इस्लामाबाद, पाकिस्तान में आयोजित की गई थी।

2. सिंधु जल संधि के बारे में

- सिंधु नदी बेसिन में छह नदियां सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज हैं; ये तिब्बत से निकलती है और हिमालय पर्वतमाला से बहती हुई पाकिस्तान में प्रवेश करती है, कराची के दक्षिण में अरब सागर में मिलती है।
- 1947 में विभाजन ने सिंधु नदी प्रणाली को भी दो भागों में बाँट दिया।
- दोनों पक्ष अपनी सिंचाई के लिए सिंधु नदी के बेसिन के पानी पर निर्भर थे।
- इसलिए बुनियादी ढांचे और समान वितरण की जरूरत थी।
- प्रारंभ में, मई, 1948 के समझौते को अपनाया गया था, जिसके तहत भारत वार्षिक भुगतान के बदले पाकिस्तान को पानी की आपूर्ति कर रहा था।
- हालांकि, यह समझौता जल्द ही विघटित हो गया क्योंकि दोनों देश आम व्याख्याओं पर सहमत नहीं हो सके।
- 1951 में, दोनों देशों ने सिंधु और उसकी सहायक नदियों पर अपनी-अपनी सिंचाई परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए विश्व बैंक में आवेदन किया, जब बैंक ने विवाद में मध्यस्थता की पेशकश की।
- अंततः 1960 में, लगभग एक दशक की बातचीत के बाद, दोनों देशों के बीच एक समझौता हुआ, जिससे जवाहरलाल नेहरू, अयूब खान और डब्ल्यूएबी इलिफ द्वारा सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी) पर हस्ताक्षर किए गए।

3. संधि का सार

- संधि ने भारत द्वारा कुछ गैर-उपभोग्य, कृषि और घरेलू उपयोगों को छोड़कर, तीन पश्चिमी नदियों- सिंधु, चिनाब और झेलम- को अप्रतिबंधित उपयोग के लिए पाकिस्तान को आवंटित किया।
- तीन पूर्वी नदियाँ- रावी, ब्यास और सतलुज-भारत में अप्रतिबंधित उपयोग के लिए।
- पानी का 80% हिस्सा या लगभग 135 मिलियन एकड़ फीट (MAF) पाकिस्तान में चला गया, शेष 33 MAF या 20% पानी भारत के उपयोग के लिए छोड़ दिया गया।
- इसके अलावा, भारत को पश्चिमी नदियों पर न्यूनतम भंडारण स्तर की भी अनुमति है।
- इसके लिए दोनों देशों को दोनों पक्षों के स्थायी आयुक्तों द्वारा गठित एक स्थायी सिंधु आयोग की स्थापना की भी आवश्यकता थी।
- भारत को झेलम, चिनाब और सिंधु पर 'रन ऑफ द रिवर' जलविद्युत परियोजनाओं के निर्माण का अधिकार है।
- यह संधि पाकिस्तान को भारत द्वारा बनाई जा रही ऐसी परियोजनाओं पर आपत्तियां उठाने की भी अनुमति देती है, यदि वह उन्हें विनिर्देशों के अनुरूप नहीं पाती है।
- आईडब्ल्यूटी तीन चरणों वाला विवाद समाधान तंत्र भी प्रदान करता है, जिसके तहत मुद्दों को पहले आयोग या अंतर-सरकारी स्तर पर हल किया जा सकता है।
- यदि यह विफल रहता है, तो कोई भी पक्ष तटस्थ विशेषज्ञ की नियुक्ति के लिए विश्व बैंक से संपर्क कर सकता है।
- और अंत में, यदि दोनों में से कोई भी पक्ष अभी भी संतुष्ट नहीं है, तो मामलों को मध्यस्थता न्यायालय में भेजा जा सकता है।

4. संधि के तहत उठाई गई आपत्तियां

- संधि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सफल राजनयिक प्रयास के रूप में माना गया है, दोनों देशों के बीच तीन युद्धों और कई सैन्य गतिरोधों का सामना करने के बाद भी यह संधि बची हुई है.
- संधि, असंतोष का कारण बन गई क्योंकि
  - पानी की मांग बढ़ रही है
  - दस्तावेज की व्यापक तकनीकी प्रकृति
  - पश्चिमी नदियाँ जम्मू और कश्मीर के विवादित क्षेत्र से होकर बहती हैं।
- पाकिस्तान ने किशनगंगा जल विद्युत परियोजना (केएचईपी) पर भारतीय परियोजना पर आपत्ति जताई।
- किशनगंगा झेलम नदी की एक सहायक नदी है।
- केएचईपी का काम 2007 में शुरू किया गया था और इसे 2016 तक पूरा किया जाना था।
- पाकिस्तान की आपत्ति के कारण भारत बांध की ऊंचाई 97 मीटर से घटाकर 37 मीटर करने पर सहमत हुआ।
- 2010 में, पाकिस्तान इस मामले को इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन में ले गया। कोर्ट ने अपना अंतिम फैसला दिसंबर 2013 में दिया, जिसमें भारत को इस परियोजना के लिए शर्तों के अधीन हरी झंडी दी गई।
- पाकिस्तान के लगातार विरोध के बावजूद 2018 में इस परियोजना का उद्घाटन किया गया।
- डिजाइन संबंधी चिंताओं को लेकर पाकिस्तान ने वर्ष 1970 में सलल बांध परियोजना पर आपत्ति जताई थी, जिसके लिए बातचीत 1978 में समाप्त हुई।
- 2000 के दशक में पाकिस्तान ने फिर से बगलिहार जलविद्युत परियोजना पर आपत्ति जताई।

5. भू-राजनीतिक संघर्ष

- 2016 में जम्मू-कश्मीर के उरी सैन्य शिविर पर हमले के बाद, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, "रक्त और पानी एक साथ नहीं बह सकते"।
- 2019, पुलवामा आतंकी हमले के बाद, भारत ने पहली बार पाकिस्तान को पानी की आपूर्ति बंद करने की धमकी दी थी।
- आईडब्ल्यूटी में एकतरफा निकास प्रावधान नहीं है, और इसे तब तक लागू रहना चाहिए जब तक कि दोनों देश एक और पारस्परिक रूप से सहमत समझौते की पुष्टि नहीं करते।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन

1. खबरों में क्यों:

2031 तक, नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA) ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (ISS) को रिटायर और डीकमिशन करने की योजना बनाई है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी ने इंटरनेशनल स्पेस ट्रांजीशन रिपोर्ट में अगले दशक के लिए अपने लक्ष्यों को विस्तृत किया है क्योंकि इसका उद्देश्य वाणिज्यिक संगठनों को संचालन सौंपना है । आईएसएस का संचालन करने वाले अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों ने अभी तक इसे मंजूरी नहीं दी है।

2. आईएसएस के बारे में

- आईएसएस को 1998 में यू.एस., रूस, जापान, कनाडा और यूरोप के संयुक्त प्रयासों से लॉन्च किया गया था।
- अंतरिक्ष स्टेशन को कई वर्षों में बनाया गया, और यह लो-अर्थ ऑर्बिट में संचालित होता है।
- अपनी स्थापना के बाद से, ISS ने अंतरिक्ष में प्रयोगशाला के रूप में कार्य किया है और कई वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में सहायता की है।
- अंतरिक्ष स्टेशन की अवधारणा पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन द्वारा 1984 में स्टेट ऑफ द यूनियन संबोधन में प्रस्तुत की गयी थी।
- आईएसएस ने पिछले 21 वर्षों से लगातार मानव उपस्थिति बनाए रखी है, जिससे अंतरिक्ष यात्रियों को वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए परिष्कृत तकनीकें उपलब्ध कराई जा रही हैं।

3. आईएसएस को बंद करने का कारण

- आईएसएस को मूल रूप से 15 वर्षों के लिए संचालित करने के लिए बनाया गया था।
- 2030 तक संचालन जारी रखने की योजना के साथ, अंतरिक्ष स्टेशन ने 21 वर्षों तक सक्रिय रहकर उस चेक-पॉइंट को पहले ही पार कर लिया है।
- स्टेशन के जीवनचक्र की सीमाएं जोर पकड़ रही हैं।
- आईएसएस प्रति दिन पृथ्वी के 16 चक्कर लगाता है, जिससे बाहरी तापमान में अत्यधिक परिवर्तन होता है।
- सूर्य की ओर वाला भाग 121°C तक गर्म हो सकता है, जबकि विपरीत, अंधेरे भाग का तापमान -157°C तक गिर सकता है, जिससे आईएसएस निर्माण सामग्री का तीव्र विस्तार और संकुचन हो सकता है।
- यह कक्षीय थर्मल साइकिलिंग, गतिशील लोडिंग के साथ, अंतरिक्ष स्टेशन की प्राथमिक संरचना की सुरक्षा को प्रभावित करता है।
- तकनीकी सुरक्षा भी रेडिएटर, मॉड्यूल और ट्रस संरचनाओं जैसे भागों द्वारा सीमित होती है जो समय के साथ खराब हो जाते हैं।
- नासा लो-अर्थ ऑर्बिट के संचालन को निजी कंपनियों को हस्तांतरित करने और चंद्रमा तथा मंगल पर अनुसन्धान करने के अपने मिशन पर ध्यान केंद्रित करने की योजना बना रहा है।

4. ISS को कक्षा से हटाना

- नासा ने आईएसएस को पृथ्वी की कक्षा से हटाने की योजना बनाई है और अंतत: इसे समुद्र में डुबाने की योजना है।
- अंतरिक्ष एजेंसी आईएसएस को समाप्त करने के लिए दो पद्दतियों प्राकृतिक कक्षा क्षय तथा पुन: प्रवेश मनोयूवर का उपयोग करेगी।
- योजना के अनुसार, पृथ्वी के प्राकृतिक वायुमंडलीय खिंचाव का उपयोग आईएसएस की ऊंचाई कम करने के लिए डी-ऑर्बिट करते समय किया जाएगा।
- इसके बाद अंतरिक्ष स्टेशन संचालक संरचना को अधिकतम संभव ऊंचाई तक कम करने और पृथ्वी के वायुमंडल में सुरक्षित पुन: प्रवेश सुनिश्चित करने के लिए इसे अंतिम धक्का प्रदान करेंगे, जिससे यह दक्षिण प्रशांत महासागरीय निर्जन क्षेत्र (एसपीओयूए) पर प्वाइंट निमो तक पहुंच जाएगा।
- जब मलबा पृथ्वी के वायुमंडल में फिर से प्रवेश करता है तो मॉड्यूल के बाहरी भाग के पिघलने की संभावना होती है।
- प्रक्रिया के दौरान आंतरिक हार्डवेयर के जलने या वाष्पीकृत होने की भी संभावना है।
- ऐसा माना जाता है कि ट्रस सेक्शन जैसे सघन घटक पुन: प्रवेश से बचे रहेंगे और एसपीओयूए में गिरेंगे।
- वैकल्पिक विकल्प जैसे अलग करके पृथ्वी पर वापस लाना, एक उच्च कक्षा में बढ़ावा देना, और बेतरतीबतरीके से पुन: प्रवेश पर भी विचार किया गया था।
- अंतरिक्ष में अलग करने से बड़ी साजो-सामान और वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता।
- आईएसएस को इसके अधिक द्रव्यमान और कम परिचालन ऊंचाई के कारण उच्च कक्षा में बढ़ाकर सेवामुक्त नहीं किया जा सकता है।
- मौजूदा प्रणोदन प्रणाली में स्टेशन की ऊंचाई को एक उच्च लक्ष्य तक बढ़ाने और लो-अर्थ ऑर्बिट से बाहर ले जाने की क्षमता नहीं है।
- रैंडम री-एंट्री पद्धति को छोड़ दिया गया क्योंकि यह जमीन पर मानव आबादी के लिए एक बड़ा जोखिम उत्पन्न करती है।

5. योजना से जुड़े पर्यावरणीय खतरे

- नासा का दावा है की आईएसएस का मलबा जो पुन: प्रवेश से बच जाता है, समुद्र तल में बैठ जाएगा और इससे कोई दीर्घकालिक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

6. अंतरिक्ष स्टेशनों का भविष्य

- आईएसएस अंतरिक्ष में परिचालन समाप्त करने की योजना बना रहा है, नए खिलाड़ी पहले से ही इसका स्थान लेने के लिए तैयार हैं।
- जनवरी 2022 में चीन ने घोषणा की कि उसका अंतरिक्ष स्टेशन इस साल संचालन के लिए तैयार हो जाएगा।

'प्लास्टिक प्रदूषण' से जंग

1. खबरों में क्यों

हाल ही में, 175 देशों ने प्लास्टिक की पूरी आपूर्ति श्रृंखला से निपटने के लिए, तथा प्लास्टिक प्रदूषण संकट को समाप्त करने के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी वैश्विक संधि पर सहमति व्यक्त की है। यूएनईपी के अनुसार, यह 2015 के पेरिस जलवायु समझौते के बाद से "सबसे बड़ा बहुपक्षीय पर्यावरण समझौता" है।

2. प्रमुख बिंदुः

- पेरू का समग्र दृष्टिकोण बनाम जापानी चयनात्मक-केंद्रित दृष्टिकोण:

I. दो प्रतिस्पर्धी विचारों को सामने रखा गया था। एक, पेरू और रवांडा के नेतृत्व में, उत्पादन से लेकर उपभोग और निपटान तक, प्लास्टिक के जीवन चक्र के सभी चरणों को शामिल किया गया।

II. दूसरा जापान द्वारा अनुशंसित महासागरों में प्लास्टिक पर केंद्रित एक अधिक सीमित सौदा था।

- जो मसौदा सामने आया है वह पेरू के समग्र दृष्टिकोण का समर्थन करता है। इस संधि के तत्व कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं।
- सतत वित्तपोषण तंत्र: यह संधि स्वीकार करती है कि कम आय वाले देशों को उच्च आय वाले देशों की तुलना में प्लास्टिक प्रदूषण से जूझना मुश्किल होगा और इसलिए संधि प्लास्टिक के उपयोग और कचरे को रोकने में मदद करने के लिए किसी प्रकार के वित्तपोषण मॉडल पर जोर देती है।

3. संधि की आवश्यकता

- पिछली सफल पर्यावरण संधियाँ:

I. **UNEP** ने समझौते की तुलना ओजोन को नष्ट करने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन **(CFCs)** पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल और पारा प्रदूषण पर मिनामाता सम्मेलन जैसी पिछली पर्यावरणीय संधियों से की, जिससे इन हानिकारक रसायनों के उत्सर्जन में भारी कमी आई।

II. वैश्विक संधियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि वैश्विक सौदे सरकारों और उद्योग को अलग तरह से काम करने के लिए मजबूर कर सकते हैं।

- यूएनईपी: विनाशकारी स्वास्थ्य परिणाम, यदि और देरी हुईः

I. 2015 में दुनिया ने 381 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन किया, और हर साल सैकड़ों हजारों टन प्लास्टिक के समुद्र में जाने का अनुमान है, इसमें से अधिकांश निम्न और मध्यम आय वाले देशों से हैं, जिनमें इसे जलाने या रीसायकल करने की कम क्षमता है।

II. सर्वव्यापी प्लास्टिक प्रदूषण को समुद्री जीवन पर नकारात्मक प्रभावों से जोड़ा गया है, और आशंका है की यह खाद्य वेब में जैव-आवर्धन और जैव संचय का कारण बनता है।

- यूनेस्को: स्वच्छता ईश्वरीयता के सामान है:

I. यूनेस्को द्वारा देखा गया है-देशी और विदेशी पर्यटक जब समुद्र तट पर जाते हैं और प्रकृति को प्रदूषित करने वाले प्लास्टिक को देखते हैं तो उनके मन में घृणा का भाव उत्पन्न होता हैं।

II. यह देश की विदेशी मुद्रा और वैश्विक छवि को 'गंदे देश' के रूप में प्रभावित करता है।

4. प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (संशोधन) नियम, 2021 के प्रमुख प्रावधान

- 1 जुलाई, 2022 से पॉलीस्टाइरिन और विस्तारित पॉलीस्टाइरिन, वस्तुओं सहित सिंगल यूज प्लास्टिक (एसयूपी) के निर्माण, आयात, स्टॉकिंग, वितरण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध।
- प्लास्टिक कैरी बैग की मोटाई 30 सितंबर, 2021 से 50 माइक्रोन से बढ़ाकर 75 माइक्रोन कर दी जाएगी, जो 31 दिसंबर, 2022 से 120 माइक्रोन हो जाएगी।
- कूड़ा-करकट रोकने और पुनः उपयोग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर।
- विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व/ईपीआर (प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुसार) के दिशानिर्देशों को प्रभावी कार्यान्वयन के लिए 2021 नियमों के माध्यम से कानूनी बल दिया गया है ।
- प्लास्टिक पैकेजिंग कचरे का संग्रह और प्रबंधन, जो निर्माता, आयातक और ब्रांड मालिक (पीआईबीओ) के ईपीआर के माध्यम से पहचाने गए एसयूपी मदों के फेज-आउट के अंतर्गत शामिल नहीं है।
- एसयूपी के उन्मूलन और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अन्य उपाय:

I. स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से राज्यों में अपशिष्ट प्रबंधन के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना।

II. राज्य सरकारों और संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों द्वारा व्यापक कार्य योजनाएँ।

III. जागरूकता पैदा करना:

- उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों के लिए इंडिया प्लास्टिक चैलेंज-हैकाथॉन 2021
- प्लास्टिक कचरा प्रबंधन के लिए चिन्हित एसयूपी मदों और डिजिटल समाधानों के विकल्प विकसित करने के लिए स्टार्टअप।

5. निष्कर्ष

- वैश्विक प्लास्टिक संधि के तहत क्या उपाय किए जाने चाहिए, और सौदे के क्या मायने हो सकते हैं, अब इस पर काम करने की आवश्यकता होगी। जैसा कि यूएनईपी ने कहा है, संधि में "स्पष्ट और मजबूत वैश्विक मानक और लक्ष्य" होने चाहिए।
- सर्कुलर आर्थिक मॉडल ही स्थायी समाधान है:

I. प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने का सबसे अच्छा तरीका इसके पूरे चक्र पर नियंत्रण करना है। पूरी आपूर्ति श्रृंखला को कवर करके, प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक वैश्विक समझौता उत्पादों में प्लास्टिक को कम करने या बदलने जैसे अपस्ट्रीम समाधानों का समर्थन कर सकता है।

II. इस बात पर व्यापक सहमति है कि कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते के माध्यम से वैश्विक समन्वय सबसे अच्छा हासिल किया जाता है।

स्विफ्ट और प्रतिबंध

1. खबरों में क्यों

यू.एस., यूरोप और कई अन्य पश्चिमी देशों ने रूस को सोसाइटी फॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फाइनेंशियल टेलीकम्युनिकेशन (स्विफ्ट, SWIFT) से बाहर कर दिया है, जो कि बैंकों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क है जो वैश्विक स्तर पर सुचारू धन लेनदेन की सुविधा प्रदान करता है। यह यूक्रेन में रूस अभियान के खिलाफ सबसे मजबूत आर्थिक प्रतिबंध हो सकता है, क्योंकि यह संभावित रूप से देश को अंतरराष्ट्रीय भुगतान प्राप्त करने से काट देगा।

2. स्विफ्ट के बारे में

- 1973 में स्थापित, स्विफ्ट सुरक्षित वित्तीय संदेश सेवाओं का एक वैश्विक प्रदाता है।
- स्विफ्ट की स्थापना टेलेक्स को हटा के की गई थी।
- यह 200 से अधिक देशों में 11,000 से अधिक बैंकों, वित्तीय संस्थानों और निगमों को जोड़ने वाली सदस्य-स्वामित्व वाली सह. कारी संस्था है।
- SWIFT दुनिया भर में स्थित 26 कार्यालयों द्वारा संचालित होता है, और इसका मुख्यालय बेल्जियम में है।
- वित्तीय उद्योग के लिए एक रणनीतिक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संदेश सेवा प्रदाता के रूप में, SWIFT की निगरानी G-10 केंद्रीय बैंकों द्वारा की जाती है।

3. स्विफ्ट की शासन-विधि

- स्विफ्ट बेल्जियम के कानून के तहत एक सहकारी कंपनी है और इसका स्वामित्व और नियंत्रण इसके शेयरधारकों (वित्तीय संस्थानों) द्वारा किया जाता है जो दुनिया भर से लगभग 3,500 फर्मों का प्रतिनिधि त्व करते हैं।
- शेयरधारक 25 स्वतंत्र निदेशकों के बोर्ड का चुनाव करते हैं, जो दुनिया भर के बैंकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कंपनी को नियंत्रित करता है और कंपनी के प्रबंधन की देखरेख करता है।
- कार्यकारी समिति मुख्य कार्यकारी अधि कारी की अध्यक्षता में पूर्णकालिक कर्मचा. रियों का एक समूह है।

- स्विफ्ट का पर्यवेक्षण G-10 केंद्रीय बैंकों (बेल्जियम, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, नीदरलैंड, यूके, यूएसए, स्विट्ज. रलैंड और स्वीडन) के साथ-साथ यूरोपीय सेंट्रल बैंक द्वारा की जाती है, जिसके प्रमुख प्रयवेक्षक नेशनल बैंक ऑफ बेल्जियम है।
- 2012 में, इस ढांचे की समीक्षा की गई और SWIFT ओवरसाइट फोरम की स्थापना की गई, जिसमें G-10 केंद्रीय बैंक के साथ विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं ; ऑस्ट्रेलिया, चीन, हांगकांग, भारत, दक्षिण कोरिया, रूस, सऊदी अरब , सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और तुर्की के केंद्रीय बैंक भी सम्मिलित हुए।
- SWIFT ओवरसाइट फोरम, G-10 केंद्रीय बैंकों को, SWIFT निगरानी गतिविधियों पर केंद्रीय बैंकों के व्यापक समूह के साथ जानक. ारी साझा करने के लिए एक सुविधा प्रदान करता है।
- स्विफ्ट निरीक्षण अधिकारियों के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षेत्राधिकारों के साथ खुला, रचन. ात्मक और नियमित संवाद करने के लिए प्रतिबद्ध है।

4. स्विफ्ट ऑपरेटिंग सेंटर का स्थान

- वर्तमान में, SWIFT के नीदरलैंड, स्विट्ज. रलैंड और अमेरिका में ऑपरेटिंग केंद्र (OPCs) हैं, जहां संदेश डेटा संग्रहीत किया जाता है।

5. अवधि जिसके लिए स्विफ्ट डेटा रखता है

- स्विफ्ट विभिन्न वित्तीय संदेश सेवा प्रदान करता है, जिसमें से कुछ FIN] FINplus] FINCopy, FINInform InterAct, FileAct] SWIFT WebAccess, MI Channel, SWIFT-Net Instant and SWIFTNet Copy शामिल हैं।
- कुछ सेवाएं संदेशों के संग्रह की पेशकश करती हैं, अन्य नहीं। विभिन्न सेवाओं के लिए अभिलेखीय अवधि, यदि कोई हो, सेवा दस्तावेजीकरण में निर्धारित की गई है।

6. वित्तीय प्रतिबंधों के संबंध में स्विफ्ट की भूमिका

- स्विफ्ट उन संदेशों की निगरानी या नियंत्रण नहीं करता है जो उपयोगकर्ता इसके सिस्टम के माध्यम से भेजते हैं ।
- लागू विनियमों के तहत वित्तीय लेनदेन की वैधता पर सभी निर्णय, जैसे कि प्रतिबंध विनियम, उन्हें संभालने वाले वित्तीय संस्थानों और उनके सक्षम अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्राधिकरणों के पास हैं।
- जहां तक वित्तीय प्रतिबंधों का संबंध है, स्विफ्ट का फोकस अपने उपयोगकर्ताओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन करने के लिए उनकी जिम्मेदारियों को पूरा करने में मदद करना है।

7. प्रतिबंधों का पालन करने वाली स्विफ्ट सेवाएं

- 2010 में, स्विफ्ट ने वित्तीय संस्थानों को कवर भुगतान लेनदेन में अंतर्निहित ग्राहक जानकारी को शामिल करने की अनुमति देने के लिए अपने कवर भुगतान संदेशों में बदलाव किए।
- स्विफ्ट के पास वित्तीय अपराध अनुपालन उपकरणों की एक विस्तृत और बढ़ती हुई श्रृंखला है, जिसमें प्रतिबंधों की जांच और प्रतिबंध परीक्षण सेवाएं शामिल हैं।

8. स्विफ्ट से बाहर किए गए देश

- यूरोप के कई देशों के प्रतिरोध के बावजूद 2018 में कुछ ईरानी बैंकों को सिस्टम से बाहर कर दिया गया था।

स्वदेशी स्टील्थ फाइटर

1. खबरों में क्यों:

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, भारत और फ्रांस विकास के तहत स्वदेशी पांचवीं पीढ़ी के एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) के लिए 125 **KN** इंजन के संयुक्त विकास के लिए, अगले कुछ महीनों में, एक सौदे के समापन के करीब हैं।

2. एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के बारे में

- एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के लिए पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान विकसित करने का एक भारतीय कार्यक्रम है।
- विमान का डिजाइन एरोनोटीकल डेवलपमेंट एजेंसी (एडीए) द्वारा किया जाता है, जो रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडी.ओ) के तहत गठित एक विमान डिजाइन और डेवलपमेंट एजेंसी है।
- यह डीआरडीओ, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) और फ्रांसीसी इंजन निर्माता सफरान के बीच एक सार्वजनिक-. निजी संयुक्त उद्यम द्वारा निर्मित होने की उम्मीद है।
- कार्यक्रम का लक्ष्य 2028 तक उत्पादन शुरू करना है। विकास लागत लगभग ₹15,000 करोड़ होने का अनुमान है।
- एएमसीए सिंगल-सीट, ट्विन-इंजन, स्टील्थ ऑल-वेदर स्विंग-रोल लड़ाकू विमान होगा। चरणबद्ध उत्पादन मॉडल में एएमसीए के दो संस्करण तैयार किए जाएंगे । एएमसीए मार्क 1 पांचवीं पीढ़ी की तकनीकों से लैस होगा और मार्क 2 में छठी पीढ़ी का वृद्धिशील प्रौद्योगिकी उन्नयन होगा ।
- एएमसीए का प्रारंभिक डिजाइन 2009 में शुरू हुआ था।
- कॉन्फिगरेशन को अंतिम रूप दे दिया गया है, प्रारंभिक सेवा गुणवत्ता आवश्यकताओं **(PSQR)** को अंतिम रूप दिया गया है और प्रारंभिक डिजाइन समीक्षा पूरी हो गई है। क्रिटिकल डिजाइन रिव्यू (सीडीआर) इस साल के अंत में होने की उम्मीद है, जिसमें 2024 में योजना बनाई गई है और 2025 में पहली उड़ान की योजना है।
- एएमसीए में स्टील्थ और नॉन- स्टील्थ विन्यास होंगे, और इसे दो चरणों में विकसित किया जाएगा - एएमसीए मार्क 1, और एएमसीए मार्क 2।
- इसके साथ-साथ, नौसेना के एयरक्राफ्ट कैरियर से उड़ान भरने के लिए दो इंजन वाले डेक-आधारित लड़ाकू जेट के विकास की परियोजना भी प्रगति पर है ।
- एएमसीए का उद्देश्य हवाई श्रेष्ठता, जमीनी हमले , शत्रु वायु रक्षा का दमन (एसईएडी) और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर (ईडब्ल्यू) मिशन सहित कई मिशनों को पूरा करना है।
- एएमसीए डिजाइन कम रडार क्रॉस सेक्शन और सुपरक्रूज क्षमता के लिए अनुकूलित है।

3. स्टील्थ विमान के बारे में

- स्टील्थ एयरक्राफ्ट को विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके, पता लगाने से बचने के लिए डिजाइन किया गया है जो रडार, इन्फ्रा. रेड, दृश्य प्रकाश, रेडियो फ्रीक्वेंसी (आ. रएफ) स्पेक्ट्रम, और ऑडियो के प्रतिबिंब/उत्सर्जन को कम करते हैं, जिसे सामूहिक रूप से स्टील्थ तकनीक के रूप में जाना जाता है।
- कोई भी विमान राडार के लिए पूरी तरह से अदृश्य नहीं है, स्टील्थ विमान पारंपरिक रडार के लिए विमान का प्रभावी ढंग से पता लगाना या उसे ट्रैक करना अधिक कठिन बना देता है।
- यह दुश्मन के राडार द्वारा सफलतापूर्वक पता लगाने से बचने और/या राडार निर्देशित हथियारों द्वारा सफलतापूर्वक लक्षित होने से बचने के लिए एक विमान की बाधाओं को बढ़ाता है।
- इस विमान में पैसिव लो ऑब्जर्बेबल **passive low observable (LO)** तकनीकों को जोड़ा जाता है। इसके साथ ही इनमे सक्रिय उत्सर्जक जैसे कम-संभाव्यता-अवरोधन रडार, रेडियो और लेजर डिजाइनर भी संलग्न किए जाते हैं।

4. स्टील्थ प्रोद्योगिकी के लाभ

- पारंपरिक वाहनों के स्थान पर स्टील्थ वाहनों के उपयोग से युद्ध क्षेत्र की दक्षता को बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही साथ इसमें दीर्घकालिक वित्तीय बचत भी प्राप्त होगी।
- एक स्टील्थ लड़ाकू विमान द्वारा किये गए आक्रमण की स्थिति में शत्रु प्रतिकार करने की स्थिति में नहीं रहता क्योंकि शत्रु इन स्टील्थ लड़ाकू विमानों का पता लगाने में असमर्थ रहते हैं।
- स्टील्थ तकनीकी के विमानों में जान-माल का कम नुकसान होता है।

5. स्टील्थ प्रौद्योगिकी से हानि

- स्टील्थ प्रौद्योगिकी से निर्मित विमान, पा. रम्परिक विमानों की तुलना में कम गतिशील होते हैं।
- स्टील्थ एयरक्राफ्ट, पारंपरिक एयरक्राफ्ट की तुलना में कम पेलोड या वहन करने की क्षमता होती है।
- एक स्टील्थ विमान की लागत बहुत अधिक होती है।

6. भविष्य की राह

- फ्रांस के साथ समझौते के उपरान्त, विमान के विकास के साथ-साथ इंजन को समय-सीमा को पूर्ण करने की दिशा में भी प्रगति करनी होगी।
- विमान के निर्माण और उत्पादन की योजना एक विशेष प्रयोजन वाहन के माध्यम से बनाई जानी चाहिए, इसमें निजी उद्यम को भी स्थान देना चाहिए।
- एएमसीए पांचवीं पीढ़ी के स्टील्थ युद्धक विमानों के साथ देशों के विशिष्ट क्लब में भारत का प्रवेश सुनिश्चित करेगा।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण से संबंधित प्रश्न

Q1. वायुमंडलीय ओजोन स्तर जो हमें अल्ट्रा वायलेट-बी और सी से सुरक्षित करता है, में छिद्र अधिकांशतया अधिकता से होता है-

(a) क्लोरोफ्लोरोकार्बन के
(b) कार्बन मोनोऑक्साइड के
(c) कार्बन डाइऑक्साइड के
(d) सल्फर डाइऑक्साइड के

Q2. निम्नांकित में से किस बायोम में अधिकतम विविधता पायी जाती है?

(a) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(b) उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन
(c) उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
(d) टेम्परेट आर्द्र वन

Q3. निम्नांकित में से कौन सा जल जनित बीमारी है?

(a) चेचक
(b) मेनिनजाइटिस
(c) मलेरिया
(d) कालरा

Q4. एक जल निकाय के संदर्भ में 'मृत' शब्दावली इशारा करती है?

(a) एक जल निकाय की जलीय जीवन को बनाये रख पाने की अक्षमता.
(b) एक जल निकाय की जलीय जीवन को बनाये रख पाने की क्षमता.
(c) एक जल निकाय की प्रवाह की अक्षमता.
(d) एक जल निकाय का उष्णन अथवा शीतलन

Q5. निम्नांकित में से कौन सा एक सामान्यतया प्रदूषक नहीं है?

(a) कार्बन मोनोऑक्साइड
(b) कार्बन डाइऑक्साइड
(c) हाइड्रोकार्बन्स
(d) सल्फर डाइऑक्साइड

Q6. सूर्य के प्रकाश से आने वाली अल्ट्रावायलेट विकिरण प्रतिक्रिया करती है, जो उत्पन्न करता है?

(a) फ्लूओराइड्स
(b) ओजोन
(c) कार्बन मोनोऑक्साइड
(d) सल्फर डाइऑक्साइड

Q7. डीडीटी है-

(a) एक ग्रीन हाउस गैस
(b) निरंतरता वाला आर्गनिक प्रदूषक
(c) विघटनीय प्रदूषक
(d) इनमें से कोई नहीं

Q8. प्राकृतिक प्रक्रियाओं के अंतर्गत घरेलू अपशिष्टों का डीकंपोजीशन कहलाता है-

(a) औद्योगिक प्रदूषण
(b) तापीय प्रदूषण
(c) जैव विघटनीय प्रदूषण
(d) अजैवविघटनीय प्रदूषण

Q9. यूट्रोफिकेशन (पोषक तत्वों की अधिकता) सामान्यता देखी जाती है.

(a) पहाड़ों में
(b) रेगिस्तानों में
(c) ताजे जल के झीलों में
(d) महासागरों में

Q10. सीवेज द्वारा प्रदूषित जल में मछलियाँ मर जाती हैं-

(a) पैथोजेन्स के कारण
(b) ऑक्सीजन में कमी के कारण
(c) सिल्ट द्वारा गलफड़ों की क्लागिंग के कारण
(d) गंदे दुर्गन्ध के कारण

Q11. फ्लूराइड प्रदूषण मुख्यतया प्रभावित करता है?

(a) मस्तिष्क
(b) दाँत
(c) हृदय
(d) गुर्दा

Q12. भोपाल गैस दुर्घटना के दौरान रिसी गैस थी-

(a) इथाइल आइसोथायोसाइनेट
(b) सोडियम आइसोथयोसाइनेट
(c) पोटैसियम आइसोपायोसाइनेट
(d) मिथाइल आइसोसाइनेट

Q13. वनस्पति अपशिष्ट नष्ट करने का सर्वोत्तम मार्ग है-

(a) जलाना
(b) कम्पोस्टिंग
(c) एक जल निकाय में निक्षेपित करना

(d) विशेष कंटेनर में पूर्ण रूप में जलाना

Q14. निम्नांकित में से कौन सा एक प्रमुख प्रदूषक है जो अम्ल वर्षा को उत्पन्न करता है

(a) कार्बन डाइऑक्साइड

(b) सल्फर डाइऑक्साइड

(c) हाइड्रोजन पेराक्साइड

(d) कार्बन मोनोऑक्साइड

Q15. उच्च अक्षांशीय स्तरों में प्रदूषकों के संकेन्द्रण में वृद्धि जानी जाती है-

(a) बायोमैगनीफिकेशन के रूप में

(b) जैवनिम्नीकरण के रूप मे

(c) यूट्रोफिकेशन के रूप में

(d) पुर्नवक्रण

Q16. शुद्ध व सुरक्षित जल को प्राप्त करने का सर्वोत्तम घरेलू तरीका है-

(a) फिल्ट्रेशन

(b) उबालना

(c) रासायनिक उपचार

(d) किसी कंटेनर में रखना

Q17. वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 से संबंधित निम्नांकित कथनों पर विचार करें-

1. भारत सरकार ने इस देश के वन्य जीवन के प्रभावी ढंग से संरक्षण और वन्य जीवन और इसके व्युत्पन्नों में शिकार, तश्करी और अवैध व्यापार के नियंत्रण के उद्देश्य के साथ वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 को अधिनियमित किया था

2. इस अधिनियम में जनवरी 2003 में संशोधन किया गया और अधिनियम के अंतर्गत अपराधों के लिए सजा व जुर्माना को अधिक कठोर बनाया गया।

3. पर्यावरण और वन मंत्रालय ने अधिक कठोर उपायों को लाने के जरिये अधिनियम को मजबूती देने के लिए आगे के संशोधनों (वन्य जीवन संरक्षण संशोधन विधेयक, 2010) हेतु प्रस्ताव किया है.

4. वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम, 2010 का उद्देश्य सूचीबद्ध संकटापन्न जन्तु व वनस्पति तथा पारिस्थितिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्रों को सुरक्षा उपलब्ध कराना है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1

(b) 1 और 2

(c) 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

Q18. एक मरणासन्न प्रजाति है:

(a) एक स्थल में अद्वितीय ढंग से पायी जाने वाली प्रजातियाँ

(b) एक महामारी की बीमारी को ले आने वाली प्रजातियाँ

(c) अपने किसी भी प्रारंभिक अवस्था वाले उद्विकास पर एक प्रजातियाँ

(d) एक वनस्पतिशास्त्री की गलतियाँ

Q19. सीवेज के साथ जल की अशुद्धता शिस्टों से प्रदर्शित होती है-

(a) इसचेरविआ

(b) इसचेरविआ कोली

(c) स्यूडोमोनास

(d) लीसमेनिया

Q20. राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण के संदर्भ में निम्नांकित कथनों पर विचार करें-

1. 1999 में केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण (राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण अधिनियम, 1999 के माध्यम से) का गठन किया.

2. राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण को जोखिम भरे पदार्थों के रखरखाव से उत्पन्न दुर्घटनाओं से हुई क्षतियों के लिए कठोर दायित्व उपलब्ध कराने हेतु गठित किया गया था.

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 न ही 2

उत्तर

1.	(c)	12.	(b)
2.	(b)	13.	(c)
3.	(a)	14.	(c)
4.	(b)	15.	(b)
5.	(b)	16.	(b)
6.	(a)	17.	(d)
7.	(a)	18.	(b)
8.	(d)	19.	(b)
9.	(a)	20.	(b)
10.	(b)		
11.	(b)		

समसामायिक आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

Q1. निम्नलिखित में से किस संगठन द्वारा 'UPI123Pay' और 'डिजीसाथी' नामक पहल किया गया है?

A. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
B. भारतीय रिजर्व बैंक
C. वित्त मंत्रालय
D. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

उत्तर: B

Q2. हाल ही में शुरू किए गए 'समर्थ' अभियान का क्या उद्देश्य है?

A. महिला उद्यमिता को बढ़ावा देना
B. विकलांगों के लिए आजीविका की व्यवस्था करना
C. शहरी गरीबों के लिए निम्न दर पर ऋण उपलब्ध कराना
D. शहीद सैनिकों के बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा एवं आवास की व्यवस्था करना

उत्तर: A

Q3. भारत के स्वदेशी 'Automatic Train Protection System' का नाम क्या है?

A. कवच
B. आर्मर
C. ब्रह्मास्त्र
D. ढाल

उत्तर: A

Q4. हाल ही में सुर्खियों में रहे 'संभव' और 'स्वावलंबन' पहल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. यह पर्यावरण मंत्रालय द्वारा भारत में प्लास्टिक कचरे के मुद्दे से निपटने के लिए शुरू किया गया है।
2. इनका उद्देश्य विशेष रूप से भारत के आकांक्षी जिलों के युवा उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है।

A. केवल 1
B. केवल 2
C. 1 और 2 दोनों
D. इनमें से कोई नहीं

उत्तर: B

Q5. निम्नलिखित में से कौन सा संगठन श्वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुकश नामक रिपोर्ट का प्रकाशन करता है?

A. विश्व आर्थिक मंच
B. संयुक्त राष्ट्र
C. विश्व बैंक
D. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

उत्तर: D

Q6. 'Convention on Cluster Munitions' के संबंध में निम्नलि .खित में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

1. इसके तहत क्लस्टर हथियारों पर प्रतिबंध लगाया गया है।
2. इस पर 152 देशों ने हस्ताक्षर किया हुआ है।
3. साल 2014 में भारत ने भी इस संधि पर हस्ताक्षर किया था।

A. केवल 1
B. केवल 3
C. केवल 2 और 3
D. 1, 2 और 3

उत्तर: A

Q7. हाल ही में नाटो चार्टर का अनुच्छेद 5 सुर्खियों में रहा। ये निम्नलिखित में किससे सम्बंधित है?

A. प्राकृतिक आपदा के दौरान सदस्य देशों को रसद आपूर्ति से
B. नाटो समूह में नए सदस्यों को जोड़ने की प्रक्रिया से
C. सदस्य देशों की सामूहिक सुरक्षा से
D. नाटो चार्टर की उल्लंघन की दशा में किसी सदस्य देश को निष्कासित करने की प्रक्रिया से

उत्तर: C

Q8. निम्नलिखित में से किस मंत्रालय द्वारा स्वदेश दर्शन पुरस्कार की शुरुआत की गई है?

A. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
B. पर्यटन मंत्रालय
C. पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय
D. पंचायती राज मंत्रालय

उत्तर: B

Q9. गोविंद बल्लभ पंत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

1. वर्ष 1921 में वे आगरा और अवध के यूनाइटेड प्रोविंस के विधान सभा के लिए चुने गए थे।
2. भारत छोड़ो प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के चलते 1942 में उन्हें गिरफ्तार किया गया था।
3. भारत रत्न गोविंद बल्लभ पंत ने 1903 में हैप्पी क्लब की स्थापना की थी।

उपरोक्त में से कौन से कथन सत्य हैं :

A. 1 और 2
B. 2 और 3
C. 1 और 3
D. 1, 2 और 3

उत्तर: D

Q10. निम्नलिखित में से कौन भारतीय पुलिस में सुधार से संबंधित हैं?

1. रिबेरो समिति, 1998
2. पद्मनाभैया समिति, 2000
3. मलीमठ समिति, 2005
4. प्रकाश सिंह केस, 2007

नीचे दिए गए विकल्पों में से चुनें:

A. केवल 1 और 2
B. केवल 1, 2 और 3
C. केवल 2, 3 और 4
D. ऊपर के सभी

उत्तर: D

Q11. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र देश स्टैक ई-पोर्टल से संबंधित है ?

A. रक्षा
B. शिक्षा
C. स्किलिंग
D. स्वास्थ्य

उत्तर: C

Q12. हाल ही में सुर्खियों में रहे SWIFT के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?

A. SWIFT का पूरा नाम सोसाइटी फॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फाइनेंशियल टेलीकम्युनिकेशन है।
B. SWIFT एक मैसेजिंग नेटवर्क है, जो कि बैंकों को एक खास तरह के कोड फॉर्म में मैसेज देता है।
C. यह ग्लोबल ट्रांजैक्शंस को मैनेज करने का काम करता है।
D. SWIFT का मुख्यालय स्विट्जरलैंड में है।

उत्तर: D

Q13. निम्नलिखित में से कौन से विकल्प को अपनाने से मुद्रास्फीति में सर्वाधिक वृद्धि होने की संभावना है? (यूपीएससी 2013)

A. सार्वजनिक ऋण की चुकाने से
B. बजट घाटे के वित्तपोषण के लिए जनता से उधार लेना
C. बजट घाटे को पूरा करने के लिए बैंकों से उधार लेना
D. बजट घाटे के वित्तपोषण के लिए नया पैसा बनाना

उत्तर: D

Q14. आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार, किस देश से भारत में सबसे बड़ा आयात है?

A. संयुक्त राज्य अमरीका
B. यूएई
C. चीन
D. ब्रिटेन

उत्तर: C

Q15. हाल ही में पारित जीएनसीटीडी संशोधन अधिनियम के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्यों पर विचार करें :

1. कानून दिल्ली सरकार के लिए उपराज्यपाल की राय प्राप्त करना आवश्यक बनाता है।
2. अधिनियम में उल्लेख किया गया है कि विधान सभा द्वारा बनाए गए किसी भी कानून में ष्सरकारष् शब्द का अर्थ कैबिनेट होगा।
3. प्रश्नगत अधिनियम दिल्ली के उपराज्यपाल को "दिल्ली सरकार" घोषित करके व्यापक शक्तियां प्रदान करता है।
4. अधिनियम दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के रास्ते पर है।

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा/से विकल्प सही है/हैं?

A. केवल 1
B. केवल 1 और 2
C. केवल 1 और 3
D. उपरोक्त सभी

उत्तर: C

Q16. BRICS के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. BRICS देशों ने छठे BRICS शिखर सम्मेलन में फोर्टालेजा घोषणा के हिस्से के रूप में 2014 में आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था (सीआरए) पर हस्ताक्षर किए थे।
2. नए विकास बैंक (NDB) की स्थापना Fortaleza (2014) में NBs BRICS शिखर सम्मेलन के दौरान की गई थी।
3. न्यू डेवलपमेंट बैंक का मुख्यालय बीजिंग में है।

सही कथनों का चयन कीजिये:

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. सभी गलत हैं

उत्तर: A

Q17. भारत वन राज्य रिपोर्ट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें :

1. यह पहली बार 1952 में प्रकाशित हुआ था।
2. यह भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा जारी किया जाता है।
3. आईएसएफआर-2021, 2019 से 2021 के बीच वन क्षेत्र में 16 मिलियन हेक्टेयर की वृद्धि को दर्शाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

A. केवल 1
B. केवल 2
C. केवल 2 और 3
D. केवल 3
उत्तर: B

Q18. फ्रीडम इन द वर्ल्ड रिपोर्ट निम्नलिखित में से किस संगठन द्वारा प्रकाशित की जाती है ?
A. ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल
B. रिपोर्टर विदआउट बॉर्डर
C. फ्रीडम हाउस
D. ग्रीनपीस इंटरनेशनल
उत्तर: C

Q19. निम्नलिखित में से किस संगठन ने प्रौद्योगिकी विकास निधि की स्थापना की ?
A. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालयक
B. डी.आर.डी.ओ
C. इसरो
D. वस्त्र मंत्रालय
उत्तर: B

Q20. 'इंडिया डेटा एक्सेसिबिलिटी एंड यूज पॉलिसी' के मसौदे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें :
1. यह संचार मंत्रालय द्वारा जारी किया गया है।
2. यह उपयोगकर्ता के व्यक्तिगत डेटा का मुद्रीकरण का प्रस्ताव करता है।
3. यह सेंट्रल इंडिया डेटा ऑफिस स्थापित करने का सुझाव देता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
A. केवल 1 और 2
B. केवल 2
C. 3 केवल
D. केवल 2 और 3
उत्तर: C

NOTES

Paper IV केस स्टडी

आप भारत के एक प्रमुख राज्य के 'मुख्य सचिव' हैं। आप को राज्य के कैबिनेट मंत्रियों से निरंतर शिकायत मिल रही है कि उनके सचिव उन्हें सर्वाधिक उपयुक्त सलाह नहीं देते और इन्हें संबंधित विभाग के कानूनों एवं नियमों का पर्याप्त ज्ञान भी नहीं है। ये विभाग के कनिष्ठ अधिकारियों से मिली जानकारियों के आधार पर ही उन्हें सलाह दे देते हैं। कुछ प्रशासनिक अधिकारी, किसी राजनीतिक दल की विचारधारा से प्रेरित भी प्रतीत होते हैं।

प्रारंभिक जांच में आपको पता चलता है कि प्रत्येक विभागों में, ब्रिटिश सरकार के बनाए बहुत से कानून और नियम अभी भी प्रचलित हैं। इनमें से अधिकांश कानून एवं नियम अब अनुपयोगी हो गए हैं पर इन्हें निरस्त नहीं किया गया है। अत: निर्णय लेने की प्रक्रिया में इनका अनुपालन सुनिश्चित करना पड़ता है। अपने व्यक्तिगत अनुभव से आपको ज्ञात है कि इन कानूनों और नियमों को कंठस्थ करना एक कठिन कार्य है। इसके लिए पर्याप्त समय एवं ऊर्जा का निवेश करना पड़ता है। इसके लिए सरकार की तबादले की नीति भी जिम्मेदार है। निरंतर अलग-अलग विभागों में हस्तांतरण होते रहने के कारण प्रशासनिक अधिकारी इन कानूनों एवं नियमों का ज्ञान हासिल करने के लिए प्रेरित भी नहीं होते। इससे प्रशासन की दक्षता प्रभावित होती है।

(a) इस समस्या में निहित विभिन्न विषय स्पष्ट कीजिए और उनकी व्याख्या कीजिए।

(b) इस समस्या के उचित समाधान के लिए आप क्या करेंगे?

उत्तर

केस स्टडी में मैं एक विशेष राज्य का मुख्य सचिव हूं और मुझे इसमें शामिल मुद्दों का पता लगाने के बाद राज्य के कैबिनेट मंत्री से प्राप्त शिकायत पर कार्रवाई करनी है।

इसमें निम्नलिखित मुद्दे शामिल हैं-

- कैबिनेट मंत्री को दी गई अनुचित सलाह का मुद्दा।
- विभाग के कानूनों और नियमों के बारे में अधिकारियों के बीच उचित ज्ञान का अभाव।
- कुछ कर्मचारियों के एक विशेष राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होने के कारण पक्षपात का मुद्दा।
- औपनिवेशिक युग के निरर्थक नियमों और कानूनों का प्रचलन।
- अधिकारियों के बार-बार तबादले का मामला।

उपर्युक्त मुद्दों को हल करने के लिए कदम :-

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि कैबिनेट मंत्री को सही सलाह दी जाती है, मैं संबंधित सचिव के साथ एक तत्काल बैठक बुलाऊंगा और इस मामले पर विस्तार से चर्चा करूंगा ताकि कैबिनेट मंत्री को फिलहाल सही सलाह मिल सके।
- मैं संक्षिप्त प्रशिक्षण सत्रों की व्यवस्था करूंगा जिसमें संबंधित विभाग के नियमों और कानूनों पर चर्चा और व्याख्या की जाती है ताकि सदस्य आसानी से नियमों और कानूनों को समझ सकें और याद रख सकें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि कैबिनेट मंत्री को दी गई कोई भी सलाह किसी राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित न हो, निष्पक्ष और गैर-पक्षपातपूर्ण व्यवहार वाले सदस्यों की एक छोटी टीम बनाई जाएगी।
- निरर्थक नियमों और कानूनों के प्रचलन का मुद्दा उच्च अधिकारियों और उन लोगों तक उठाया जाएगा जो ऐसे नियमों और कानूनों को बदलने या रद्द करने की शक्ति रखते हैं और उन्हें बंद करने का सुझाव देंगे।
- यह सुनिश्चित करेंगे कि अधिकारियों का स्थानांतरण किन्हीं तर्कहीन कारणों के आधार पर बार-बार न हो।

NOTES

व्यक्ति विशेष : गोविंद बल्लभ पंत

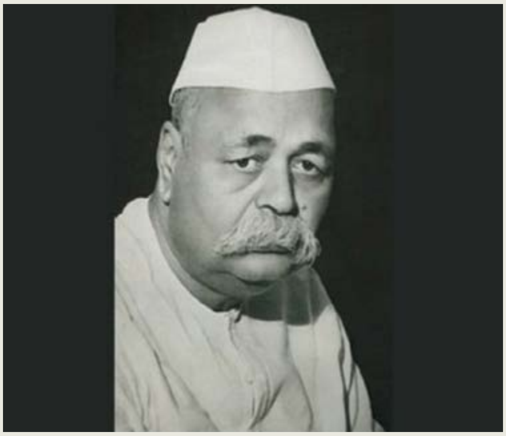

7 मार्च , 2022 को भारत रत्न गोविंद बल्लभ पंत की पुण्यतिथि मनाई गई। 10 सितम्बर, 1887 को उत्तराखंड के अल्मोड़ा स्थित खूंट गाव में जन्में गोविंद बल्लभ पंत ने वर्ष 1905 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और 1909 में उन्होंने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पूर्व उन्होंने अल्मोड़ा में हैप्पी क्लब का गठन किया था। गोविन्द बल्लभ पंत के पिता का नाम श्री 'मनोरथ पन्त' था और मां का नाम गोविंदी बाई था।

गोविन्द ने 10 वर्ष की आयु तक शिक्षा घर पर ही ग्रहण की। 1897 में गोविन्द को स्थानीय श्रामजे कॉलेजश में प्राथमिक पाठशाला में दाखिल कराया गया। 1899 में 12 वर्ष की आयु में उनका विवाह 'पं. बालादत्त जोशी' की कन्या 'गंगा देवी' से हो गया, उस समय वह कक्षा सात में थे। गोविन्द ने लोअर मिडिल की परीक्षा संस्कृत, गणित, अंग्रेजी विषयों में विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में पास की। गोविन्द इण्टर की परीक्षा पास करने तक यहीं पर रहे। इसके पश्चात इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा बी.ए. में गणित, राजनीति और अंग्रेजी साहित्य विषय लिए। इलाहाबाद उस समय भारत की विभूतियां पं० जवाहरलाल नेहरु, पं० मोतीलाल नेहरु, सर तेजबहादुर सप्रु, श्री सतीशचन्द्र बैनर्जी व श्री सुन्दरलाल सरीखों का संगम था तो वहीं विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् प्राध्यापक जैनिग्स, कॉक्स, रेन्डेल, ए.पी. मुकर्जी सरीखे विद्वान् थे। इलाहाबाद में नवयुवक गोविन्द को इन महापुरुषों का सान्निध्य एवं सम्पर्क मिला साथ ही जागरुक, व्यापक और राजनीतिक चेतना से भरपूर वातावरण मिला।

उन्होंने अपने करियर की शुरुआत काशीपुर में एक वकील के रूप में की थी। काकोरी मुकद्दमें ने एक वकील के तौर पर उन्हें पहचान और प्रतिष्ठा दिलाई थी। वर्ष 1921 में उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और वर्ष 1921 में ही वे आगरा और अवध के यूनाइटेड प्रोविंस के विधान सभा के लिए चुने गए थे।

इस बीच 1914 में काशीपुर में 'प्रेमसभा' की स्थापना पंत ने करवाई और इन्हीं की कोशिशों से ही 'उदयराज हिन्दू हाईस्कूल' की स्था. पना हुई। 1916 में पंत काशीपुर की 'नोटिफाइड एरिया कमेटी' में लिए गए। 1921, 1930, 1932 और 1934 के स्वतंत्रता संग्रामों में पंत लगभग 7 वर्ष जेलों में रहे। साइमन कमीशन के आगमन के खिलाफ 29 नवंबर 1927 में लखनऊ में जुलूस और प्रदर्शन करने के दौरान अंग्रेजों के लाठीचार्ज में पंत को चोटें आईं, जिससे उनकी गर्दन झुक गई थी।

उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में वे कुली बेगार प्रथा के खिलाफ लड़े। कुली बेगार कानून में था कि लोकल लोगों को अंग्रेज अफसरों का सामान फ्री में ढोना होता था। पंत इसके विरोधी थे। काकोरी कांड में बिस्मिल और खान का केस उन्होंने लड़ा था ।

1933 में चौकोट के गांधी कहे जाने वाले हर्ष देव बहुगुणा के साथ वे 7 माह तक गिरफ्तार हुए। इसके बाद में कांग्रेस और सुभाष चंद्र बोस के बीच डिफरेंस आने पर मध्यस्थता भी की। 1942 के भारत छोड़ो प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के चलते वे गिरफ्तार हुए और तीन साल अहमदनगर फोर्ट में नेहरू के साथ जेल में रहे। नेहरू ने उनकी हेल्थ का हवाला देकर उन्हें जेल से छुड़वाया था। इससे पहले 1932 में पंत एक्सिडेंटली नेहरू के साथ बरेली और देहरादून जेलों में रहे। उस दौरान ही नेहरू से इनकी मित्रता हो गई थी।

वर्ष 1937 में पंत जी संयुक्त प्रांत के प्रथम प्रधानमंत्री बने और 1946 में उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने। 1951 में हुए यूपी विधानसभा चुनाव में वो बरेली म्युनिसिपैलिटी से जीते थे। 10 जनवरी, 1955 को उन्होंने भारत के गृह मंत्री का पद संभाला। गृहमंत्री के रूप में उनका मुख्य योगदान भारत को भाषा के अनुसार राज्यों में विभक्त करना तथा हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना था। सन 1957 में गणतन्त्र दिवस पर उन्हें भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारतरत्न' से विभूषित किया गया। हिन्दी को राजकीय भाषा का दर्जा दिलाने में भी गोविंद वल्लभ पंत जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

राजव्यवस्था शब्दावली

भारतीय संविधान की प्रस्तावना

1. पृष्ठभूमि

सर्वप्रथम अमेरिकी संविधान की प्रस्तावना लिखी गयी. भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'उद्देश्य संकल्प' पर आधारित है, जिसे जवाहर लाल नेहरू द्वारा तैयार और प्रस्तुत किया गया तथा संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था.

2. प्रस्तावना

“हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवा. दी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए और इसके समस्त नागरिकों को
सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, धर्म, विश्वास व उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता तथा अखंडता सुनिश्चित करने वाला, बंधुत्व बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर
अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक 26 नवंबर, 1949 को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं.

3. प्रस्तावना के तत्व

- अधिकार का स्रोत: प्रस्तावना में कहा गया है कि संविधान भारत के लोगों से अपनी शक्ति प्राप्त करता है.
- भारत की प्रकृति: प्रस्तावना भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक राज्य घोषित करता है.
- उद्देश्य: यह उद्देश्यों के रूप में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को निर्दिष्ट करता है.
- संविधान को अपनाने की तिथि: यह तारीख के रूप में 26 नवंबर, 1949 को उल्लिखित करती है.

4. प्रस्तावना के निर्माण खंड

- संप्रभु :- बाह्य नियंत्रण से मुक्त
- समाजवादी :- सभी का कल्याण
- धर्मनिरपेक्ष :- राज्य का कोई धर्म नहीं होगा
- लोकतांत्रिक :- सरकार जनता की प्रतिनिधि होती है
- गणतंत्र :- राज्य के मुखिया चुने जाते हैं
- न्याय :- निष्पक्षता
- स्वतंत्रता :- आजादी
- समता :- कोई भेदभाव नहीं
- बंधुत्व :- भाईचारा

5. संविधान के एक भाग के रूप में प्रस्तावना

- केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य, 1973 में सुप्रीम कोर्ट (एससी) ने कहा कि प्रस्तावना संविधान का एक हिस्सा है.

I. प्रस्तावना न तो विधायिका की शक्ति का स्रोत है और न ही विधायिका की शक्तियों पर रोक.
II. यह गैर-न्यायसंगत है, अर्थात इसके प्रावधान अदालतों में लागू नहीं होते हैं.

6. मूल ढ़ाचे के रूप में प्रस्तावना

- केशवानंद भारती केस, 1973 और एक्सेल वियर केस, 1979 में एससी ने कहा कि प्रस्तावना में निर्दिष्ट उद्देश्यों में संविधान का मूल ढ़ाचा शामिल है.
- मूल संरचना में शामिल हैं

I. संविधान की सर्वोच्चता
II. सरकार का गणतंत्रिक और लोकतांत्रिक स्वरूप
III. संविधान का धर्मनिरपेक्ष चरित्र
IV. विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों का पृथक्करण
V. संविधान का संघीय चरित्र

7. प्रस्तावना की व्याख्या

केशवानंद भारती केस, 1973; चंद्र भवन बोर्डिंग केस, 1973 के अनुसार प्रस्तावना का प्रयोग निम्न के दायरे को निर्धारित करने के लिए किया जा सकता है

I. मौलिक अधिकार
II. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत

8. सामाजिक न्याय

- भारत के संविधान द्वारा नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय के लिए किए गए वादे को ध्यान में रखते हुए, जो नीतियां अपने सबसे कमजोर रूप में भी जनता को दु:ख दे, उनको नजरंदाज नहीं किया जा सकता. (नंदिनी सुंदर केस, 2011).

9. प्रस्तावना की संशोधनीयता

- केशवानंद भारती मामले (1973) में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रस्तावना में संशोधन किया जा सकता है, परन्तु 'बुनियादी विशेषताओं' में कोई संशोधन नहीं किया गया है.

10. प्रस्तावना में संशोधन

प्रस्तावना में 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा केवल एक बार संशोधन किया गया है. प्रस्तावना में तीन नए शब्द समा. जवादी, धर्मनिरपेक्ष और अखंडता जोड़े गए.

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Target IAS Prelims 2022

हिन्दी माध्यम

Starts from 16th Feb. 2022

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सेवा होने के कारण सिविल सेवा देशभर से अभ्यर्थियों को आकर्षित करती हैं। लेकिन सीटों की संख्या सीमित होने से इस परीक्षा में सफलता हेतु उच्चतम स्तर की प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता हैं। ऐसे मे एक नियोजित तैयारी और प्रभावी रणनीति सफलता की कुंजी बन जाती हैं। इस विचार और इरादे के साथ हमारे अत्यंत ही कुशल, दक्ष एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा ऐसी विशिष्ट एवं प्रभावी रणनीति तैयार की जाती हैं, जिससे सुपरिभाषित तरीके से सभी टॉपिक को कवर किया जा सके। बेहतर अवधारणात्मक समझ हेतु हम अभ्यर्थियों की सहायता करते हैं। साथ ही अन्तर-अनुशासनात्मक दृष्टीकोण के विकास हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। हमारी नवोन्मेषी अध्ययन प्रणाली एक विश्वासयुक्त रोड मैप तैयार करती है ताकि इस सुनहरे लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल किया जा सके। सपनों को साकार करने और आकांक्षाओं को पूरा करने हेतु हम आपको सशक्त बनाते हैं, साथ ही परिश्रम, समर्पण, विश्वास एवं सही दिशा जैसे अव्यय के विकास में आपके साथ हर कदम पर खड़े रहते हैं। UPSC के तेजी से बदलते पैटर्न के अनुरूप अपने प्रदर्शन में समायानुकूल बदलाव हेतु हम सदैव अभ्यर्थियों के साथ प्रो-ऐक्टिव होकर कार्य भी करते हैं।

छात्र अपनी आवश्यकता अनुरूप निम्नलिखित में से किसी भी कोर्स का चयन कर सकते है।

Target IAS Prelims 2022

Fee: 28,000/-

Objective

कोर्स में सामान्य अध्ययन के सभी भागों को विस्तार से कवर किया जायेगा जिसमें करेंट अफेयर्स भी शामिल रहेगा। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) और अद्यतन (Dynamic) भाग की गहन समझ प्रदान किया जाएगा। इस प्रोग्राम में विषय विशेषज्ञों के द्वारा live class में विभिन्न मुद्दों और उनसे तत्संबंधी हाल के नवीन घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही लाइव/डिलेड लाइव या रिकॉडेड क्लास के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) हिस्से पर गुणवत्तापूर्ण कंटेंट भी दिया जाएगा।

इस कोर्स में सी-सैट भी शामिल होगा। इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा।

CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉडेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।
- Perfect 7 की 24 कॉपियां (2000 रुपये मूल्य वाली) भी कोर्स के साथ प्रदान की जाएगी।
- कोर्स के साथ एक Prelims टेस्ट सीरीज (2500 रुपये मूल्य वाली) भी शामिल रहेगा।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag
CSAT	
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh

Call : 9205274741 / 42 / 44

CLICK HERE FOR ENROLLMENT

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

General Studies - Target IAS Prelims 2022

Fee: 18,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा Live Class के माध्यम से मुद्दों और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही Live/Delayed Live या Recorded classes के माध्यम से करंट अफेयर्स के परम्परागत भाग पर गुणवत्ता पूर्ण सामग्री भी प्रदान की जाएगी, जिससे छात्र असीमित समय तक देख सकेंगे।	• 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा। • 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉडेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	**General Studies- Static**	
		Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
		Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
		Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
		Economy	Kumar Amit
		General Science	Raghvendra Singh
		General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
		Indian Polity	Vineet Anurag & Shashidhar
		Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
		Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
		Technology	Q. H. Khan & Peeyush
		Health	Javed Haque
		International Issues	Vineet Anurag

Spotlight Current Affairs - IAS Prelims 2022

Fee: 10,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा live class के माध्यम से मुद्दो और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा।	• 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	**General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)**	
		Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
		Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
		Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
		Technology	Q. H. Khan & Peeyush
		Health	Javed Haque
		International Issues	Vineet Anurag

UPSC CSAT

Fee: 10,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा। CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।	• 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	Maths and Reasoning	Mukesh Singh
		Comprehension	Shweta Singh

3 दिन की अतिरिक्त कक्षाये संचालित की जाएगी जिसमें खेल, पुरस्कार, स्थान, वर्तमान में चर्चित पुस्तकों से सबंधित विषय शामिल होंगे।

ध्येय स्टूडेंट्स के लिए आकर्षक छूट

- 100% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 को या उसके बाद एडमिशन लिया है।
- 50% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 से पहले एडमिशन लिया है।

प्रथम चरण (प्रारंभिक परीक्षा)

प्रश्न पत्र 1 (अंकः 200) अवधिः 2 घंटे

- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ
- भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
- भारत एवं विश्व भूगोल - भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
- भारत राजव्यवस्था और शासन व्यवस्था - संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकार संबंधी मुद्दे आदि।
- आर्थिक और सामाजिक विकास - सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
- पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
- सामान्य विज्ञान

प्रश्न पत्र 2 (अंकः 200) अवधिः 2 घंटे

- बोधगम्यता
- संचार कौशल सहित अंतर - वैयक्तिक कौशल
- तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता
- निर्णयन और समस्या समाधान
- सामान्य मानसिक योग्यता
- आधारभूत संख्यात्मक अभियोग्यता (संख्याएँ और उनके संबंध, विस्तार क्रम, आदि-दसवीं कक्षा का स्तर), आंकड़ों का निर्वचन (चार्ट, ग्राफ, तालिका, आंकड़ों की पर्याप्तता, आदि - दसवीं कक्षा का स्तर)

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Target UPPCS Prelims 2022

हिन्दी माध्यम

भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सेवा होने के कारण सिविल सेवा देशभर से अभ्यर्थियों को आकर्षित करती हैं। लेकिन सीटों की संख्या सीमित होने से इस परीक्षा में सफलता हेतु उच्चतम स्तर की प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता हैं। ऐसे मे एक नियोजित तैयारी और प्रभावी रणनीति सफलता की कुंजी बन जाती हैं। इस विचार और इरादे के साथ हमारे अत्यंत ही कुशल, दक्ष एवं अनुभवी शिक्षकों के द्वारा ऐसी विशिष्ट एवं प्रभावी रणनीति तैयार की जाती हैं, जिससे सुपरिभाषित तरीके से सभी टॉपिक को कवर किया जा सके। बेहतर अवधारणात्मक समझ हेतु हम अभ्यर्थियों की सहायता करते हैं। साथ ही अन्तर-अनुशासनात्मक दृष्टीकोण के विकास हेतु मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। हमारी नवोन्मेषी अध्ययन प्रणाली एक विश्वासयुक्त रोड मैप तैयार करती है ताकि इस सुनहरे लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल किया जा सके। सपनों को साकार करने और आकांक्षाओं को पूरा करने हेतु हम आपको सशक्त बनाते हैं, साथ ही परिश्रम, समर्पण, विश्वास एवं सही दिशा जैसे अव्यय के विकास में आपके साथ हर कदम पर खड़े रहते हैं। UPPCS के तेजी से बदलते पैटर्न के अनुरूप अपने प्रदर्शन में समायानुकूल बदलाव हेतु हम सदैव अभ्यर्थियों के साथ प्रो-ऐक्टिव होकर कार्य भी करते हैं।

छात्र अपनी आवश्यकता अनुरूप निम्नलिखित में से किसी भी कोर्स का चयन कर सकते है।

Target UPPCS Prelims 2022

Fee: 28,000/-

Objective

कोर्स में सामान्य अध्ययन के सभी भागों को विस्तार से कवर किया जायेगा जिसमें करेंट अफेयर्स भी शामिल रहेगा। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) और अद्यतन (Dynamic) भाग की गहन समझ प्रदान किया जाएगा। इस प्रोग्राम में विषय विशेषज्ञों के द्वारा live class में विभिन्न मुद्दों और उनसे तत्संबंधी हाल के नवीन घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही लाइव/डिलेड लाइव या रिकॉर्डेड क्लास के माध्यम से सामान्य अध्ययन के परंपरागत (Static) हिस्से पर गुणवत्तापूर्ण कंटेंट भी दिया जाएगा।

इस कोर्स में सी-सैट भी शामिल होगा। इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा।

CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।

Features

- 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा।
- 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉडेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा।
- 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज।
- सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा।
- एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।
- PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।
- Perfect 7 की 24 कॉपियां (2000 रुपये मूल्य वाली) भी कोर्स के साथ प्रदान की जाएगी।
- कोर्स के साथ एक Prelims टेस्ट सीरीज (2500 रुपये मूल्य वाली) भी शामिल रहेगा।

Course Content	Faculty Name
General Studies- Static	
Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
Economy	Kumar Amit
General Science	Raghvendra Singh
General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
Technology	Q. H. Khan & Peeyush
Health	Javed Haque
International Issues	Vineet Anurag
CSAT	
Maths and Reasoning	Mukesh Singh
Comprehension	Shweta Singh
English Language	Athar Abbasi
General Hindi	Sandeep Sahil

Call : 9205274741 / 42 / 44

CLICK HERE FOR ENROLLMENT

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

General Studies - Target UPPCS Prelims 2022

Fee: 18,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा Live Class के माध्यम से मुद्दों और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही Live/Delayed Live या Recorded classes के माध्यम से करेंट अफेयर्स के परम्परागत भाग पर गुणवत्ता पूर्ण सामग्री भी प्रदान की जाएगी, जिससे छात्र असीमित समय तक देख सकेंगे।	• 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया जाएगा। • 150 घण्टे की लाइव/डिलेड (Delayed) लाइव/रिकॉर्डेट क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के परम्परागत (Static) हिस्से को अपनी सुविधानुसार देखने का विकल्प उपलब्ध रहेगा। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	**General Studies- Static**	
		Indian History+ Art & Culture	Vijay Ved
		Geography of India & World	Divyavadan Singh Parihar
		Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Jay Singh
		Economy	Kumar Amit
		General Science	Raghvendra Singh
		General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)	
		Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
		Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
		Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
		Technology	Q. H. Khan & Peeyush
		Health	Javed Haque
		International Issues	Vineet Anurag

Spotlight Current Affairs - UPPCS Prelims 2022

Fee: 10,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
कोर्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है ताकि उसमें करेंट अफेयर्स के साथ सामान्य अध्ययन के सभी खण्डों को विस्तार पूर्वक कवर किया जा सके। इस प्रोग्राम के माध्यम से सामान्य अध्ययन के सभी अद्यतन हिस्सो की गहन समझ प्रदान की जाएगी। विषय- विशेषज्ञों के द्वारा live class के माध्यम से मुद्दो और तत्संबंधी हालिया घटनाक्रमों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा।	• 100 घण्टे की लाइव क्लास जिसमें सामान्य अध्ययन के अद्यतन (Dynamic) हिस्से को कवर किया। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	**General Studies- Dynamic (Current Issues & Developments)**	
		Indian Polity & Governance	Vineet Anurag & Shashidhar
		Environmental Ecology, Bio-Diversity & Climate Change	Sanjay Singh
		Economy + Budget & Economic Survey	Kumar Amit
		Technology	Q. H. Khan & Peeyush
		Health	Javed Haque
		International Issues	Vineet Anurag

UPPCS CSAT

Fee: 10,000/-

Objective	Features	Course Content	Faculty Name
इस हिस्से में छात्र विभिन्न सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग संबंधी बेहतर और प्रभावी समझ विकसित कर सकेंगे। अवधारणात्मक समझ और संबंधित विषयवस्तु का स्पष्टीकरण भी इस कार्यक्रम का अहम हिस्सा होगा। CSAT खंड से जुड़े प्रश्नों को आसानी से हल करने के जरूरी तकनीकों और तरीकों पर विस्तृत परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी।	• 150 घंटे की क्लास में सी-सैट का पूर्ण कवरेज। • सभी लाइव क्लासेस के अंत में समस्या समाधान हेतु आधे घंटे का समय दिया जाएगा। • एकेडमिक चैट की सुविधा भी प्रदान की जाएगी। • PDF फारमैट में डाउनलोड हेतु विषय-सामग्री App पर प्रदान की जाएगी।	Maths and Reasoning	Mukesh Singh
		Comprehension	Shweta Singh
		English Language	Athar Abbasi
		General Hindi	Sandeep Sahil

जिन विद्यार्थियों ने पहले तीन कोर्स में से किसी भी कोर्स में एडमिशन लिया है उन्हें UP स्पेशल की 10 दिन की क्लास अतिरिक्त दी जाएगी।

ध्येय स्टूडेंट्स के लिए आकर्षक छूट

- 100% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 को या उसके बाद एडमिशन लिया है।
- 50% छूट Spotlight Current Affairs प्रोग्राम के लिए उन ध्येय विद्यार्थियों को जिन्होंने 1 अप्रैल 2020 से पहले एडमिशन लिया है।

SYLLABUS OF PRELIMS

प्रश्न पत्र 1 (अंक: 200) अवधि: 2 घंटे
⊙ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ
⊙ भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन
⊙ भारत एवं विश्व भूगोल - भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
⊙ भारत राजव्यवस्था और शासन व्यवस्था - संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकार संबंधी मुद्दे आदि।
⊙ आर्थिक और सामाजिक विकास - सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
⊙ पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और जलवायु परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
⊙ सामान्य विज्ञान

प्रश्न पत्र 2 (अंक: 200) अवधि: 2 घंटे
⊙ काम्प्रिहेन्शन (विस्तारीकरण)
⊙ अन्तर्वैयक्तिक क्षमता जिसमें सम्प्रेषण कौशल भी समाहित होगा।
⊙ तार्किक एवं विश्लेषणात्मक योग्यता।
⊙ निर्णय क्षमता एवं समस्या समाधान।
⊙ सामान्य बौद्धिक योग्यता।
⊙ प्रारम्भिक गणित हाईस्कूल स्तर तक - अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित व सांख्यिकी।
⊙ सामान्य अंग्रेजी हाईस्कूल स्तर तक।
⊙ सामान्य हिन्दी हाईस्कूल स्तर तक।

AN INTRODUCTION

ध्येय IAS®
most trusted since 2003

DhyeyaIAS, one and half decade old institution, was founded by Mr.Vinay Singh and Mr. Q. H. Khan. Ever since its emergence it has unparallel track record of success. Today, it stands tall among the reputed institutes providing coaching for Civil Services Examination (CSE). The institute has been very successful in making potential aspirants realize their dreams which is evident from the success stories of the previous years.

As the nation progresses, the young generations become more conscious and aware about their career options. There is plethora of jobs and one among them is civil services, the most prestigious service in the country, which needs no introduction. It attracts many young minds hailing from almost all spectra of academic disciplines. The popular belief that the examination for this service is only meant for the brilliant lots has become a taboo as it also attracts the hardworking, sincere and disciplined minds. The saying- "In the end passion and hard work can substitute natural talent" holds true. It gives immense power and opportunity for young folks to bring about the positive changes in the society which would bring harmony and development. It inculcates values, moral, ethos and feeling of national integrity.

Quite a large number of students desirous of building a career for themselves are absolutely less equipped for the fairly tough competitive tests they have to appear in. Several others, who have a brilliant academic career, do not know that competitive exams are vastly different from academic examination and call for a systematic and scientifically planned guidance by a team of experts. Here one single move may invariably put one ahead of many others who lag behind. Dhyeya IAS is manned with qualified & experienced faculties besides especially designed study material that helps the students in achieving the desired goal.

Civil Services Exam requires knowledge base of specified subjects. These subjects though taught in schools and colleges are not necessarily oriented towards the exam approach. Classes at Dhyeya IAS are different from classes conducted in schools and colleges with respect to their orientation. Classes are targeted towards the particular exam. Classroom guidance at Dhyeya IAS is about improving the individuals' capacity to focus, learn and innovate as we are comfortably aware of the fact that you can't teach a person anything, you can only help him find it within himself.

We feel that despite brilliance and diligence, most of the students are lacking proper guidance and aptitude needed to clear Civil Services Examination. This is why, we at Dhyeya IAS amalgamated the traditional as well as modern approach of teaching by incorporating best educators of the industry ably supported by Academic Associates, Class Notes and printed Study Material, routine as well as surprise Tests. Due to its arduous efforts, Dhyeya IAS is able to carve a niche among all the civil services coaching institutes in India. Access to an institution is as important as the quality of Institution. Our faith in this philosophy made us grow. With 12 Face to Face Centers located in different parts in India, Distance Learning Program , Live Streaming Centers and Residential Academy, we have made truly pan India presence. Ever since the foundation the institute has produced a heavy pool of bureaucrats both at central and state level. Dhyeya IAS not only aims at imparting the content of civil services in best way but also nurturing the aspirants as leaders of tomorrow who have a responsibility of fulfilling the dreams of around 1.4 billion Indians. Dhyeya IAS has guided over 50,000 aspirants with more than 4000 selections in civil services. Our journey is a small contribution for the development of the society and nation by nurturing the potential civil services aspirants.

Considering the toughness of Civil Services Exam, where success rate is a meager 0.1 percent, Dhyeya IAS has continuously produced phenomenal results over the years. Year after Year Dhyeya IAS is being recognized for imparting guidance to civil services aspirants using benchmarked quality practices. On the basis of scalability, innovation, achievements, impact potential our efforts and contribution have been acknowledged and rewarded with Education Excellence Awards by ET NOW, Brands Academy, Times of India, etc. This has enhanced motivation, pride and self-esteem of entire Dhyeya family.

dhyeyaias.com

Face to Face Centres

North Delhi : A 12, 13, Ansal Building, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009, Ph: 9205274741/42/44 | **Laxmi Nagar :** 1/53, 2nd floor, Lalita Park, Near Gurudwara, Opposite Pillar no.23, Laxmi Nagar, Delhi -110092, Ph: 9205212500/9205962002 | **Greater Noida :** 4th Floor Veera Tower, Alpha 1 Commercial Belt., Greater Noida, UP - 201310, Ph: 9205336037/38 | **Prayagraj :** II & III Floor, Shri Ram Tower, 17C, Sardar Patel Marg, Civil Lines, Prayagraj, UP - 211001, Ph: 0532-2260189/8853467068 | **Lucknow (Aliganj) :** A-12, Sector-J, Aliganj, Lucknow, UP- 226024, Ph: 0522-4025825/9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar) :** CP-1, Jeewan Plaza, Viram Khand-5, Near Husariya Chauraha, Gomti Nagar, Lucknow , UP - 226010, Ph: 7234000501/ 7234000502 | **Kanpur :** 113/154 Swaroop Nagar, Near HDFC Bank, Kanpur, UP - 208002, Ph: 7887003962/7897003962 | **Gorakhpur :** Narain Tower, 2nd floor, Gandhi Gali, Golghar, Gorakhpur, Uttar Pradesh 273001, Ph: 7080847474 | **Bhubaneswar :** OEU Tower, Third Floor, KIIT Road, Patia, Bhubaneswar, Odisha - 751024, Ph: 9818244644/7656949029

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

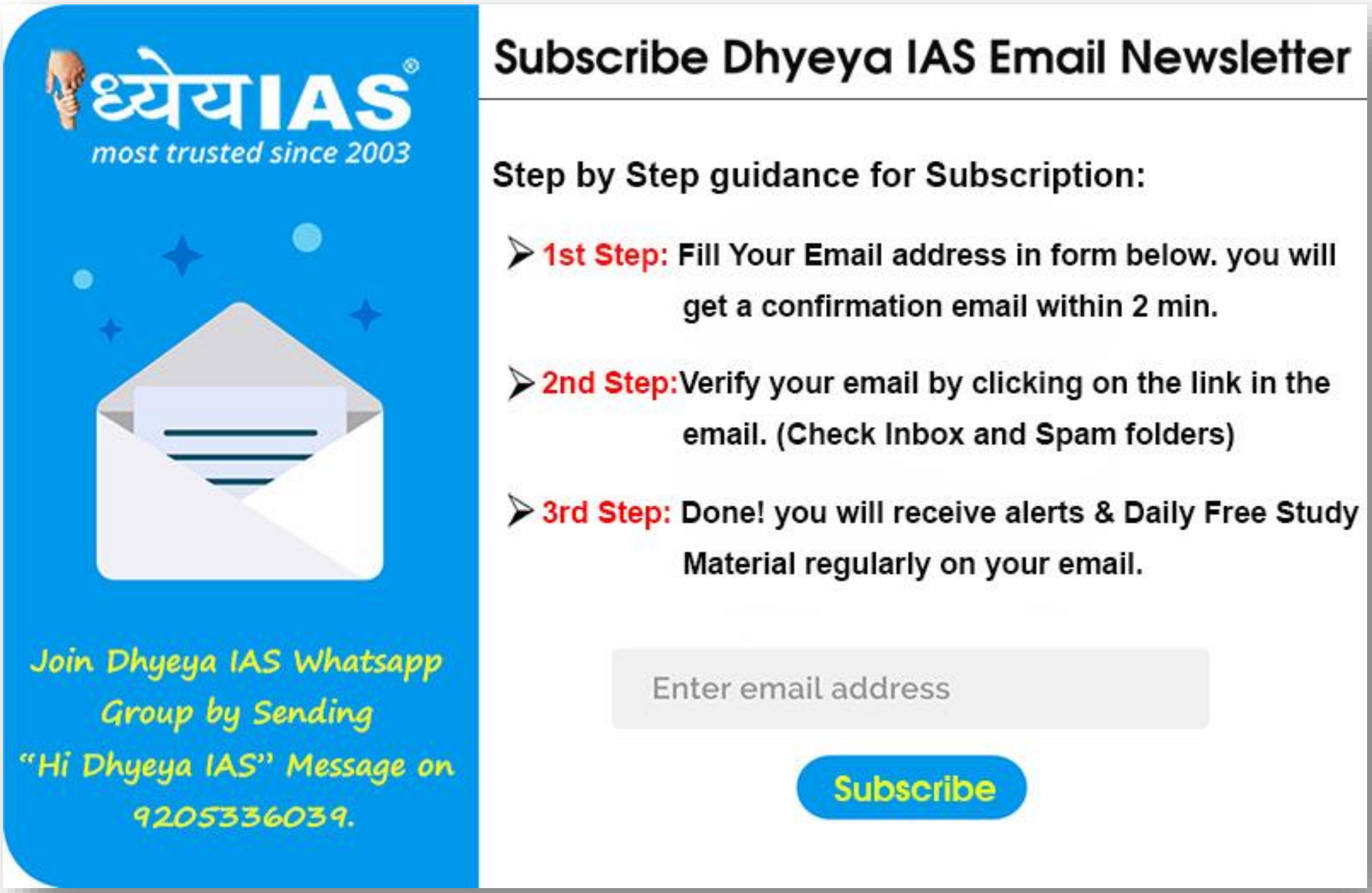

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744